

ज्योतिषिय सारिणी (जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार)

जन्म लग्न :	मिथुन(0१८:३४:३१)	होरा लग्न (प्रचलित) :	मकर(0२१:५०:२६)
द्रेक्कन लग्न (प्रचलित) :	तुला	होरा लग्न (वृद्धि करिका) :	कन्या(0०७:०६:०३)
द्रेक्कन लग्न (सोमनाथ) :	सिंह	होरा लग्न (सवाया) :	तुला(0०१:४०:२२)
द्रेक्कन लग्न (प्रवृत्ति त्राया) :	वृश्चिक	आठेवा भाव (वृद्धि करिका) :	मकर
नवांश लग्न (प्रचलित) :	मीन	भाव लग्न :	वृष(0२५:५५:१४)
नवांश लग्न (कृष्ण मिश्रा) :	मीन	घटिका लग्न :	कन्या(0०८:१८:०१)
आरूढ़ लग्न (प्रचलित) :	मेष	सपद घटिका लग्न :	वृष
आरूढ़ लग्न (सैद्धान्तिक) :	मेष	आयुर लग्न :	वृष
उप-पद लग्न (प्रचलित) :	वृष	वर्णदा लग्न :	मेष
उप-पद लग्न (सैद्धान्तिक) :	सिंह		
श्वाम्स लग्न :	मीन		
काराकाश लग्न :	मीन		
तारा लग्न :	कर्क		
नक्षत्र लग्न :	मीन		
दिव्य लग्न :	मेष(0२१:०६:३७)		
त्रिप्रवन लग्न :	कन्या(0२६:५७:२८)		
स्फुट योग लग्न :	मकर		
प्रानपद :	वृश्चिक(0१७:४८:५०)		
गुलिका (पराशर) :	कन्या(0२३:१५:२४)		
गुलिका (कालिदास) :	तुला(0१४:४६:३६)		
मन्दी :	कन्या(0१६:१३:१७)		
इन्दु लग्न :	वृष		
श्री लग्न :	कुम्भ		
पका लग्न :	वृश्चिक		
पंचाम्श लग्न :	मिथुन		
षष्ठांश लग्न :	कर्क		
अष्ठांश लग्न :	मेष		
रूद्रांश लग्न :	धनु		

दूसरे अन्य भावों की वर्णदा

द्वितीय भाव-राशि :	मेष
तृतीय भाव-राशि :	वृष
चतुर्थ भाव-राशि :	मिथुन
पंचम भाव-राशि :	कर्क
षष्ठ भाव-राशि :	सिंह
सप्तम भाव-राशि :	कन्या
अष्टम भाव-राशि :	तुला
नवम भाव-राशि :	वृश्चिक
दशम भाव-राशि :	धनु
एकादश भाव-राशि :	वृष
द्वादश भाव-राशि :	कुम्भ

महत्वपूर्ण ग्रह

ब्रह्म-ग्रह :	मंगल
महेश्वर :	शनि
रुद :	चन्द्रमा
(गौण) ब्रह्म :	शनि
(न्यून) महेश्वर :	---
(अप्राणि) रुद :	---

हर-ग्रह :	मंगल
आत्म कारक ग्रह :	चन्द्रमा
उप कारक ग्रह :	शुक्र
योगदा-ग्रह :	---
केवल ग्रह :	केतु
शुभपति ग्रह :	चन्द्रमा

सूर्योदय का समय :	05:46:59AM
सूर्यास्त का समय :	05:06:59PM
अयनाश :	एन सी लहरी (0२३:५६:१६)

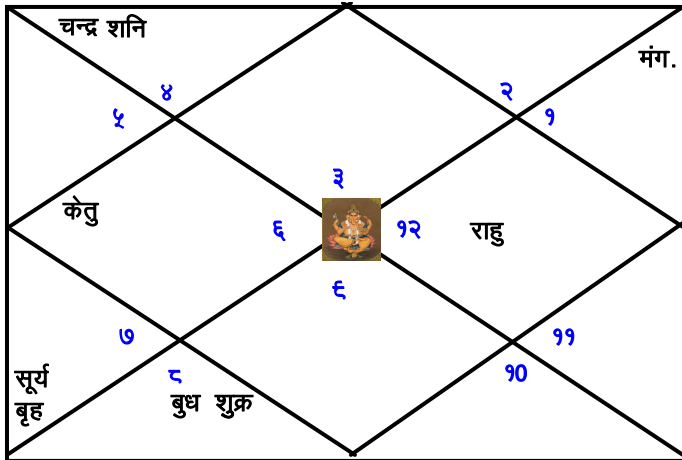
महत्वपूर्ण स्फुट

बीज-स्फुट (१) :	धनु(0११:४६:५७)
बीज-स्फुट (२) :	वृश्चिक(0१४:४४:५०)
बीज-स्फुट (३) :	कुम्भ(0१८:०७:५६)

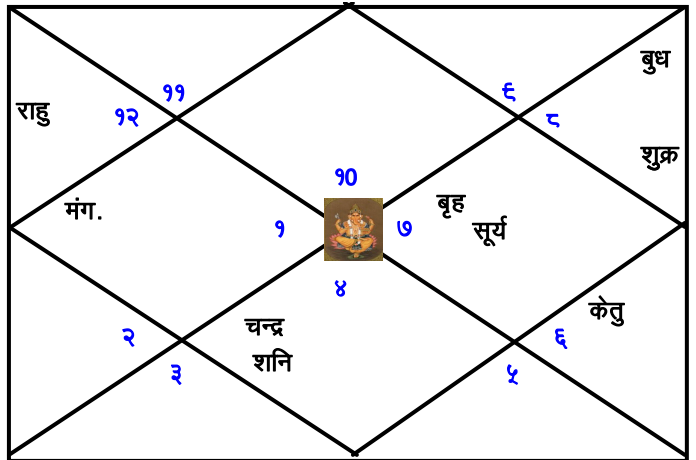
ग्रह स्थिति

ग्रह	राशि	राशि ष	अशं	नक्षत्र - चरन	न० पति	सप्तकारक		दिशा	
AC	लग्न	मिथुन	बुध	09८:३४:३9	अरिद्रा (४)	राह	---	तटस्थ भाव में	---
☉	सूर्य	तुला	शुक्र	00६:२३:५9	स्वाति (१)	राह	अपत्या	नीचस्थ	मार्गी शुभ ग्रह के साथ
☾	चन्द्रमा	कर्क	चन्द्रमा	0२६:५५:२६	अश्लेषा (४)	बुध	आत्म	स्वग्रही	मार्गी दृष्ट ग्रह के साथ
♂	मंगल	मेष	मंगल	0२५:0८:४9	भरणी (४)	शुक्र	भ्रात्रि	स्वग्रही	वक्री
♃	बुध	वृश्चिक	मंगल	009:३9:00	विशाखा (४)	बृहस्पति	दारा	शत्रु के भाव में	मार्गी शुभ ग्रह के साथ
♄	बृहस्पति	तुला	शुक्र	00६:१9:१८	चित्रा (४)	मंगल	ज्ञाति	तटस्थ भाव में	मार्गी ज्वलित
♅	शुक्र	वृश्चिक	मंगल	0२६:१9:४9	ज्येष्ठा (३)	बुध	अमात्य	तटस्थ भाव में	मार्गी शुभ ग्रह के साथ
♆	शनि	कर्क	चन्द्रमा	09६:४9:0६	अश्लेषा (१)	बुध	मात्रि	तटस्थ भाव में	मार्गी दृष्ट ग्रह के साथ
♁	राह	मीन	बृहस्पति	09६:३८:३६	रेवती (१)	बुध	---	मित्र के भाव में	मार्गी
♂	केतु	कन्या	बुध	09६:३८:३६	हस्ता (३)	चन्द्रमा	---	तटस्थ भाव में	मार्गी
♃	इन्द्र	कुम्भ	शनि	09३:0४:५३	शतभिषा (२)	राह	---	---	वक्री
♄	वरुण	मकर	शनि	0२0:५२:५५	श्रवण (४)	चन्द्रमा	---	---	स्थिर
♅	रुद्र	वृश्चिक	मंगल	0२८:३६:४५	ज्येष्ठा (४)	बुध	---	---	मार्गी शुभ ग्रह के साथ
♆	किरन	मकर	शनि	00४:२८:५६	उत्तराषाढ (३)	सूर्य	---	---	मार्गी

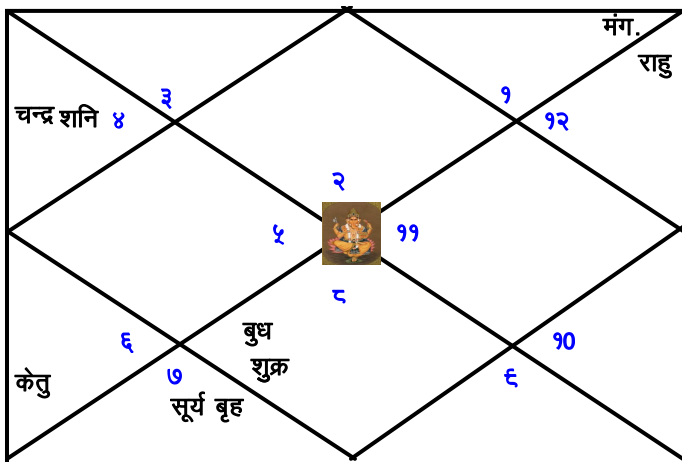
जन्म-लग्न कुण्डली



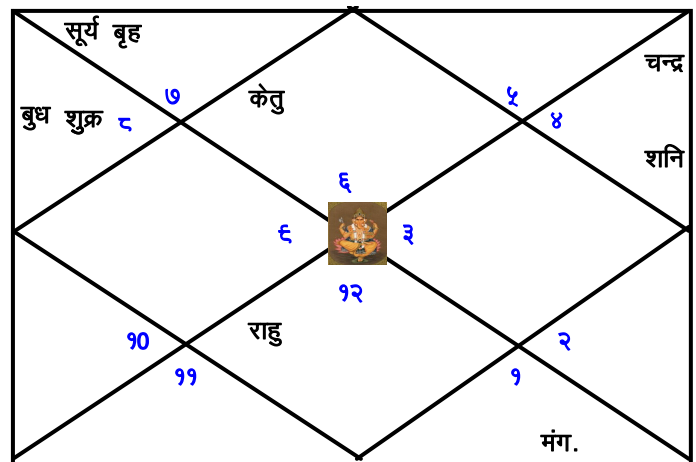
होरा लग्न कुण्डली



भाव-लग्न कुण्डली



घटिका-लग्न कुण्डली



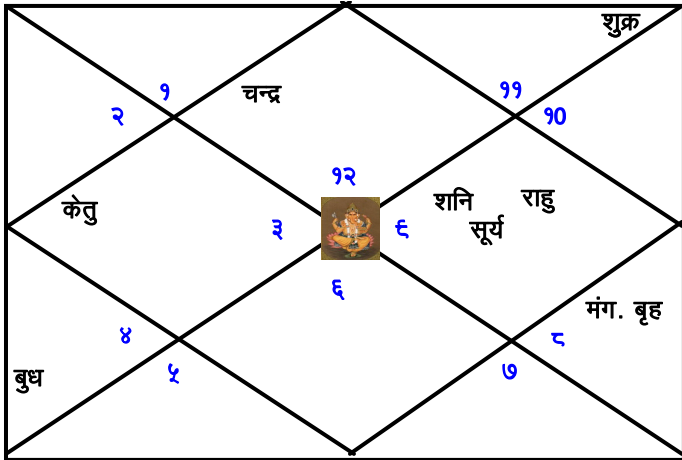
ग्रहों के कारकांश

ग्रह	सप्त कारक	अष्ट कारक	स्थिर कारक	भाव कारक
☉	सूर्य	अपत्या	आत्म	भ्रात्रि
☾	चन्द्रमा	आत्म	मात्रि	अमात्य
♂	मंगल	भ्रात्रि	भ्रात्रि	ज्ञाति
♃	बुध	दारा	अमात्य	आत्म, मात्रि
♄	बृहस्पति	ज्ञाति	अपत्या	दारा
♃	शुक्र	अमात्य	दारा	अपत्या
♅	शनि	मात्रि	ज्ञाति	
♁	राह	पितृ		

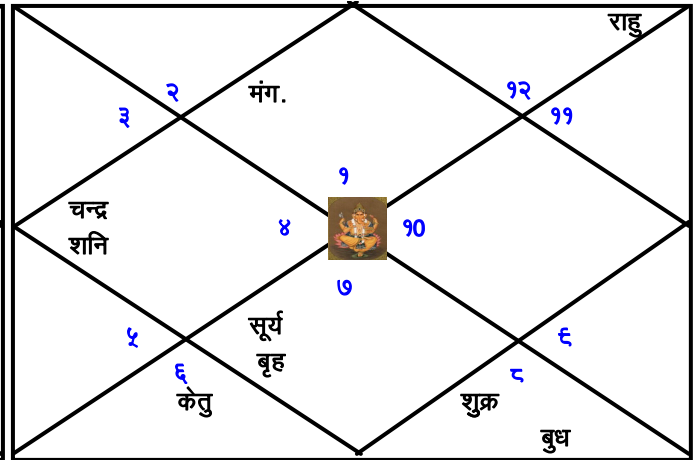
जैमिनी दृष्टि

राशि (ग्रह)	अग्र भाग पर दृष्टि	पृष्ठ भाग पर दृष्टि
♈ (मेष)	वृश्चिक (१०, १०)	सिंह, कृम्भ
♉ (वृष)	तुला (१०, १०)	कर्क (१०, १०), मकर
♊ (मिथुन)	कन्या (१०)	धनु, मीन (१०)
♋ (कर्क)	कृम्भ	वृष, वृश्चिक (१०, १०)
♌ (सिंह)	मकर	मेष (१०), तुला (१०, १०)
♍ (कन्या)	मिथुन	धनु, मीन (१०)
♎ (तुला)	वृष	सिंह, कृम्भ
♏ (वृश्चिक)	मेष (१०)	कर्क (१०, १०), मकर
♐ (धनु)	मीन (१०)	मिथुन, कन्या (१०)
♑ (मकर)	सिंह	वृष, वृश्चिक (१०, १०)
♒ (कृम्भ)	कर्क (१०, १०)	मेष (१०), तुला (१०, १०)
♓ (मीन)	धनु	मिथुन, कन्या (१०)

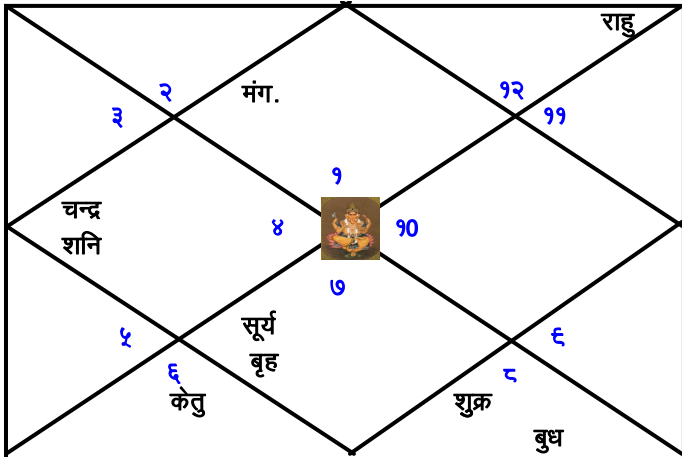
कारकांश कुण्डली (नवांश)



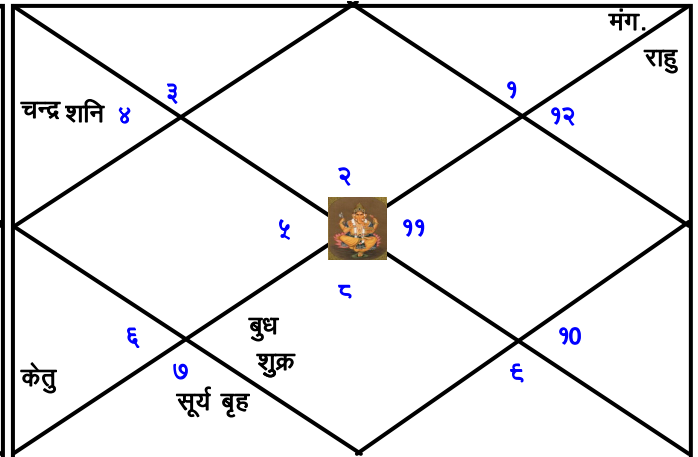
वर्णदा लग्न कुण्डली



आरूढ़ लग्न कुण्डली (प्रचलित)



उप-पद लग्न कुण्डली (प्रचलित)















ग्रह और भाव बल













ग्रह-बल

ग्रह	मूल-त्रिकोन बल	अंश-बल	केन्द्र-बल	कुल योग	(प्रतिशत) रेटिंग
 सूर्य	9	8	96	29	83.95
 चन्द्रमा	7	96	96	80	73.33
 मंगल	7	7	96	32	66.67
 बुध	8	9	7	93	29.07
 बृहस्पति	2	2	96	20	89.67
 शुक्र	8	92	7	28	50.00
 शनि	2	6	96	28	50.00

भाव-बल

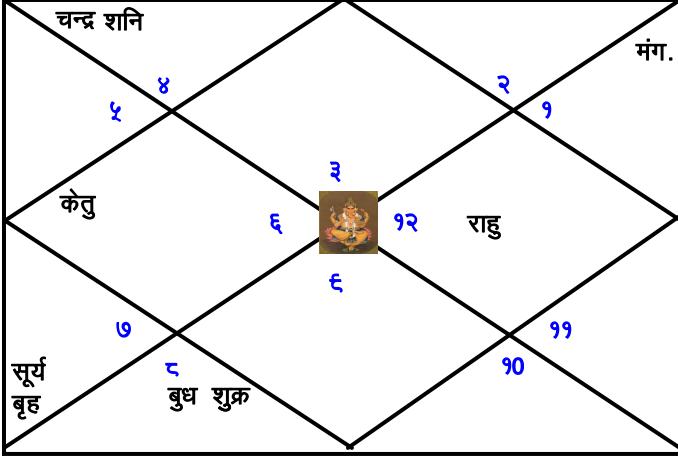
राशि	चर-बल	स्थिर-बल	द्विक बल	ऐ. के. राशि बल	कुल योग	(प्रतिशत)
 मेष	8	96	28	0	88	35.87
 वृष	7	0	7	0	96	92.80
 मिथुन	96	0	0	0	96	92.80
 कर्क	8	20	28	96	68	59.69
 सिंह	7	0	96	0	28	98.35
 कन्या	96	96	0	0	32	25.79
 तुला	8	20	96	0	80	32.26
 वृश्चिक	7	20	28	0	52	89.88
 धनु	96	0	0	0	96	92.80
 मकर	8	0	7	0	92	08.67
 कुम्भ	7	0	96	0	28	98.35
 मीन	96	96	0	0	32	25.79

सौड्य राशि बल

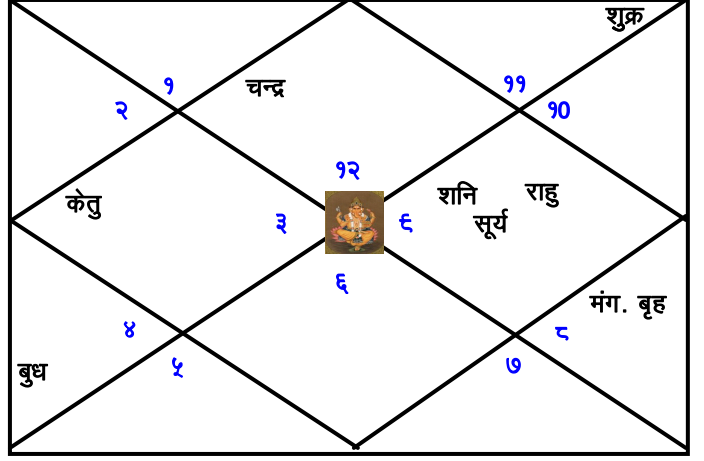
राशि	ग्रह बल (राशिधिपति का)	भाव-बल (राशिधिपति का)	कुल योग	(प्रतिशत)
 मेष	32	88	96	88.96
 वृष	28	96	80	23.26
 मिथुन	93	96	28	96.76
 कर्क	80	68	908	60.89
 सिंह	29	28	85	26.96
 कन्या	93	32	85	26.96
 तुला	28	80	68	39.29
 वृश्चिक	32	52	78	87.78
 धनु	20	96	36	20.83
 मकर	28	92	36	20.83
 कुम्भ	28	28	87	29.89
 मीन	20	32	52	30.23

जैमिनी कुण्डलीयाँ (पृष्ठ-1)

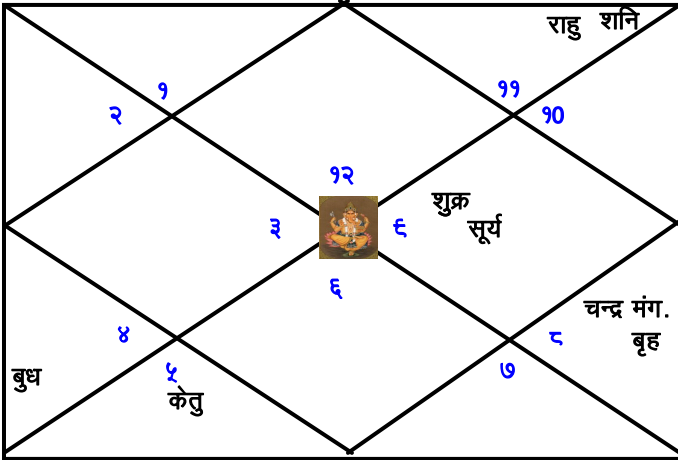
लग्न कुण्डली



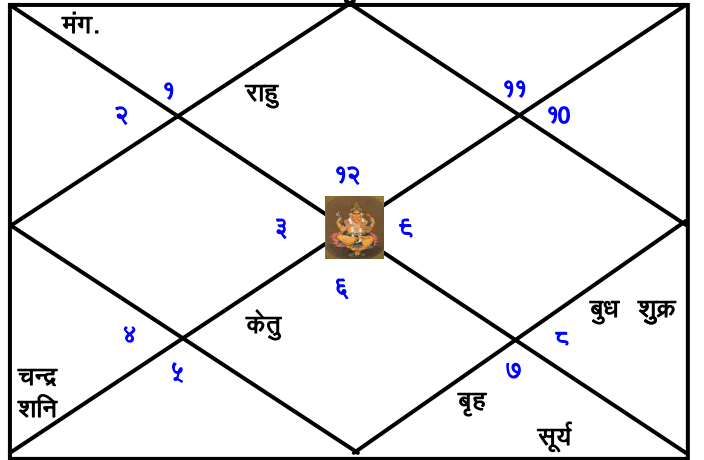
नवांश कुण्डली (प्रचलित)



नवांश कुण्डली (कृष्णा मिश्रा)

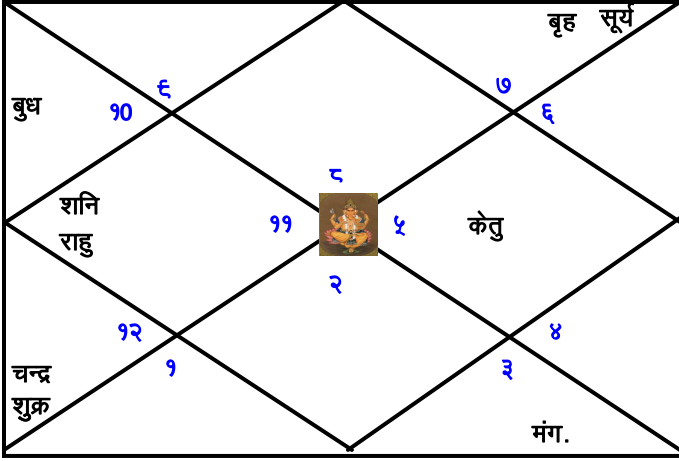


काराकांश कुण्डली (राशि)

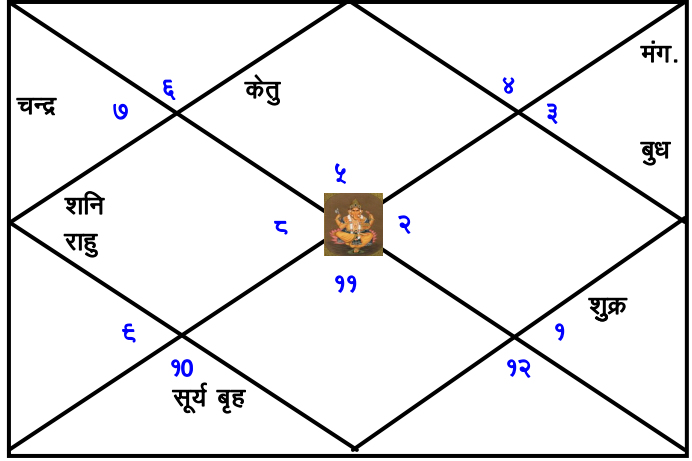


जैमिनी कुण्डलीयाँ (पृष्ठ-2)

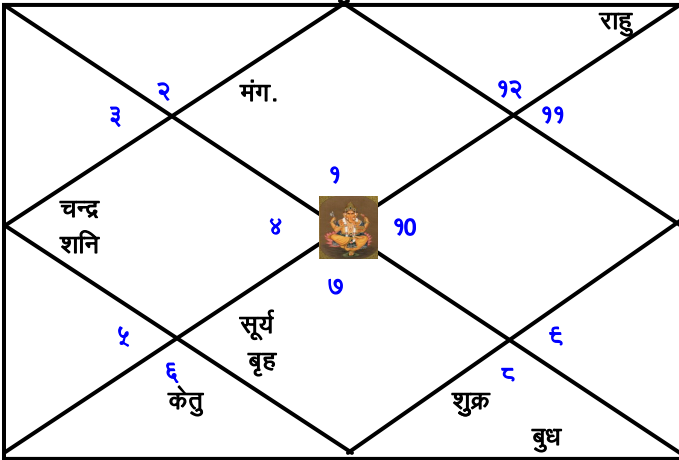
द्रेक्कन कुण्डली (पी0 त्राया)



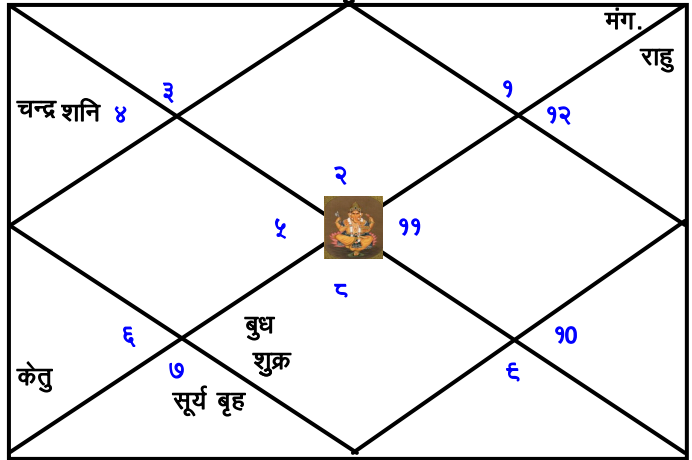
द्रेक्कन कुण्डली (सोमनाथ)



आरूढ लग्न कुण्डली (प्रचलित)

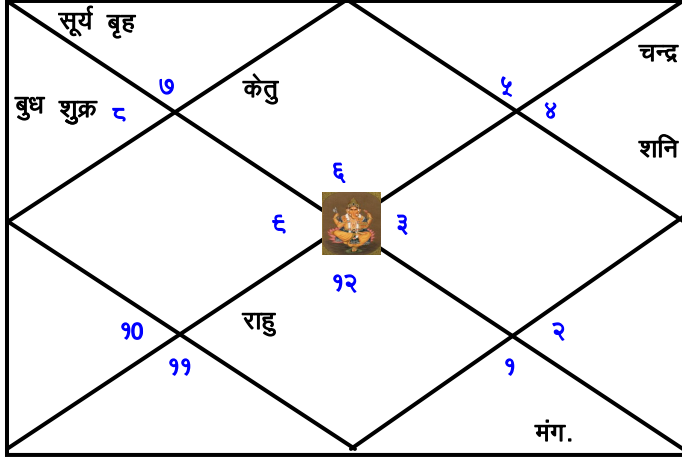


उप पद लग्न कुण्डली

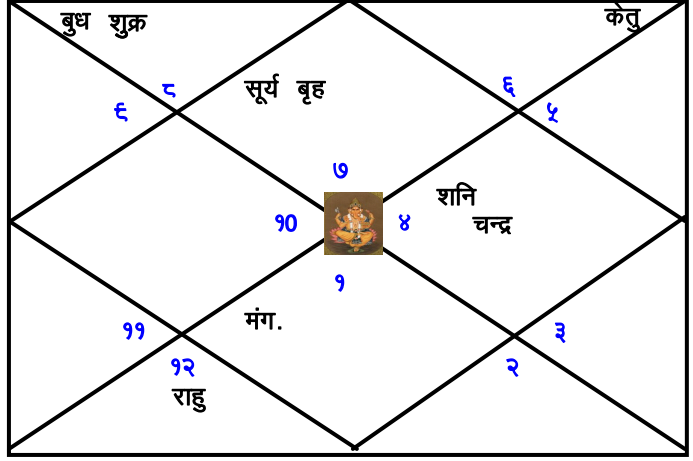


जैमिनी कुण्डलीयाँ (पृष्ठ-3)

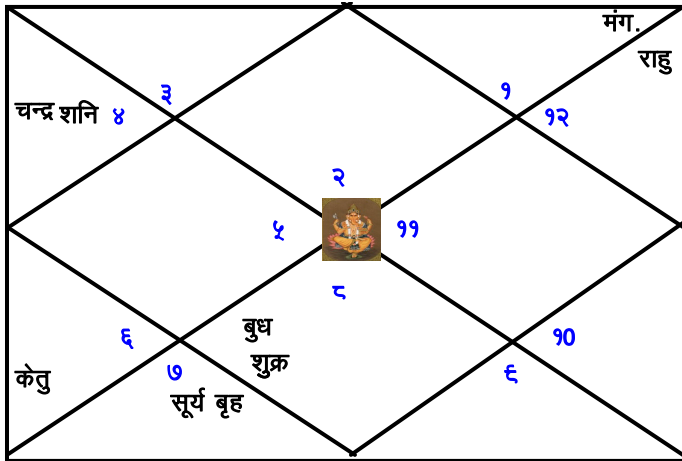
होरा लग्न (वी. के.) कुण्डली



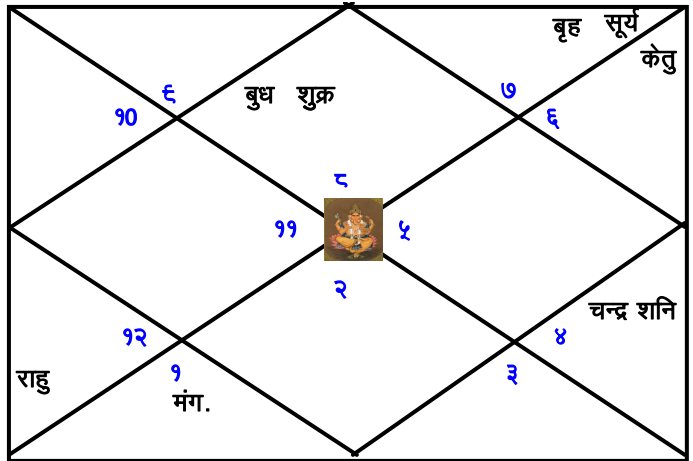
होरा लग्न (एस. वी) कुण्डली



आयुर् लग्न कुण्डली

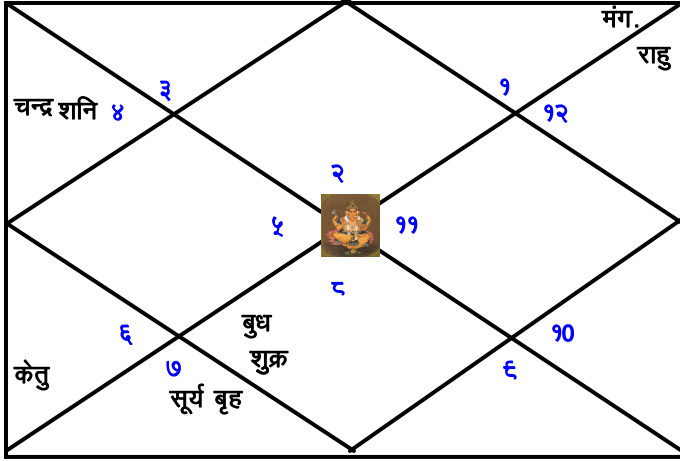


पका लग्न कुण्डली

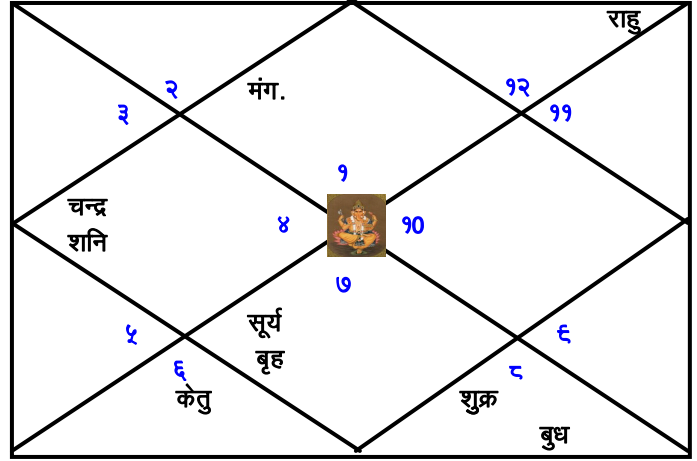


जैमिनी कुण्डलीयाँ (पृष्ठ-4)

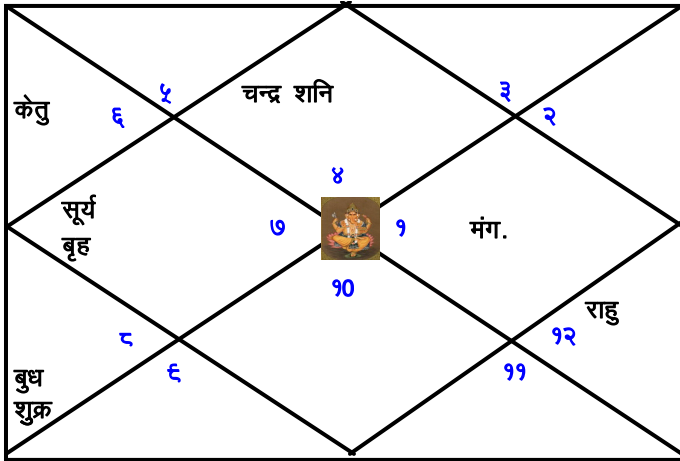
इन्दु लग्न कुण्डली



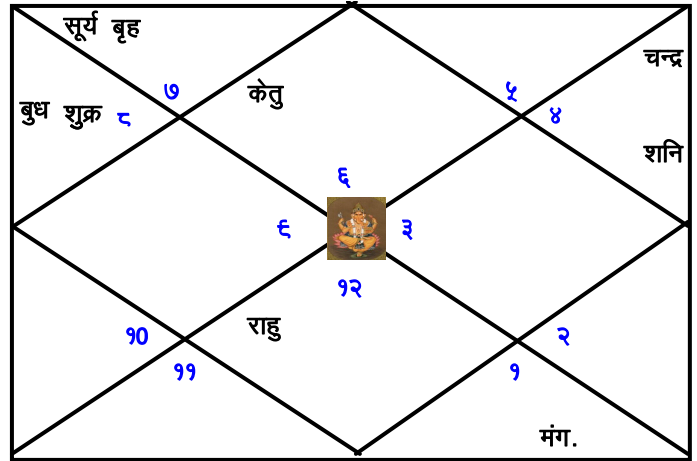
दिव्या लग्न कुण्डली



तारा लग्न कुण्डली

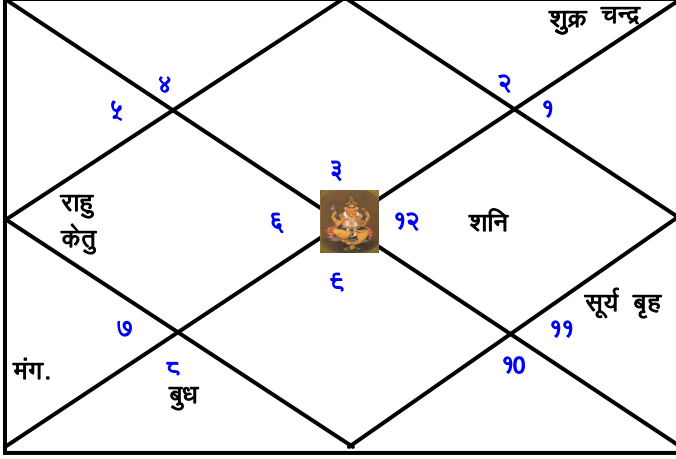


त्रीप्रवन लग्न कुण्डली

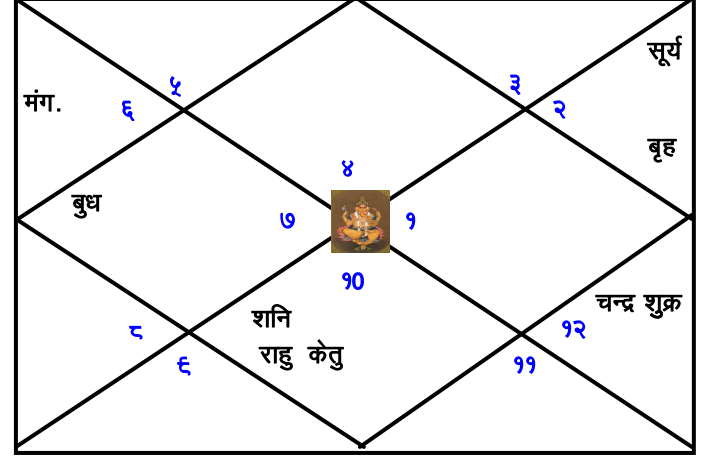


जैमिनी कुण्डलीयाँ (पृष्ठ-5)

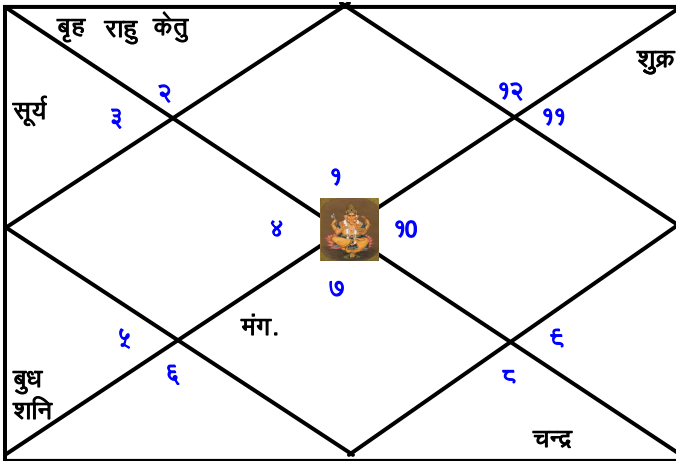
पंचमाशं कुण्डली



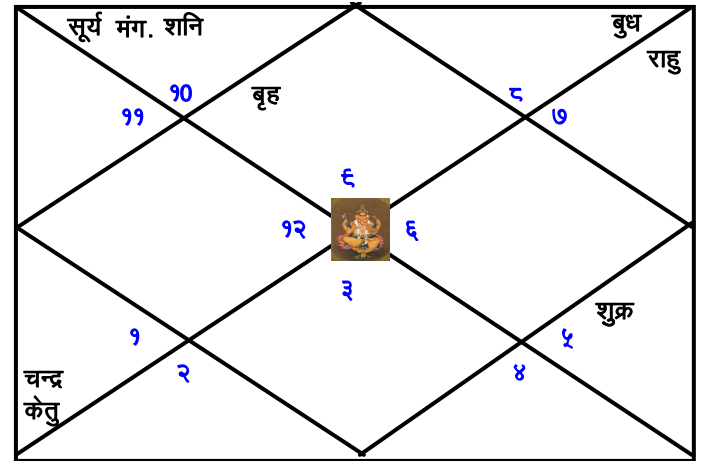
षष्ठाशं कुण्डली



अष्टमाशं कुण्डली



रुद्रांश (एकादशांश) कुण्डली



जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	मिथुन दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०
२	वृष दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१० — २६:१०:२०१६
३	मेष दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१६ — २६:१०:२०२८
४	मीन दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३३
५	कुम्भ दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३३ — २६:१०:२०३४
६	मकर दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३४ — २६:१०:२०४०
७	धनु दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४० — २६:१०:२०५०
८	वृश्चिक दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५० — २६:१०:२०५२
९	तुला दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५२ — २६:१०:२०५३
१०	कन्या दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६३
११	सिंह दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६३ — २६:१०:२०६५
१२	कर्क दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६५ — २६:१०:२०७७

जैमिनी चर दशा की भुक्ति

मिथुन दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०		वृष दशा २६:१०:२०१० — २६:१०:२०१६		मेष दशा २६:१०:२०१६ — २६:१०:२०२८		मीन दशा २६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३३	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
वृष	२६:१०:२००५ से २८:०३:२००६	मेष	२६:१०:२०१० से २७:०४:२०११	वृष	२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७	मेष	२६:१०:२०२८ से २८:०३:२०२९
मेष	२८:०३:२००६ से	मीन	२७:०४:२०११ से २६:१०:२०११	मिथुन	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८	वृष	२८:०३:२०२९ से २७:०८:२०२९
मीन	२७:०८:२००६ से	कुम्भ	२६:१०:२०११ से २६:०४:२०१२	कर्क	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९	मिथुन	२७:०८:२०२९ से २६:०१:२०३०
कुम्भ	२६:०९:२००७ से	मकर	२६:०४:२०१२ से २६:१०:२०१२	सिंह	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०	कर्क	२६:०१:२०३० से २७:०६:२०३०
मकर	२७:०६:२००७ से	धनु	२६:१०:२०१२ से २७:०४:२०१३	कन्या	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१	सिंह	२७:०६:२०३० से २६:११:२०३०
धनु	२६:११:२००७ से २६:०४:२००८	वृश्चिक	२७:०४:२०१३ से २६:१०:२०१३	तुला	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२	कन्या	२६:११:२०३० से २७:०४:२०३१
वृश्चिक	२६:०४:२००८ से २६:०६:२००८	तुला	२६:१०:२०१३ से २७:०४:२०१४	वृश्चिक	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३	तुला	२७:०४:२०३१ से २६:०६:२०३१
तुला	२६:०६:२००८ से २५:०२:२००९	कन्या	२७:०४:२०१४ से २६:१०:२०१४	धनु	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४	वृश्चिक	२६:०६:२०३१ से २५:०२:२०३२
कन्या	२५:०२:२००९ से २७:०७:२००९	सिंह	२६:१०:२०१४ से २७:०४:२०१५	मकर	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५	धनु	२५:०२:२०३२ से २७:०७:२०३२
सिंह	२७:०७:२००९ से २६:१२:२००९	कर्क	२७:०४:२०१५ से २६:१०:२०१५	कुम्भ	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६	मकर	२७:०७:२०३२ से २६:१२:२०३२
कर्क	२६:१२:२००९ से २७:०५:२०१०	मिथुन	२६:१०:२०१५ से २६:०४:२०१६	मीन	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७	कुम्भ	२६:१२:२०३२ से २७:०५:२०३३
मिथुन	२७:०५:२०१० से २६:१०:२०१०	वृष	२६:०४:२०१६ से २६:१०:२०१६	मेष	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८	मीन	२७:०५:२०३३ से २६:१०:२०३३
कुम्भ दशा २६:१०:२०३३ — २६:१०:२०३४		मकर दशा २६:१०:२०३४ — २६:१०:२०४०		धनु दशा २६:१०:२०४० — २६:१०:२०५०		वृश्चिक दशा २६:१०:२०५० — २६:१०:२०५२	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
मीन	२६:१०:२०३३ से २६:११:२०३३	धनु	२६:१०:२०३४ से २७:०४:२०३५	वृश्चिक	२६:१०:२०४० से २७:०८:२०४१	तुला	२६:१०:२०५० से २६:१२:२०५०
मेष	२६:११:२०३३ से २६:१२:२०३३	वृश्चिक	२७:०४:२०३५ से २६:१०:२०३५	तुला	२७:०८:२०४१ से २७:०६:२०४२	कन्या	२६:१२:२०५० से २५:०२:२०५१
वृष	२६:१२:२०३३ से २६:०९:२०३४	तुला	२६:१०:२०३५ से २६:०४:२०३६	कन्या	२७:०६:२०४२ से	सिंह	२५:०२:२०५१ से २७:०४:२०५१
मिथुन	२६:०९:२०३४ से २५:०२:२०३४	कन्या	२६:०४:२०३६ से	सिंह	२७:०४:२०४२ से २५:०२:२०४४	कर्क	२७:०४:२०५१ से २७:०६:२०५१
कर्क	२५:०२:२०३४ से २८:०३:२०३४	सिंह	२६:१०:२०३६ से	कर्क	२५:०२:२०४४ से २६:१२:२०४४	मिथुन	२७:०६:२०५१ से २७:०८:२०५१
सिंह	२८:०३:२०३४ से २७:०४:२०३४	कर्क	२७:०४:२०३७ से	मिथुन	२६:१२:२०४४ से २६:१०:२०४५	वृष	२७:०८:२०५१ से २६:१०:२०५१
कन्या	२७:०४:२०३४ से २७:०५:२०३४	मिथुन	२६:१०:२०३७ से २७:०४:२०३८	वृष	२६:१०:२०४५ से २७:०८:२०४६	मेष	२६:१०:२०५१ से २६:१२:२०५१
तुला	२७:०५:२०३४ से	वृष	२७:०४:२०३८ से २६:१०:२०३८	मेष	२७:०८:२०४६ से	मीन	२६:१२:२०५१ से २५:०२:२०५२
वृश्चिक	२७:०६:२०३४ से	मेष	२६:१०:२०३८ से २७:०४:२०३९	मीन	२७:०६:२०४७ से	कुम्भ	२५:०२:२०५२ से २६:०४:२०५२
धनु	२७:०७:२०३४ से	मीन	२७:०४:२०३९ से २६:१०:२०३९	कुम्भ	२६:०४:२०४८ से २५:०२:२०४९	मकर	२६:०४:२०५२ से
मकर	२७:०८:२०३४ से २६:०६:२०३४	कुम्भ	२६:१०:२०३९ से २६:०४:२०४०	मकर	२५:०२:२०४९ से २६:१२:२०४९	धनु	२६:०६:२०५२ से
कुम्भ	२६:०६:२०३४ से २६:१०:२०३४	मकर	२६:०४:२०४० से २६:१०:२०४०	धनु	२६:१२:२०४९ से २६:१०:२०५०	वृश्चिक	२६:०८:२०५२ से २६:१०:२०५२
तुला दशा २६:१०:२०५२ — २६:१०:२०५३		कन्या दशा २६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६३		सिंह दशा २६:१०:२०६३ — २६:१०:२०६५		कर्क दशा २६:१०:२०६५ — २६:१०:२०७७	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
वृश्चिक	२६:१०:२०५२ से २६:११:२०५२	तुला	२६:१०:२०५३ से २७:०८:२०५४	कन्या	२६:१०:२०६३ से २६:१२:२०६३	मिथुन	२६:१०:२०६५ से
धनु	२६:११:२०५२ से २६:१२:२०५२	वृश्चिक	२७:०८:२०५४ से	तुला	२६:१२:२०६३ से २५:०२:२०६४	वृष	२६:१०:२०६६ से
मकर	२६:१२:२०५२ से २६:०९:२०५३	धनु	२७:०६:२०५५ से	वृश्चिक	२५:०२:२०६४ से	मेष	२६:१०:२०६७ से
कुम्भ	२६:०९:२०५३ से २५:०२:२०५३	मकर	२६:०४:२०५६ से	धनु	२६:०४:२०६४ से	मीन	२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९
मीन	२५:०२:२०५३ से २८:०३:२०५३	कुम्भ	२५:०२:२०५७ से २६:१२:२०५७	मकर	२६:०६:२०६४ से	कुम्भ	२६:१०:२०६९ से २६:१०:२०७०
मेष	२८:०३:२०५३ से २७:०४:२०५३	मीन	२६:१२:२०५७ से २६:१०:२०५८	कुम्भ	२६:०४:२०६४ से	मकर	२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१
वृष	२७:०४:२०५३ से २७:०५:२०५३	मेष	२६:१०:२०५८ से २७:०८:२०५९	मीन	२६:१०:२०६४ से २६:१२:२०६४	धनु	२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२
मिथुन	२७:०५:२०५३ से	वृष	२७:०८:२०५९ से	मेष	२६:१२:२०६४ से २५:०२:२०६५	वृश्चिक	२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३
कर्क	२७:०६:२०५३ से	मिथुन	२६:०६:२०६० से	वृष	२५:०२:२०६५ से	तुला	२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४
सिंह	२७:०७:२०५३ से	कर्क	२७:०४:२०६१ से २५:०२:२०६२	मिथुन	२५:०२:२०६५ से	कन्या	२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५
कन्या	२७:०८:२०५३ से २६:०६:२०५३	सिंह	२५:०२:२०६२ से २६:१२:२०६२	कर्क	२७:०६:२०६५ से	सिंह	२६:१०:२०७५ से
तुला	२६:०६:२०५३ से २६:१०:२०५३	कन्या	२६:१२:२०६२ से २६:१०:२०६३	सिंह	२७:०८:२०६५ से	कर्क	२६:१०:२०७६ से

जैमिनी चर दशा

(राघवभट्ट और नरसिंह सूरी का सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ——— तक
१	मिथुन दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०
२	तुला दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१० — २६:१०:२०११
३	कुम्भ दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०११ — २६:१०:२०१६
४	कर्क दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१६ — २६:१०:२०२८
५	वृश्चिक दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३५
६	मीन दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३५ — २६:१०:२०४०
७	सिंह दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४० — २६:१०:२०५०
८	धनु दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५० — २६:१०:२०५२
९	मेष दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५२ — २६:१०:२०६४
१०	कन्या दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६४ — २६:१०:२०६६
११	मकर दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६६ — २६:१०:२०७६
१२	वृष दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७६ — २६:१०:२०८६

जैमिनी चर दशा की भुक्ति

मिथुन दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०		तुला दशा २६:१०:२०१० — २६:१०:२०११		कुम्भ दशा २६:१०:२०११ — २६:१०:२०१६		कर्क दशा २६:१०:२०१६ — २६:१०:२०२८	
भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ——— तक	भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक
वृश्चिक	२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६	वृश्चिक	२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११	कर्क	२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२	कर्क	२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७
तुला	२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७			मिथुन	२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३	मिथुन	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८
कन्या	२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८			वृष	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४	वृष	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९
सिंह	२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९			मेष	२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५	मेष	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०
कर्क	२६:१०:२००९ से २६:१०:२०१०			मीन	२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६	मीन	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१
						कुम्भ	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२
						मकर	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३
						धनु	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४
						वृश्चिक	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५
						तुला	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६
						कन्या	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७
						सिंह	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८

वृश्चिक दशा २६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३५		मीन दशा २६:१०:२०३५ — २६:१०:२०४०		सिंह दशा २६:१०:२०४० — २६:१०:२०५०		धनु दशा २६:१०:२०५० — २६:१०:२०५२	
भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक
मेष	२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९	तुला	२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६	तुला	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१	तुला	२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१
वृष	२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०	वृश्चिक	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७	वृश्चिक	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२	वृश्चिक	२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२
मिथुन	२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१	धनु	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८	धनु	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३		
कर्क	२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२	मकर	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९	मकर	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४		
सिंह	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३	कुम्भ	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०	कुम्भ	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५		
कन्या	२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४			मीन	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६		
तुला	२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५			मेष	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७		
				वृष	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८		
				मिथुन	२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९		
				कर्क	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०		

मेष दशा २६:१०:२०५२ — २६:१०:२०६४		कन्या दशा २६:१०:२०६४ — २६:१०:२०६६		मकर दशा २६:१०:२०६६ — २६:१०:२०७६		वृष दशा २६:१०:२०७६ — २६:१०:२०८६	
भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक	भुक्ति	से ———_तक
मेष	२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३	वृश्चिक	२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५	कर्क	२६:१०:२०६६ से	वृश्चिक	२६:१०:२०७६ से
वृष	२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४	तुला	२६:१०:२०६५ से	मिथुन	२६:१०:२०६७ से	तुला	२६:१०:२०७७ से
मिथुन	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५			वृष	२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९	कन्या	२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०७९
कर्क	२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६			मेष	२६:१०:२०६९ से २६:१०:२०७०	सिंह	२६:१०:२०७९ से २६:१०:२०८०
सिंह	२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७			मीन	२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१	कर्क	२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१
कन्या	२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८			कुम्भ	२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२	मिथुन	२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२
तुला	२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९			मकर	२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३	वृष	२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३
वृश्चिक	२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०			धनु	२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४	मेष	२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४
धनु	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१			वृश्चिक	२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५	मीन	२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५
मकर	२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२			तुला	२६:१०:२०७५ से	कुम्भ	२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६
कुम्भ	२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३						
मीन	२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४						

जैमिनी स्थिर दशा (प्रचलित सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	धनु दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४
२	मकर दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२१
३	कूम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२१ — २६:१०:२०२९
४	मीन दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२९ — २६:१०:२०३८
५	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३८ — २६:१०:२०४५
६	वृष दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४५ — २६:१०:२०५३
७	मिथुन दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२
८	कर्क दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६२ — २६:१०:२०६९
९	सिंह दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६९ — २६:१०:२०७७
१०	कन्या दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८६
११	तुला दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८६ — २६:१०:२०९३
१२	वृश्चिक दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१

जैमिनी स्थिर दशा की भुक्ति

धनु दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४		मकर दशा २६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२१		कूम्भ दशा २६:१०:२०२१ — २६:१०:२०२९		मीन दशा २६:१०:२०२९ — २६:१०:२०३८	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
वृश्चिक	२६:१०:२००५ से	धनु	२६:१०:२०१४ से २७:०५:२०१५	मीन	२६:१०:२०२१ से २७:०६:२०२२	मेष	२६:१०:२०२९ से २७:०७:२०३०
तुला	२७:०७:२००६ से	मकर	२७:०५:२०१५ से २६:१२:२०१५	कूम्भ	२७:०६:२०२२ से २५:०२:२०२३	वृष	२७:०७:२०३० से २७:०४:२०३१
कन्या	२७:०४:२००७ से २६:०९:२००८	कूम्भ	२६:१२:२०१५ से २७:०७:२०१६	मकर	२५:०२:२०२३ से २६:१०:२०२३	मिथुन	२७:०४:२०३१ से २६:०९:२०३२
सिंह	२६:०९:२००८ से २६:१०:२००८	मीन	२७:०७:२०१६ से २५:०२:२०१७	धनु	२६:१०:२०२३ से २६:०६:२०२४	कर्क	२६:०९:२०३२ से २६:१०:२०३२
कर्क	२६:१०:२००८ से २७:०७:२००९	मेष	२५:०२:२०१७ से २६:०६:२०१७	वृश्चिक	२६:०६:२०२४ से २५:०२:२०२५	सिंह	२६:१०:२०३२ से २७:०७:२०३३
मिथुन	२७:०७:२००९ से २७:०४:२०१०	वृष	२६:०६:२०१७ से २७:०४:२०१८	तुला	२५:०२:२०२५ से २६:१०:२०२५	कन्या	२७:०७:२०३३ से
वृष	२७:०४:२०१० से २६:०९:२०११	मिथुन	२७:०४:२०१८ से २६:११:२०१८	कन्या	२६:१०:२०२५ से	तुला	२७:०४:२०३३ से २६:०९:२०३५
मेष	२६:०९:२०११ से २६:१०:२०११	कर्क	२६:११:२०१८ से २७:०६:२०१९	सिंह	२७:०६:२०२६ से	वृश्चिक	२६:१०:२०३५ से
मीन	२६:१०:२०११ से २७:०७:२०१२	सिंह	२७:०६:२०१९ से २६:०९:२०२०	कर्क	२५:०२:२०२७ से २६:१०:२०२७	धनु	२६:१०:२०३५ से
कूम्भ	२७:०७:२०१२ से २७:०४:२०१३	कन्या	२६:०९:२०२० से २६:०८:२०२०	मिथुन	२६:१०:२०२७ से	मकर	२७:०७:२०३६ से
मकर	२७:०४:२०१३ से २६:०९:२०१४	तुला	२६:०८:२०२० से २८:०३:२०२१	वृष	२६:०६:२०२८ से २५:०२:२०२९	कूम्भ	२७:०४:२०३६ से २६:०९:२०३८
धनु	२६:०९:२०१४ से २६:१०:२०१४	वृश्चिक	२८:०३:२०२१ से २६:१०:२०२१	मेष	२५:०२:२०२९ से २६:१०:२०२९	मीन	२६:०९:२०३८ से २६:१०:२०३८

मेष दशा २६:१०:२०३८ — २६:१०:२०४५		वृष दशा २६:१०:२०४५ — २६:१०:२०५३		मिथुन दशा २६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२		कर्क दशा २६:१०:२०६२ — २६:१०:२०६९	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
वृष	२६:१०:२०३८ से २७:०५:२०३९	मेष	२६:१०:२०४५ से	वृष	२६:१०:२०५३ से २७:०७:२०५४	मिथुन	२६:१०:२०६२ से
मेष	२७:०५:२०३९ से २६:१२:२०३९	वृष	२७:०६:२०४६ से	मेष	२७:०७:२०५४ से	कर्क	२७:०५:२०३९ से
मीन	२६:१२:२०३९ से २७:०७:२०४०	मिथुन	२५:०२:२०४७ से २६:१०:२०४७	मीन	२७:०७:२०५४ से २६:०९:२०५६	सिंह	२६:१२:२०३९ से
कूम्भ	२७:०७:२०४० से २५:०२:२०४१	कर्क	२६:१०:२०४७ से	कूम्भ	२६:०९:२०५६ से २६:१०:२०५६	कन्या	२७:०७:२०४६ से
मकर	२५:०२:२०४१ से २६:०६:२०४१	सिंह	२६:०६:२०४८ से २५:०२:२०४९	मकर	२६:१०:२०५६ से	तुला	२७:०७:२०४६ से
धनु	२६:०६:२०४१ से २७:०४:२०४२	कन्या	२५:०२:२०४९ से २६:१०:२०४९	धनु	२७:०७:२०५७ से	वृश्चिक	२६:०६:२०४६ से
वृश्चिक	२७:०४:२०४२ से २६:११:२०४२	तुला	२६:१०:२०४९ से २७:०६:२०५०	वृश्चिक	२७:०७:२०५७ से २६:०९:२०५९	धनु	२७:०४:२०४६ से
तुला	२६:११:२०४२ से २७:०६:२०४३	वृश्चिक	२७:०६:२०५० से २५:०२:२०५१	तुला	२६:०९:२०५९ से २६:१०:२०५९	मकर	२६:११:२०४६ से
कन्या	२७:०६:२०४३ से २६:०९:२०४४	धनु	२५:०२:२०५१ से २६:१०:२०५१	कन्या	२६:१०:२०५९ से	कूम्भ	२७:०६:२०४७ से
सिंह	२६:०९:२०४४ से २६:०८:२०४४	मकर	२६:१०:२०५१ से २६:०६:२०५२	सिंह	२७:०७:२०६० से	मीन	२६:०९:२०६८ से
कर्क	२६:०८:२०४४ से २८:०३:२०४५	कूम्भ	२६:०६:२०५२ से २५:०२:२०५३	कर्क	२७:०७:२०६० से	मेष	२६:०८:२०६८ से
मिथुन	२८:०३:२०४५ से २६:१०:२०४५	मीन	२५:०२:२०५३ से २६:१०:२०५३	मिथुन	२६:०९:२०६२ से २६:१०:२०६२	वृष	२८:०३:२०६९ से २६:१०:२०६९

सिंह दशा २६:१०:२०६९ — २६:१०:२०७७		कन्या दशा २६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८६		तुला दशा २६:१०:२०८६ — २६:१०:२०९३		वृश्चिक दशा २६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
कन्या	२६:१०:२०६९ से	तुला	२६:१०:२०७७ से	वृश्चिक	२६:१०:२०८६ से	तुला	२६:१०:२०९३ से २७:०६:२०९४
सिंह	२७:०६:२०७० से	वृश्चिक	२७:०७:२०७८ से	तुला	२७:०७:२०८७ से	वृश्चिक	२७:०६:२०९४ से २५:०२:२०९५
कर्क	२५:०२:२०७१ से २६:१०:२०७१	धनु	२७:०४:२०७९ से २६:०९:२०८०	कन्या	२६:१२:२०८७ से	धनु	२५:०२:२०९५ से २६:१०:२०९५
मिथुन	२६:१०:२०७१ से	मकर	२६:०९:२०८० से २६:१०:२०८०	सिंह	२७:०७:२०८८ से २५:०२:२०८९	मकर	२६:१०:२०९५ से
वृष	२६:०६:२०७२ से	कूम्भ	२६:१०:२०८० से २७:०७:२०८१	कर्क	२५:०२:२०८९ से २६:०६:२०८९	कूम्भ	२६:०६:२०६९ से
मेष	२५:०२:२०७३ से २६:१०:२०७३	मीन	२७:०७:२०८१ से २७:०४:२०८२	मिथुन	२६:०६:२०८९ से २७:०४:२०९०	मीन	२५:०२:२०९५ से २६:१०:२०९७
मीन	२६:१०:२०७३ से	मेष	२७:०४:२०८२ से २६:०९:२०८३	वृष	२७:०४:२०९० से २६:११:२०९०	मेष	२६:१०:२०९७ से
कूम्भ	२७:०६:२०७४ से	वृष	२६:०९:२०८३ से २६:१०:२०८३	मेष	२६:११:२०९० से २७:०६:२०९१	वृष	२७:०६:२०९८ से २५:०२:२०९९
मकर	२५:०२:२०७५ से २६:१०:२०७५	मिथुन	२६:१०:२०८३ से २७:०७:२०८४	मीन	२७:०६:२०९१ से २६:०९:२०९२	मिथुन	२५:०२:२०९९ से २६:१०:२०९९
धनु	२६:१०:२०७५ से	कर्क	२७:०७:२०८४ से	कूम्भ	२६:०९:२०९२ से २६:०८:२०९२	कर्क	२६:१०:२०९९ से २७:०६:२१००
वृश्चिक	२६:०६:२०७६ से	सिंह	२७:०४:२०८५ से २६:०९:२०८६	मकर	२६:०८:२०९२ से २८:०३:२०९३	सिंह	२७:०६:२१०० से २५:०२:२१०१
तुला	२५:०२:२०७७ से	कन्या	२६:०९:२०८६ से २६:१०:२०८६	धनु	२८:०३:२०९३ से २६:१०:२०९३	कन्या	२५:०२:२१०१ से २६:१०:२१०१

जैमिनी स्थिर दशा (दूसरा सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	धनु दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४
२	मकर दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२१
३	कुम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२१ — २६:१०:२०२९
४	मीन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२९ — २६:१०:२०३८
५	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३८ — २६:१०:२०४५
६	वृष दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४५ — २६:१०:२०५३
७	मिथुन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२
८	कर्क दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६२ — २६:१०:२०६९
९	सिंह दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६९ — २६:१०:२०७७
१०	कन्या दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८६
११	तुला दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८६ — २६:१०:२०९३
१२	वृश्चिक दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१

जैमिनी स्थिर दशा की भुक्ति

धनु दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४		मकर दशा २६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२१		कुम्भ दशा २६:१०:२०२१ — २६:१०:२०२९		मीन दशा २६:१०:२०२९ — २६:१०:२०३८	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
तुला	२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६	कर्क	२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५	कर्क	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२	तुला	२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०
वृश्चिक	२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७	मिथुन	२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६	मिथुन	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३	वृश्चिक	२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१
धनु	२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८	वृष	२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७	वृष	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४	धनु	२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२
मकर	२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९	मेष	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८	मेष	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५	मकर	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३
कुम्भ	२६:१०:२००९ से २६:१०:२०१०	मीन	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९	मीन	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६	कुम्भ	२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४
मीन	२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११	कुम्भ	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०	कुम्भ	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७	मीन	२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५
मेष	२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२	मकर	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१	मकर	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८	मेष	२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६
वृष	२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३			धनु	२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९	वृष	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७
मिथुन	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४					मिथुन	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८

मेष दशा २६:१०:२०३८ — २६:१०:२०४५		वृष दशा २६:१०:२०४५ — २६:१०:२०५३		मिथुन दशा २६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२		कर्क दशा २६:१०:२०६२ — २६:१०:२०६९	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मेष	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९	वृश्चिक	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६	वृश्चिक	२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४	कर्क	२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३
वृष	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०	तुला	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७	तुला	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५	मिथुन	२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४
मिथुन	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१	कन्या	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८	कन्या	२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६	वृष	२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५
कर्क	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२	सिंह	२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९	सिंह	२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७	मेष	२६:१०:२०६५ से
सिंह	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३	कर्क	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०	कर्क	२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८	मीन	२६:१०:२०६५ से
कन्या	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४	मिथुन	२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१	मिथुन	२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९	कुम्भ	२६:१०:२०६५ से
तुला	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५	वृष	२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२	वृष	२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०	मकर	२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७
		मेष	२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३	मेष	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१		
				मीन	२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२		

सिंह दशा २६:१०:२०६९ — २६:१०:२०७७		कन्या दशा २६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८६		तुला दशा २६:१०:२०८६ — २६:१०:२०९३		वृश्चिक दशा २६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
तुला	२६:१०:२०६९ से २६:१०:२०७०	वृश्चिक	२६:१०:२०७७ से	वृश्चिक	२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८७	मेष	२६:१०:२०९३ से २६:१०:२०९४
वृश्चिक	२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१	तुला	२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०७९	तुला	२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८	वृष	२६:१०:२०९४ से २६:१०:२०९५
धनु	२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२	कन्या	२६:१०:२०७९ से २६:१०:२०८०	कन्या	२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९	मिथुन	२६:१०:२०९५ से २६:१०:२०९६
मकर	२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३	सिंह	२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१	सिंह	२६:१०:२०८९ से २६:१०:२०९०	कर्क	२६:१०:२०९६ से २६:१०:२०९७
कुम्भ	२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४	कर्क	२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२	कर्क	२६:१०:२०९० से २६:१०:२०९१	सिंह	२६:१०:२०९७ से २६:१०:२०९८
मीन	२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५	मिथुन	२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३	मिथुन	२६:१०:२०९१ से २६:१०:२०९२	कन्या	२६:१०:२०९८ से २६:१०:२०९९
मेष	२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६	वृष	२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४	वृष	२६:१०:२०९२ से २६:१०:२०९३	तुला	२६:१०:२०९९ से २६:१०:२१००
वृष	२६:१०:२०७६ से	मेष	२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५	मेष	२६:१०:२०९३ से २६:१०:२०९४	वृश्चिक	२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१
		मीन	२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६	मीन			

जैमिनी ब्रहम ग्रह दशा

(प्रचलित सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१२
२	वृष दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२०
३	मिथुन दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२० — २६:१०:२०२९
४	कर्क दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२९ — २६:१०:२०३६
५	सिंह दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३६ — २६:१०:२०४४
६	कन्या दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४४ — २६:१०:२०५३
७	तुला दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६०
८	वृश्चिक दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६० — २६:१०:२०६८
९	धनु दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६८ — २६:१०:२०७७
१०	मकर दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८४
११	कृम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८४ — २६:१०:२०९२
१२	मीन दशा	९ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९२ — २६:१०:२१०१

जैमिनी ब्रहम ग्रह दशा की भुक्ति

मेघ दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१२		वृष दशा २६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२०		मिथुन दशा २६:१०:२०२० — २६:१०:२०२९		कर्क दशा २६:१०:२०२९ — २६:१०:२०३६	
भुक्ति	शतवउ....ज्व	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
वृष	२६:१०:२००५ से २७:०५:२००६	मेघ	२६:१०:२०१२ से २७:०६:२०१३	वृष	२६:१०:२०२० से २७:०७:२०२१	मिथुन	२६:१०:२०२९ से २७:०५:२०३०
मेघ	२७:०५:२००६ से	वृष	२७:०६:२०१३ से २५:०२:२०१४	मेघ	२७:०७:२०२१ से २७:०४:२०२२	कर्क	२७:०५:२०३० से २६:१२:२०३०
मीन	२६:१२:२००६ से	मिथुन	२५:०२:२०१४ से २६:१०:२०१४	मीन	२७:०४:२०२२ से २६:०९:२०२३	सिंह	२६:१२:२०३० से २७:०७:२०३१
कृम्भ	२७:०७:२००७ से	कर्क	२६:१०:२०१४ से २७:०६:२०१५	कृम्भ	२६:०९:२०२३ से २६:१०:२०२३	कन्या	२७:०७:२०३१ से २५:०२:२०३२
मकर	२५:०२:२००८ से २६:०६:२००८	सिंह	२७:०६:२०१५ से २५:०२:२०१६	मकर	२६:१०:२०२३ से २७:०७:२०२४	तुला	२५:०२:२०३२ से २६:०६:२०३२
धनु	२६:०६:२००८ से २७:०४:२००९	कन्या	२५:०२:२०१६ से २६:१०:२०१६	धनु	२७:०७:२०२४ से	वृश्चिक	२६:०६:२०३२ से २७:०४:२०३३
वृश्चिक	२७:०४:२००९ से २६:११:२००९	तुला	२६:१०:२०१६ से २७:०६:२०१७	वृश्चिक	२७:०४:२०२५ से २६:०९:२०२६	धनु	२७:०४:२०३३ से २६:११:२०३३
तुला	२६:११:२००९ से २७:०६:२०१०	वृश्चिक	२७:०६:२०१७ से २५:०२:२०१८	तुला	२६:०९:२०२६ से २६:१०:२०२६	मकर	२६:११:२०३३ से २७:०६:२०३४
कन्या	२७:०६:२०१० से २६:०९:२०११	धनु	२५:०२:२०१८ से २६:१०:२०१८	कन्या	२६:१०:२०२६ से	कृम्भ	२७:०६:२०३४ से २६:०९:२०३५
सिंह	२६:०९:२०११ से २७:०८:२०११	मकर	२६:१०:२०१८ से २७:०६:२०१९	सिंह	२७:०७:२०२७ से	मीन	२६:०९:२०३५ से २७:०८:२०३५
कर्क	२७:०८:२०११ से २७:०३:२०११	कृम्भ	२७:०६:२०१९ से २५:०२:२०२०	कर्क	२६:०४:२०२८ से २६:०९:२०२९	मेघ	२७:०८:२०३५ से
मिथुन	२७:०३:२०१२ से २६:१०:२०१२	मीन	२५:०२:२०२० से २६:१०:२०२०	मिथुन	२६:०९:२०२९ से २६:१०:२०२९	वृष	२७:०३:२०३६ से
सिंह दशा २६:१०:२०३६ — २६:१०:२०४४		कन्या दशा २६:१०:२०४४ — २६:१०:२०५३		तुला दशा २६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६०		वृश्चिक दशा २६:१०:२०६० — २६:१०:२०६८	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
कन्या	२६:१०:२०३६ से	तुला	२६:१०:२०४४ से २७:०७:२०४५	वृश्चिक	२६:१०:२०५३ से २७:०५:२०५४	तुला	२६:१०:२०६० से
सिंह	२७:०६:२०३७ से	वृश्चिक	२७:०७:२०४५ से	तुला	२७:०५:२०५४ से २६:१२:२०५४	वृश्चिक	२७:०६:२०६१ से
कर्क	२५:०२:२०३८ से २६:१०:२०३८	धनु	२७:०४:२०४६ से	कन्या	२६:१२:२०५४ से २७:०७:२०५५	धनु	२५:०२:२०६२ से २६:१०:२०६२
मिथुन	२६:१०:२०३८ से २७:०६:२०३९	मकर	२६:०९:२०४७ से २६:१०:२०४७	सिंह	२७:०७:२०५५ से	मकर	२६:१०:२०६२ से
वृष	२७:०६:२०३९ से २५:०२:२०४०	कृम्भ	२६:१०:२०४७ से २५:०२:२०४७	कर्क	२५:०२:२०५६ से	कृम्भ	२७:०६:२०६३ से
मेघ	२५:०२:२०४० से २६:१०:२०४०	मीन	२७:०७:२०४८ से	मिथुन	२६:०६:२०५६ से	मीन	२५:०२:२०६४ से २६:१०:२०६४
मीन	२६:१०:२०४० से २७:०६:२०४१	मेघ	२७:०७:२०४८ से २६:०९:२०५०	वृष	२७:०७:२०५६ से २६:११:२०५७	मेघ	२६:१०:२०६४ से
कृम्भ	२७:०६:२०४१ से २५:०२:२०४२	वृष	२६:०९:२०५० से २६:१०:२०५०	मेघ	२६:११:२०५७ से २७:०६:२०५८	वृष	२७:०६:२०६५ से
मकर	२५:०२:२०४२ से २६:१०:२०४२	मिथुन	२६:१०:२०५० से २७:०७:२०५१	मीन	२७:०६:२०५८ से २६:०९:२०५९	मिथुन	२५:०२:२०६६ से
धनु	२६:१०:२०४२ से २७:०६:२०४३	कर्क	२७:०७:२०५१ से २६:०४:२०५२	कृम्भ	२६:०९:२०५९ से २७:०८:२०५९	कर्क	२६:१०:२०६६ से
वृश्चिक	२७:०६:२०४३ से २५:०२:२०४४	सिंह	२६:०४:२०५२ से २६:०९:२०५३	मकर	२७:०८:२०५९ से	सिंह	२७:०६:२०६७ से
तुला	२५:०२:२०४४ से २६:१०:२०४४	कन्या	२६:०९:२०५३ से २६:१०:२०५३	धनु	२७:०३:२०६० से	कन्या	२५:०२:२०६८ से २६:१०:२०६८
धनु दशा २६:१०:२०६८ — २६:१०:२०७७		मकर दशा २६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८४		कृम्भ दशा २६:१०:२०८४ — २६:१०:२०९२		मीन दशा २६:१०:२०९२ — २६:१०:२१०१	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
वृश्चिक	२६:१०:२०६८ से	धनु	२६:१०:२०७७ से	मीन	२६:१०:२०८४ से २७:०६:२०८५	मेघ	२६:१०:२०९२ से २७:०७:२०९३
तुला	२७:०७:२०६९ से	मकर	२७:०७:२०७८ से	कृम्भ	२७:०६:२०८५ से	वृष	२७:०७:२०९३ से
कन्या	२७:०७:२०७० से २६:०९:२०७१	कृम्भ	२६:१२:२०७८ से	मकर	२५:०२:२०८६ से २६:१०:२०८६	मिथुन	२७:०७:२०९३ से २६:०९:२०९५
सिंह	२६:०९:२०७१ से २६:१०:२०७१	मीन	२७:०७:२०७९ से	धनु	२६:१०:२०८६ से	कर्क	२६:०९:२०९५ से २६:१०:२०९५
कर्क	२६:१०:२०७१ से	मेघ	२५:०२:२०८० से २६:०६:२०८०	वृश्चिक	२७:०६:२०८६ से	सिंह	२६:१०:२०९५ से
मिथुन	२७:०७:२०७२ से	वृष	२५:०६:२०८० से २६:१०:२०८१	तुला	२५:०२:२०८८ से २६:१०:२०८८	कन्या	२७:०७:२०९५ से
वृष	२७:०७:२०७३ से	मिथुन	२७:०७:२०८१ से २६:११:२०८१	कन्या	२६:१०:२०८८ से २७:०६:२०८९	तुला	२७:०७:२०९५ से २६:०९:२०९६
मेघ	२६:०९:२०७४ से २६:१०:२०७४	कर्क	२६:११:२०८१ से २७:०४:२०८२	सिंह	२७:०६:२०८९ से २५:०२:२०९०	वृश्चिक	२६:०९:२०९६ से २६:१०:२०९६
मीन	२६:१०:२०७४ से	सिंह	२७:०६:२०८२ से २६:०९:२०८३	कर्क	२५:०२:२०९० से २६:१०:२०९०	धनु	२६:१०:२०९६ से २७:०७:२०९६
कृम्भ	२७:०७:२०७५ से	कन्या	२६:०९:२०८३ से २७:०६:२०८३	मिथुन	२६:१०:२०९० से २७:०६:२०९१	मकर	२७:०७:२०९६ से २७:०४:२१००
मकर	२६:०४:२०७६ से	तुला	२७:०६:२०८३ से २७:०३:२०८४	वृष	२७:०६:२०९१ से २५:०२:२०९२	कृम्भ	२७:०४:२१०० से २६:०९:२१०१
धनु	२६:०९:२०७७ से	वृश्चिक	२७:०३:२०८४ से २६:१०:२०८४	मेघ	२५:०२:२०९२ से २६:१०:२०९२	मीन	२६:०९:२१०१ से २६:१०:२१०१

जैमिनी त्रिकूट दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	धनु दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४
२	मिथुन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२३
३	मकर दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२३ — २६:१०:२०३०
४	कर्क दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३० — २६:१०:२०३७
५	कुम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४५
६	सिंह दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४५ — २६:१०:२०५३
७	मीन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२
८	कन्या दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६२ — २६:१०:२०७१
९	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७१ — २६:१०:२०७८
१०	तुला दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७८ — २६:१०:२०८५
११	वृष दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८५ — २६:१०:२०९३
१२	वृश्चिक दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१

जैमिनी त्रिकूट दशा की भुक्ति

धनु दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४		मिथुन दशा २६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२३		मकर दशा २६:१०:२०२३ — २६:१०:२०३०		कर्क दशा २६:१०:२०३० — २६:१०:२०३७	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
वृश्चिक	२६:१०:२००५ से	वृष	२६:१०:२०१४ से २७:०५:२०१५	धनु	२६:१०:२०२३ से २७:०५:२०२४	मिथुन	२६:१०:२०३० से २७:०५:२०३१
तुला	२७:०५:२००६ से	मेष	२७:०५:२०१५ से २६:०४:२०१६	मकर	२७:०५:२०२४ से २६:१२:२०२४	कर्क	२७:०५:२०३१ से २६:१२:२०३१
कन्या	२७:०५:२००७ से २६:०१:२००८	मीन	२६:०४:२०१६ से २६:०१:२०१७	कुम्भ	२६:१२:२०२४ से २७:०५:२०२५	सिंह	२६:१२:२०३१ से २७:०५:२०३२
सिंह	२६:०१:२००८ से २६:१०:२००८	कुम्भ	२६:०१:२०१७ से २६:१०:२०१७	मीन	२७:०५:२०२५ से	कन्या	२७:०५:२०३२ से २५:०२:२०३३
कर्क	२६:१०:२००८ से २७:०५:२००९	मकर	२६:१०:२०१७ से २७:०५:२०१८	मेष	२५:०२:२०२६ से	तुला	२५:०२:२०३३ से २६:०६:२०३३
मिथुन	२७:०५:२००९ से २७:०४:२०१०	धनु	२७:०५:२०१८ से २७:०४:२०१९	वृष	२६:०६:२०२६ से	वृश्चिक	२६:०६:२०३३ से २७:०४:२०३४
वृष	२७:०४:२०१० से २६:०१:२०११	वृश्चिक	२७:०४:२०१९ से २६:०१:२०२०	मिथुन	२७:०४:२०२७ से २६:११:२०२७	धनु	२७:०४:२०३४ से २६:११:२०३४
मेष	२६:०१:२०११ से २६:१०:२०११	तुला	२६:०१:२०२० से २६:१०:२०२०	कर्क	२६:११:२०२७ से २६:०६:२०२८	मकर	२६:११:२०३४ से २७:०६:२०३५
मीन	२६:१०:२०११ से २७:०५:२०१२	कन्या	२६:१०:२०२० से २७:०५:२०२१	सिंह	२६:०६:२०२८ से २६:०१:२०२९	कुम्भ	२७:०६:२०३५ से
कुम्भ	२७:०५:२०१२ से २७:०४:२०१३	सिंह	२७:०५:२०२१ से २७:०४:२०२२	कन्या	२६:०१:२०२९ से २७:०८:२०२९	मीन	२६:०१:२०३६ से
मकर	२७:०४:२०१३ से २६:०१:२०१४	कर्क	२७:०४:२०२२ से २६:०१:२०२३	तुला	२७:०८:२०२९ से २८:०३:२०३०	मेष	२६:०१:२०३६ से
धनु	२६:०१:२०१४ से २६:१०:२०१४	मिथुन	२६:०१:२०२३ से २६:१०:२०२३	वृश्चिक	२८:०३:२०३० से २६:१०:२०३०	वृष	२८:०३:२०३७ से २६:१०:२०३७
कुम्भ दशा २६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४५		सिंह दशा २६:१०:२०४५ — २६:१०:२०५३		मीन दशा २६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२		कन्या दशा २६:१०:२०६२ — २६:१०:२०७१	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मीन	२६:१०:२०३७ से	कन्या	२६:१०:२०४५ से	मेष	२६:१०:२०५३ से २७:०५:२०५४	तुला	२६:१०:२०६२ से
कुम्भ	२७:०६:२०३८ से २५:०२:२०३९	सिंह	२७:०६:२०४६ से	वृष	२७:०५:२०५४ से	वृश्चिक	२७:०५:२०६२ से
मकर	२५:०२:२०३९ से २६:१०:२०३९	कर्क	२५:०२:२०४६ से २६:१०:२०४७	मिथुन	२७:०५:२०५४ से २६:०१:२०५६	धनु	२६:०५:२०६४ से
धनु	२६:१०:२०३९ से २६:०६:२०४०	मिथुन	२६:१०:२०४७ से	कर्क	२६:०१:२०५६ से २६:१०:२०५६	मकर	२६:०१:२०६५ से २६:१०:२०६५
वृश्चिक	२६:०६:२०४० से २५:०२:२०४१	वृष	२६:०६:२०४८ से २५:०२:२०४९	सिंह	२६:१०:२०५६ से	कुम्भ	२६:१०:२०६५ से
तुला	२५:०२:२०४१ से २६:१०:२०४१	मेष	२५:०२:२०४९ से २६:१०:२०४९	कन्या	२७:०५:२०५७ से	मीन	२७:०५:२०६६ से
कन्या	२६:१०:२०४१ से २७:०६:२०४२	मीन	२६:१०:२०४९ से २७:०६:२०५०	तुला	२७:०५:२०५८ से २६:०१:२०५९	मिथुन	२७:०५:२०६७ से
सिंह	२७:०६:२०४२ से २५:०२:२०४३	कुम्भ	२७:०६:२०५० से २५:०२:२०५१	वृश्चिक	२६:०१:२०५९ से २६:१०:२०५९	वृष	२६:०१:२०६८ से २६:१०:२०६८
कर्क	२५:०२:२०४३ से २६:१०:२०४३	मकर	२५:०२:२०५१ से २६:१०:२०५१	धनु	२६:१०:२०५९ से	मिथुन	२६:१०:२०६८ से
मिथुन	२६:१०:२०४३ से २६:०६:२०४४	धनु	२६:१०:२०५१ से २६:०६:२०५२	मकर	२७:०५:२०६० से	कर्क	२७:०५:२०६९ से
वृष	२६:०६:२०४४ से २५:०२:२०४५	वृश्चिक	२६:०६:२०५२ से २५:०२:२०५३	कुम्भ	२७:०५:२०६० से २६:०१:२०६२	सिंह	२७:०५:२०७० से २६:०१:२०७१
मेष	२५:०२:२०४५ से २६:१०:२०४५	तुला	२५:०२:२०५३ से २६:१०:२०५३	मीन	२६:०१:२०६२ से २६:१०:२०६२	कन्या	२६:०१:२०७१ से २६:१०:२०७१
मेष दशा २६:१०:२०७१ — २६:१०:२०७८		तुला दशा २६:१०:२०७८ — २६:१०:२०८५		वृष दशा २६:१०:२०८५ — २६:१०:२०९३		वृश्चिक दशा २६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
वृष	२६:१०:२०७१ से २७:०५:२०७२	वृश्चिक	२६:१०:२०७८ से	मेष	२६:१०:२०८५ से	तुला	२६:१०:२०९३ से २७:०६:२०९४
मेष	२७:०५:२०७२ से	तुला	२७:०५:२०७९ से	वृष	२७:०६:२०८६ से	वृश्चिक	२७:०६:२०९४ से २५:०२:२०९५
मीन	२६:१२:२०७२ से	कन्या	२६:१२:२०७९ से	मिथुन	२५:०२:२०८७ से २६:१०:२०८७	धनु	२५:०२:२०९५ से २६:१०:२०९५
कुम्भ	२७:०५:२०७३ से	सिंह	२७:०५:२०८० से २५:०२:२०८१	कर्क	२६:१०:२०८७ से	मकर	२६:१०:२०९५ से
मकर	२५:०२:२०७४ से	कर्क	२५:०२:२०८१ से २६:०६:२०८१	सिंह	२६:०६:२०८८ से २५:०२:२०८९	कुम्भ	२६:०६:२०९६ से
धनु	२६:०६:२०७४ से	मिथुन	२६:०६:२०८१ से २७:०६:२०८२	कन्या	२५:०२:२०८९ से २६:१०:२०८९	मीन	२५:०२:२०९६ से २६:१०:२०९६
वृश्चिक	२७:०६:२०७५ से २६:११:२०७५	वृष	२७:०६:२०८२ से २६:११:२०८२	तुला	२६:१०:२०८९ से २७:०६:२०९०	मेष	२६:१०:२०९६ से
तुला	२६:११:२०७५ से	मेष	२६:११:२०८२ से २७:०६:२०८३	वृश्चिक	२७:०६:२०९० से २५:०२:२०९१	वृष	२७:०६:२०९६ से २५:०२:२०९६
कन्या	२६:०६:२०७६ से	मीन	२७:०६:२०८३ से २६:०१:२०८४	धनु	२५:०२:२०९१ से २६:१०:२०९१	मिथुन	२५:०२:२०९६ से २६:१०:२०९६
सिंह	२६:०१:२०७७ से	कुम्भ	२६:०१:२०८४ से २६:०८:२०८४	मकर	२६:१०:२०९१ से २६:०६:२०९२	कर्क	२६:१०:२०९६ से २७:०६:२१००
कर्क	२७:०८:२०७७ से	मकर	२६:०८:२०८४ से २८:०३:२०८५	कुम्भ	२६:०६:२०९२ से २५:०२:२०९३	सिंह	२७:०६:२१०० से २५:०२:२१०१
मिथुन	२८:०३:२०७८ से २६:१०:२०७८	धनु	२८:०३:२०८५ से २६:१०:२०८५	मीन	२५:०२:२०९३ से २६:१०:२०९३	कन्या	२५:०२:२१०१ से २६:१०:२१०१

जैमिनी रुद्र मण्डूक दशा (दूसरा सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ————— तक
१	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१२
२	सिंह दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२०
३	धनु दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२० — २६:१०:२०२६
४	वृष दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२६ — २६:१०:२०३७
५	कन्या दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४६
६	मकर दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४६ — २६:१०:२०५३
७	मिथुन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२
८	तुला दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६२ — २६:१०:२०६६
९	कुम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६६ — २६:१०:२०७७
१०	कर्क दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८४
११	वृश्चिक दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८४ — २६:१०:२०९२
१२	मीन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९२ — २६:१०:२१०१

जैमिनी रुद्र मण्डूक दशा की भुक्ति

मेघ दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१२		सिंह दशा २६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२०		धनु दशा २६:१०:२०२० — २६:१०:२०२६		वृष दशा २६:१०:२०२६ — २६:१०:२०३७	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मेघ	२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६	तुला	२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३	तुला	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१	वृश्चिक	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०३०
वृष	२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७	वृश्चिक	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४	वृश्चिक	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२	तुला	२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१
मिथुन	२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८	धनु	२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५	धनु	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३	कन्या	२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२
कर्क	२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९	मकर	२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६	मकर	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४	सिंह	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३
सिंह	२६:१०:२००९ से २६:१०:२०१०	कुम्भ	२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७	कुम्भ	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५	कर्क	२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४
कन्या	२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११	मीन	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८	मीन	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६	मिथुन	२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५
तुला	२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२	मेघ	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९	मेघ	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७	वृष	२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६
		वृष	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०	वृष	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८	मेघ	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७
				मिथुन	२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९		

कन्या दशा २६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४६		मकर दशा २६:१०:२०४६ — २६:१०:२०५३		मिथुन दशा २६:१०:२०५३ — २६:१०:२०६२		तुला दशा २६:१०:२०६२ — २६:१०:२०६६	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
वृश्चिक	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८	कर्क	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७	वृश्चिक	२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४	वृश्चिक	२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३
तुला	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९	मिथुन	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८	तुला	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५	तुला	२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४
कन्या	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०	वृष	२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९	कन्या	२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६	कन्या	२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५
सिंह	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१	मेघ	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०	सिंह	२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७	सिंह	२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६
कर्क	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२	मीन	२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१	कर्क	२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८	कर्क	२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७
मिथुन	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३	कुम्भ	२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२	मिथुन	२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९	मिथुन	२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८
वृष	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४	मकर	२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३	वृष	२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०	वृष	२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९
मेघ	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५			मेघ	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१		
मीन	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६			मीन	२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२		

कुम्भ दशा २६:१०:२०६६ — २६:१०:२०७७		कर्क दशा २६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८४		वृश्चिक दशा २६:१०:२०८४ — २६:१०:२०९२		मीन दशा २६:१०:२०९२ — २६:१०:२१०१	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
कर्क	२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७०	कर्क	२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७७	मेघ	२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५	तुला	२६:१०:२०९२ से २६:१०:२०९३
मिथुन	२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१	मिथुन	२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७९	वृष	२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६	वृश्चिक	२६:१०:२०९३ से २६:१०:२०९४
वृष	२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२	वृष	२६:१०:२०७९ से २६:१०:२०८०	मिथुन	२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८७	धनु	२६:१०:२०९४ से २६:१०:२०९५
मेघ	२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३	मेघ	२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१	कर्क	२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८	मकर	२६:१०:२०९५ से २६:१०:२०९६
मीन	२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४	मीन	२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२	सिंह	२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९	कुम्भ	२६:१०:२०९६ से २६:१०:२०९७
कुम्भ	२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५	कुम्भ	२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३	कन्या	२६:१०:२०८९ से २६:१०:२०९०	मीन	२६:१०:२०९७ से २६:१०:२०९८
मकर	२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६	मकर	२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४	तुला	२६:१०:२०९० से २६:१०:२०९१	मेघ	२६:१०:२०९८ से २६:१०:२०९९
धनु	२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७			वृश्चिक	२६:१०:२०९१ से २६:१०:२०९२	वृष	२६:१०:२०९९ से २६:१०:२१००
						मिथुन	२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१

जैमिनी दृग दशा

दूसरा सिद्धान्त

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	कुम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१३
२	तुला दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१३ — २६:१०:२०२०
३	कर्क दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२० — २६:१०:२०२७
४	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२७ — २६:१०:२०३४
५	मीन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३४ — २६:१०:२०४३
६	धनु दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४३ — २६:१०:२०५२
७	कन्या दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५२ — २६:१०:२०६१
८	मिथुन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६१ — २६:१०:२०७०
९	मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७० — २६:१०:२०७७
१०	सिंह दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८५
११	वृश्चिक दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८५ — २६:१०:२०९३
१२	कुम्भ दशा	८ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१

जैमिनी दृग दशा की भुक्ति

कुम्भ दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१३		तुला दशा २६:१०:२०१३ — २६:१०:२०२०		कर्क दशा २६:१०:२०२० — २६:१०:२०२७		मेष दशा २६:१०:२०२७ — २६:१०:२०३४	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
कर्क	२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६	वृश्चिक	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४	कर्क	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१	मेष	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८
मिथुन	२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७	तुला	२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५	मिथुन	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२	वृष	२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९
वृष	२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८	कन्या	२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६	वृष	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३	मिथुन	२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०
मेष	२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९	सिंह	२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७	मेष	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४	कर्क	२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१
मीन	२६:१०:२००९ से २६:१०:२०१०	कर्क	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८	मीन	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५	सिंह	२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२
कुम्भ	२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११	मिथुन	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९	कुम्भ	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६	कन्या	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३
मकर	२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२	वृष	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०	मकर	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७	तुला	२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४
धनु	२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३						

मीन दशा २६:१०:२०३४ — २६:१०:२०४३		धनु दशा २६:१०:२०४३ — २६:१०:२०५२		कन्या दशा २६:१०:२०५२ — २६:१०:२०६१		मिथुन दशा २६:१०:२०६१ — २६:१०:२०७०	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
तुला	२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५	तुला	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४	वृश्चिक	२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३	वृश्चिक	२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२
वृश्चिक	२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६	वृश्चिक	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५	तुला	२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४	तुला	२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३
धनु	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७	धनु	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६	कन्या	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५	कन्या	२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४
मकर	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८	मकर	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७	सिंह	२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६	सिंह	२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५
कुम्भ	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९	कुम्भ	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८	कर्क	२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७	कर्क	२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६
मीन	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०	मीन	२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९	मिथुन	२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८	मिथुन	२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७
मेष	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१	मेष	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०	वृष	२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९	वृष	२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८
वृष	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२	वृष	२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१	मेष	२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०	मेष	२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९
मिथुन	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३	मिथुन	२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२	मीन	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१	मीन	२६:१०:२०६९ से २६:१०:२०७०

मेष दशा २६:१०:२०७० — २६:१०:२०७७		सिंह दशा २६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८५		वृश्चिक दशा २६:१०:२०८५ — २६:१०:२०९३		कुम्भ दशा २६:१०:२०९३ — २६:१०:२१०१	
भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक	भुक्ति	से ---- तक
मेष	२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१	तुला	२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७८	मेष	२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६	कर्क	२६:१०:२०९३ से २६:१०:२०९४
वृष	२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२	वृश्चिक	२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०७९	वृष	२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८७	मिथुन	२६:१०:२०९४ से २६:१०:२०९५
मिथुन	२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३	धनु	२६:१०:२०७९ से २६:१०:२०८०	मिथुन	२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८	वृष	२६:१०:२०९५ से २६:१०:२०९६
कर्क	२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४	मकर	२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१	कर्क	२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९	मेष	२६:१०:२०९६ से २६:१०:२०९७
सिंह	२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५	कुम्भ	२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२	सिंह	२६:१०:२०८९ से २६:१०:२०९०	मीन	२६:१०:२०९७ से २६:१०:२०९८
कन्या	२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६	मीन	२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३	कन्या	२६:१०:२०९० से २६:१०:२०९१	कुम्भ	२६:१०:२०९८ से २६:१०:२०९९
तुला	२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७	मेष	२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४	तुला	२६:१०:२०९१ से २६:१०:२०९२	मकर	२६:१०:२०९९ से २६:१०:२१००
		वृष	२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५	वृश्चिक	२६:१०:२०९२ से २६:१०:२०९३	धनु	२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१

वर्णदा दशा (द्वितीय सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	मकर दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१५
२	कुम्भ दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१५ — २६:१०:२०२५
३	मीन दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२५ — २६:१०:२०३५
४	मेष दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३५ — २६:१०:२०३७
५	वृष दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४७
६	मिथुन दशा	११ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४७ — २६:१०:२०५८
७	कर्क दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५८ — २६:१०:२०६८
८	सिंह दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६८ — २६:१०:२०७८
९	कन्या दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७८ — २६:१०:२०८८
१०	तुला दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८८ — २६:१०:२०९८
११	वृश्चिक दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९८ — २६:१०:२१०८
१२	धनु दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२१०८ — २६:१०:२११८

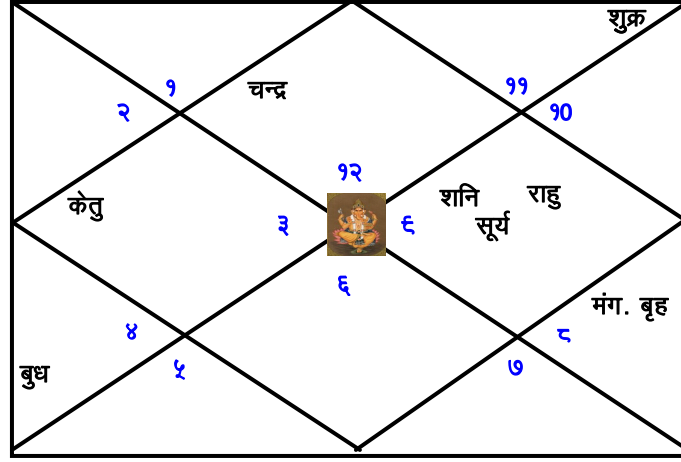
वर्णदा दशा की भुक्ति

मकर दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१५		कुम्भ दशा २६:१०:२०१५ — २६:१०:२०२५		मीन दशा २६:१०:२०२५ — २६:१०:२०३५		मेष दशा २६:१०:२०३५ — २६:१०:२०३७	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
धनु	२६:१०:२००५ से २७:०८:२००६	मीन	२६:१०:२०१५ से २६:०८:२०१६	मेष	२६:१०:२०२५ से २७:०८:२०२६	वृष	२६:१०:२०३५ से २६:१२:२०३६
मकर	२७:०८:२००६ से	कुम्भ	२६:०८:२०१६ से	वृष	२७:०८:२०२६ से	मेष	२६:१२:२०३६ से २५:०२:२०३६
कुम्भ	२७:०६:२००७ से	मकर	२७:०६:२०१७ से २७:०४:२०१८	मिथुन	२७:०६:२०२७ से	मीन	२५:०२:२०३६ से
मीन	२६:०४:२००८ से २५:०२:२००९	धनु	२७:०४:२०१८ से २५:०२:२०१९	कर्क	२६:०४:२०२८ से २५:०२:२०२९	कुम्भ	२६:०४:२०३६ से
मेष	२५:०२:२००९ से २६:१२:२००९	वृश्चिक	२५:०२:२०१९ से २६:१२:२०१९	सिंह	२५:०२:२०२९ से २६:१२:२०२९	मकर	२६:०६:२०३६ से
वृष	२६:१२:२००९ से २६:१०:२०१०	तुला	२६:१२:२०१९ से २६:१०:२०२०	कन्या	२६:१२:२०२९ से २६:१०:२०३०	धनु	२६:०८:२०३६ से
मिथुन	२६:१०:२०१० से २७:०८:२०११	कन्या	२६:१०:२०२० से २७:०८:२०२१	तुला	२६:१०:२०३० से २७:०८:२०३१	वृश्चिक	२६:१०:२०३६ से २६:१२:२०३६
कर्क	२७:०८:२०११ से २६:०६:२०१२	सिंह	२७:०८:२०२१ से २७:०६:२०२२	वृश्चिक	२७:०८:२०३१ से २६:०६:२०३२	तुला	२६:१२:२०३६ से २५:०२:२०३७
सिंह	२६:०६:२०१२ से २७:०४:२०१३	कर्क	२७:०६:२०२२ से	धनु	२६:०६:२०३२ से	कन्या	२५:०२:२०३६ से
कन्या	२७:०४:२०१३ से २५:०२:२०१४	मिथुन	२७:०४:२०२२ से	मकर	२७:०४:२०३२ से २५:०२:२०३३	सिंह	२७:०४:२०३६ से
तुला	२५:०२:२०१४ से २६:१२:२०१४	वृष	२५:०२:२०२४ से २६:१२:२०२४	कुम्भ	२५:०२:२०३३ से २५:१२:२०३४	कर्क	२७:०६:२०३७ से
वृश्चिक	२६:१२:२०१४ से २६:१०:२०१५	मेष	२६:१२:२०२४ से २६:१०:२०२५	मीन	२६:१२:२०३४ से २६:१०:२०३५	मिथुन	२७:०८:२०३७ से

वृष दशा २६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४७		मिथुन दशा २६:१०:२०४७ — २६:१०:२०५८		कर्क दशा २६:१०:२०५८ — २६:१०:२०६८		सिंह दशा २६:१०:२०६८ — २६:१०:२०७८	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मेष	२६:१०:२०३७ से २७:०८:२०३८	वृष	२६:१०:२०४७ से २६:०६:२०४८	मिथुन	२६:१०:२०५८ से २७:०८:२०५९	कन्या	२६:१०:२०६८ से
वृष	२७:०८:२०३८ से	मेष	२६:०६:२०४८ से २७:०८:२०४९	कर्क	२७:०८:२०५९ से	सिंह	२७:०८:२०६८ से
मिथुन	२७:०६:२०३९ से	मीन	२७:०८:२०४९ से	सिंह	२६:०६:२०६० से	कर्क	२७:०८:२०७० से
कर्क	२६:०४:२०४० से २५:०२:२०४१	कुम्भ	२७:०७:२०५० से	कन्या	२७:०४:२०६१ से २५:०२:२०६२	मिथुन	२७:०४:२०७१ से २५:०२:२०७२
सिंह	२५:०२:२०४१ से २६:१२:२०४१	मकर	२७:०६:२०५१ से २७:०५:२०५२	तुला	२५:०२:२०६२ से २६:१२:२०६२	वृष	२५:०२:२०७२ से २६:१२:२०७२
कन्या	२६:१२:२०४१ से २६:१०:२०४२	धनु	२७:०५:२०५२ से २७:०४:२०५३	वृश्चिक	२६:१२:२०६२ से २६:१०:२०६३	मेष	२६:१२:२०७२ से २६:१०:२०७३
तुला	२६:१०:२०४२ से २७:०८:२०४३	वृश्चिक	२७:०४:२०५३ से २५:०२:२०५४	धनु	२६:१०:२०६३ से	मीन	२६:१०:२०७३ से
वृश्चिक	२७:०८:२०४३ से	तुला	२५:०२:२०५४ से २५:०२:२०५५	मकर	२६:०८:२०६४ से	कुम्भ	२७:०८:२०७४ से
धनु	२६:०६:२०४४ से	कन्या	२५:०२:२०५५ से २६:०९:२०५६	कुम्भ	२७:०६:२०६५ से	मकर	२७:०६:२०७५ से
मकर	२७:०४:२०४५ से २५:०२:२०४६	सिंह	२६:०९:२०५६ से २६:१२:२०५७	मीन	२७:०४:२०६६ से	धनु	२६:०४:२०७६ से
कुम्भ	२५:०२:२०४६ से २६:१२:२०४६	कर्क	२६:१२:२०५६ से २६:११:२०५७	मेष	२५:०२:२०६७ से	वृश्चिक	२५:०२:२०७७ से
मीन	२६:१२:२०४६ से २६:१०:२०४७	मिथुन	२६:११:२०५७ से २६:१०:२०५८	वृष	२६:१२:२०६७ से	तुला	२६:१२:२०७७ से

कन्या दशा २६:१०:२०७८ — २६:१०:२०८८		तुला दशा २६:१०:२०८८ — २६:१०:२०९८		वृश्चिक दशा २६:१०:२०९८ — २६:१०:२१०८		धनु दशा २६:१०:२१०८ — २६:१०:२११८	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
तुला	२६:१०:२०७८ से	वृश्चिक	२६:१०:२०८८ से २७:०८:२०८९	तुला	२६:१०:२०९८ से २७:०८:२०९९	वृश्चिक	२६:१०:२१०८ से २७:०८:२१०९
वृश्चिक	२७:०८:२०७९ से	तुला	२७:०८:२०८९ से	वृश्चिक	२७:०८:२०९९ से २७:०६:२१००	तुला	२७:०८:२१०९ से २७:०६:२११०
धनु	२६:०६:२०८० से २७:०४:२०८१	कन्या	२७:०६:२०९० से २७:०४:२०९१	धनु	२७:०६:२१०० से २७:०४:२१०१	कन्या	२७:०६:२११० से २७:०४:२१११
मकर	२७:०४:२०८१ से २५:०२:२०८२	सिंह	२७:०४:२०९१ से २५:०२:२०९२	मकर	२७:०४:२१०१ से २५:०२:२१०२	सिंह	२७:०४:२१११ से २५:०२:२११२
कुम्भ	२५:०२:२०८२ से २६:१२:२०८२	कर्क	२५:०२:२०९२ से २६:१२:२०९२	कुम्भ	२५:०२:२१०२ से २६:१२:२१०२	कर्क	२५:०२:२११२ से २६:१२:२११२
मीन	२६:१२:२०८२ से २६:१०:२०८३	मिथुन	२६:१२:२०९२ से २६:१०:२०९३	मीन	२६:१२:२१०२ से २६:१०:२१०३	मिथुन	२६:१२:२११२ से २६:१०:२११३
मेष	२६:१०:२०८३ से २६:०८:२०८४	वृष	२६:१०:२०९३ से २७:०८:२०९४	मेष	२६:१०:२१०३ से २६:०८:२१०४	वृष	२६:१०:२११३ से २७:०८:२११४
वृष	२६:०८:२०८४ से	मेष	२७:०८:२०९४ से	वृष	२६:०८:२१०४ से २७:०६:२१०५	मेष	२७:०८:२११४ से २७:०६:२११५
मिथुन	२७:०६:२०८५ से	मीन	२७:०६:२०९५ से	मिथुन	२७:०६:२१०५ से २७:०४:२१०६	मीन	२७:०६:२११५ से २६:०४:२११६
कर्क	२७:०४:२०८६ से	कुम्भ	२६:०४:२०९६ से	कर्क	२७:०४:२१०६ से २५:०२:२१०७	कुम्भ	२६:०४:२११६ से २५:०२:२११७
सिंह	२५:०२:२०८७ से २६:१२:२०८७	मकर	२५:०२:२०९७ से २६:१२:२०९७	सिंह	२५:०२:२१०७ से २६:१२:२१०७	मकर	२५:०२:२११७ से २६:१२:२११७
कन्या	२६:१२:२०८७ से २६:१०:२०८८	धनु	२६:१२:२०९७ से २६:१०:२०९८	कन्या	२६:१२:२१०७ से २६:१०:२१०८	धनु	२६:१२:२११७ से २६:१०:२११८

नवांश कुण्डली (प्रचलित)















पद-नाथ अंश दशा













क० स०	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	वृश्चिक दशा	१२ न० वर्ष	२६:१०:२००५ — १८:०६:२०१६
२	मिथुन दशा	१ न० वर्ष	१८:०६:२०१६ — ०६:०५:२०१७
३	मकर दशा	१ न० वर्ष	०६:०५:२०१७ — २८:०३:२०१८
४	सिंह दशा	८ न० वर्ष	२८:०३:२०१८ — ०३:०५:२०२५
५	मीन दशा	८ न० वर्ष	०३:०५:२०२५ — ०६:०६:२०३२
६	तुला दशा	८ न० वर्ष	०६:०६:२०३२ — १२:०७:२०३६
७	वृष दशा	३ न० वर्ष	१२:०७:२०३६ — १०:०३:२०४२
८	धनु दशा	११ न० वर्ष	१०:०३:२०४२ — १२:१२:२०५१
९	कर्क दशा	८ न० वर्ष	१२:१२:२०५१ — १६:०१:२०५६
१०	कुम्भ दशा	२ न० वर्ष	१६:०१:२०५६ — २६:१०:२०६०
११	कन्या दशा	१० न० वर्ष	२६:१०:२०६० — ०६:०६:२०६६
१२	मेष दशा	७ न० वर्ष	०६:०६:२०६६ — २४:११:२०७५

As per Padanathamsha Dasha, the important periods are around the following dates : 03:05:2025 , 06:06:2032 , 12:07:2039 , 10:03:2042 , 12:12:2051 , 16:01:2059 , 26:10:2060 , 09:09:2069.













जैमिनी ब्रह्म दशा

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	 मेष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१२
२	 वृष दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१२ — २६:१०:२०१८
३	 मिथुन दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१८ — २६:१०:२०२८
४	 कर्क दशा	३ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३१
५	 सिंह दशा	११ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३१ — २६:१०:२०४२
६	 कन्या दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४२ — २६:१०:२०५२
७	 तुला दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५२ — २६:१०:२०६४
८	 वृश्चिक दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६४ — २६:१०:२०६९
९	 धनु दशा	११ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६९ — २६:१०:२०८०
१०	 मकर दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८० — २६:१०:२०९०
११	 कुम्भ दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९० — २६:१०:२०९५
१२	 मीन दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९५ — २६:१०:२१०२










निरायन शुल फल दशा

क० स०	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	 कर्क दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४
२	 मिथुन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२३
३	 वृष दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२३ — २६:१०:२०३२
४	 मेष दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३२ — २६:१०:२०४१
५	 मीन दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४१ — २६:१०:२०५०
६	 कुम्भ दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५० — २६:१०:२०५९
७	 मकर दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५९ — २६:१०:२०६८
८	 धनु दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६८ — २६:१०:२०७७
९	 वृश्चिक दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८६
१०	 तुला दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८६ — २६:१०:२०९५
११	 कन्या दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०९५ — २६:१०:२१०४
१२	 सिंह दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२१०४ — २६:१०:२११३










जैमिनी दर्पण दशा

क0 स0	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	 मिथुन दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१४
२	 कर्क दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०१४ — २६:१०:२०२३
३	 सिंह दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०२३ — २६:१०:२०३२
४	 कन्या दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०३२ — २६:१०:२०४१
५	 तुला दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०४१ — २६:१०:२०५०
६	 वृश्चिक दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०५० — २६:१०:२०५९
७	 धनु दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०५९ — २६:१०:२०६८
८	 मकर दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०६८ — २६:१०:२०७७
९	 कुम्भ दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०७७ — २६:१०:२०८६
१०	 मीन दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०८६ — २६:१०:२०९५
११	 मेष दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०९५ — २६:१०:२१०४
१२	 वृष दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२१०४ — २६:१०:२११३













जैमिनी चर पर्याय दशा

क0 स0	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	 तुला(चन्द्रमा) दशा	४ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२००५ — २६:१०:२००६
२	 कुम्भ(शनि) दशा	८ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२००६ — २६:१०:२०१७
३	 मिथुन(सूर्य) दशा	५ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०१७ — २६:१०:२०२२
४	 तुला(बृहस्पति) दशा	१ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०२२ — २६:१०:२०२३
५	 कुम्भ(मंगल) दशा	३ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०२३ — २६:१०:२०२६
६	 मिथुन(शुक्र) दशा	८ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०२६ — २६:१०:२०३४
७	 तुला(बुध) दशा	१२ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०३४ — २६:१०:२०४६
८	 कुम्भ(केतु) दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०४६ — २६:१०:२०५२
९	 मिथुन(राहु) दशा	४ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०५२ — २६:१०:२०५६


जैमिनी स्थिर पर्याय दशा

क0 स0	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	 धनु(चन्द्रमा) दशा	६ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०११
२	 मिथुन(शनि) दशा	१२ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०११ — २६:१०:२०२३
३	 मकर(सूर्य) दशा	१० व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०२३ — २६:१०:२०३३
४	 कर्क(बृहस्पति) दशा	४ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०३३ — २६:१०:२०३७
५	 कुम्भ(मंगल) दशा	३ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०३७ — २६:१०:२०४०
६	 सिंह(शुक्र) दशा	१० व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०४० — २६:१०:२०५०
७	 मीन(बुध) दशा	५ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०५० — २६:१०:२०५५
८	 कन्या(केतु) दशा	१ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०५५ — २६:१०:२०५६
९	 मेष(राहु) दशा	२ व0 0 मा0 0 दि0	२६:१०:२०५६ — २६:१०:२०५८


जैमिनी त्रिकोन दशा (नीलकांत का सिद्धान्त)

क्र० सं०		दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१		तुला दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२००६
२		मिथुन दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००६ — २६:१०:२०११
३		कुम्भ दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०११ — २६:१०:२०१२
४		कन्या दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२२
५		वृष दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२२ — २६:१०:२०२८
६		मकर दशा	६ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३४
७		सिंह दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३४ — २६:१०:२०३६
८		मेष दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३६ — २६:१०:२०४८
९		धनु दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४८ — २६:१०:२०५८
१०		कर्क दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५८ — २६:१०:२०७०
११		मीन दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७० — २६:१०:२०७५
१२		वृश्चिक दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०७५ — २६:१०:२०७७

जैमिनी त्रिकोन दशा की भुक्ति

 तुला दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२००६

•• मिथुन दशा २६:१०:२००६ — २६:१०:२०११

 कुम्भ दशा २६:१०:२०११ — २६:१०:२०१२


•• कन्या दशा २६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२२

भुक्ति	से — तक
तुला	२६:१०:२००५ से २६:११:२००५
कुम्भ	२६:११:२००५ से २६:१२:२००५
मिथुन	२६:१२:२००५ से २६:०१:२००६
वृश्चिक	२६:०१:२००६ से २५:०२:२००६
मीन	२५:०२:२००६ से २८:०३:२००६
कर्क	२८:०३:२००६ से
धनु	२७:०५:२००६ से
मेष	२७:०५:२००६ से
सिंह	२७:०६:२००६ से
मकर	२७:०७:२००६ से
वृष	२७:०८:२००६ से
कन्या	२६:०६:२००६ से


भुक्ति	से — तक
मिथुन	२६:१०:२००६ से २८:०३:२००७
तुला	२८:०३:२००७ से
कुम्भ	२७:०८:२००७ से २६:०१:२००८
कर्क	२६:०१:२००८ से २६:०६:२००८
वृश्चिक	२६:०६:२००८ से २६:११:२००८
मीन	२६:११:२००८ से २७:०४:२००९
सिंह	२७:०४:२००९ से २६:०६:२००९
धनु	२६:०६:२००९ से २५:०२:२०१०
मेष	२५:०२:२०१० से २७:०७:२०१०
कन्या	२७:०७:२०१० से २६:१२:२०१०
मकर	२६:१२:२०१० से २७:०५:२०११
वृष	२७:०५:२०११ से २६:१०:२०११

भुक्ति	से — तक
कुम्भ	२६:१०:२०११ से २६:११:२०११
तुला	२६:११:२०११ से २६:१२:२०११
मिथुन	२६:१२:२०११ से २६:०१:२०१२
मकर	२६:०१:२०१२ से २५:०२:२०१२
कन्या	२५:०२:२०१२ से २७:०३:२०१२
वृष	२७:०३:२०१२ से २६:०४:२०१२
धनु	२६:०४:२०१२ से २७:०५:२०१२
सिंह	२७:०५:२०१२ से २६:०६:२०१२
मेष	२६:०६:२०१२ से २७:०७:२०१२
वृश्चिक	२७:०७:२०१२ से २६:०८:२०१२
कर्क	२६:०८:२०१२ से २६:०९:२०१२
मीन	२६:०९:२०१२ से २६:१०:२०१२

भुक्ति	से — तक
कन्या	२६:१०:२०१२ से २७:०८:२०१३
वृष	२७:०८:२०१३ से २७:०६:२०१४
मकर	२७:०६:२०१४ से २७:०४:२०१५
सिंह	२७:०४:२०१५ से २५:०२:२०१६
मेष	२५:०२:२०१६ से २६:१२:२०१६
धनु	२६:१२:२०१६ से २६:१०:२०१७
कर्क	२६:१०:२०१७ से २७:०८:२०१८
मीन	२७:०८:२०१८ से २७:०६:२०१९
वृश्चिक	२७:०६:२०१९ से २६:०४:२०२०
मिथुन	२६:०४:२०२० से २५:०२:२०२१
कुम्भ	२५:०२:२०२१ से २६:१२:२०२१
तुला	२६:१२:२०२१ से २६:१०:२०२२

 वृष दशा २६:१०:२०२२ — २६:१०:२०२८

•• मकर दशा २६:१०:२०२८ — २६:१०:२०३४

 सिंह दशा २६:१०:२०३४ — २६:१०:२०३६


•• मेष दशा २६:१०:२०३६ — २६:१०:२०४८

भुक्ति	से — तक
वृष	२६:१०:२०२२ से २७:०४:२०२३
कन्या	२७:०४:२०२३ से २६:१०:२०२३
मकर	२६:१०:२०२३ से २६:०४:२०२४
मिथुन	२६:०४:२०२४ से २६:१०:२०२४
तुला	२६:१०:२०२४ से २७:०४:२०२५
कुम्भ	२७:०४:२०२५ से २६:१०:२०२५
कर्क	२६:१०:२०२५ से २७:०४:२०२६
वृश्चिक	२७:०४:२०२६ से
मीन	२६:१०:२०२६ से
सिंह	२७:०४:२०२७ से
धनु	२६:१०:२०२७ से २५:०४:२०२८
मेष	२६:०४:२०२८ से २६:१०:२०२८


भुक्ति	से — तक
मकर	२६:१०:२०२८ से २७:०४:२०२९
कन्या	२७:०४:२०२९ से २६:१०:२०२९
वृष	२६:१०:२०२९ से २७:०४:२०३०
धनु	२७:०४:२०३० से २६:१०:२०३०
सिंह	२६:१०:२०३० से २७:०४:२०३१
मेष	२७:०४:२०३१ से २६:१०:२०३१
वृश्चिक	२६:१०:२०३१ से २६:०४:२०३२
कर्क	२६:०४:२०३२ से २६:१०:२०३२
मीन	२६:१०:२०३२ से २७:०४:२०३३
तुला	२७:०४:२०३३ से २६:१०:२०३३
मिथुन	२६:१०:२०३३ से २७:०४:२०३४
कुम्भ	२७:०४:२०३४ से २६:१०:२०३४

भुक्ति	से — तक
सिंह	२६:१०:२०३४ से २६:१२:२०३४
मेष	२६:१२:२०३४ से २५:०२:२०३५
धनु	२५:०२:२०३५ से २७:०४:२०३५
कर्क	२७:०४:२०३५ से
मीन	२७:०६:२०३५ से
वृश्चिक	२७:०८:२०३५ से २६:१०:२०३५
मिथुन	२६:१०:२०३५ से २६:१२:२०३५
कुम्भ	२६:१२:२०३५ से २५:०२:२०३६
तुला	२५:०२:२०३६ से
वृष	२६:०४:२०३६ से
मकर	२६:०४:२०३६ से
कन्या	२६:०८:२०३६ से

भुक्ति	से — तक
मेष	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७
सिंह	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८
धनु	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९
वृष	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०
कन्या	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१
मकर	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२
मिथुन	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३
तुला	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४
कुम्भ	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५
कर्क	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६
वृश्चिक	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७
मीन	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८

 धनु दशा २६:१०:२०४८ — २६:१०:२०५८

•• कर्क दशा २६:१०:२०५८ — २६:१०:२०५९

 मीन दशा २६:१०:२०५९ — २६:१०:२०५९

•• वृश्चिक दशा २६:१०:२०५९ — २६:१०:२०५७

भुक्ति	से — तक
धनु	२६:१०:२०४८ से २७:०८:२०४९
मेष	२७:०८:२०४९ से
सिंह	२७:०६:२०५० से २७:०४:२०५१
मकर	२७:०४:२०५१ से २५:०२:२०५२
वृष	२५:०२:२०५२ से २६:१२:२०५२
कन्या	२६:१२:२०५२ से २६:१०:२०५३
कुम्भ	२६:१०:२०५३ से २७:०८:२०५४
मिथुन	२७:०८:२०५४ से
तुला	२७:०६:२०५५ से
मीन	२६:०४:२०५६ से
कर्क	२५:०२:२०५७ से २६:१२:२०५७
वृश्चिक	२६:१२:२०५७ से २६:१०:२०५८

भुक्ति	से — तक
कर्क	२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९
मीन	२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०
वृश्चिक	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१
मिथुन	२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२
कुम्भ	२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३
तुला	२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४
वृष	२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५
मकर	२६:१०:२०६५ से
कन्या	२६:१०:२०६६ से
मेष	२६:१०:२०६७ से
धनु	२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९
सिंह	२६:१०:२०६९ से २६:१०:२०७०

भुक्ति	से — तक
मीन	२६:१०:२०५९ से २८:०३:२०५९
वृश्चिक	२८:०३:२०५९ से २७:०८:२०५९
कर्क	२७:०८:२०५९ से २६:०१:२०५९
कुम्भ	२६:०१:२०५९ से
तुला	२६:०६:२०५९ से
मिथुन	२६:११:२०५९ से २७:०४:२०५९
मकर	२७:०४:२०५९ से
कन्या	२६:०६:२०५९ से
वृष	२५:०२:२०५९ से
धनु	२७:०७:२०५९ से
सिंह	२६:१२:२०५९ से
मेष	२७:०५:२०५९ से

भुक्ति	से — तक
वृश्चिक	२६:१०:२०५९ से २६:१२:२०५९
मीन	२६:१२:२०५९ से
कर्क	२५:०२:२०५९ से
धनु	२६:०४:२०५९ से
मेष	२६:०६:२०५९ से
सिंह	२६:०८:२०५९ से
मकर	२६:१०:२०५९ से
वृष	२६:१२:२०५९ से
कन्या	२५:०२:२०५९ से
कुम्भ	२७:०४:२०५९ से
मिथुन	२७:०६:२०५९ से
तुला	२७:०८:२०५९ से

जैमिनी योगार्ध दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

क्र० सं०		दशा का नाम	अवधि	से ——— तक
१		धनु दशा	६ व० ६ मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २७:०४:२०१५
२		मकर दशा	६ व० ६ मा० ० दि०	२७:०४:२०१५ — २६:१०:२०२१
३		कुम्भ दशा	४ व० ६ मा० ० दि०	२६:१०:२०२१ — २७:०४:२०२६
४		मीन दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२७:०४:२०२६ — २७:०४:२०३३
५		मेष दशा	६ व० ६ मा० ० दि०	२७:०४:२०३३ — २६:१०:२०४२
६		वृष दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४२ — २६:१०:२०४६
७		मिथुन दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४६ — २६:१०:२०५६
८		कर्क दशा	६ व० ६ मा० ० दि०	२६:१०:२०५६ — २७:०४:२०६६
९		सिंह दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२७:०४:२०६६ — २७:०४:२०७१
१०		कन्या दशा	६ व० ६ मा० ० दि०	२७:०४:२०७१ — २६:१०:२०८०
११		तुला दशा	४ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८० — २६:१०:२०८४
१२		वृश्चिक दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०८४ — २६:१०:२०८६

जैमिनी योगार्ध दशा की भुक्ति

धनु दशा २६:१०:२००५ — २७:०४:२०१५		मकर दशा २७:०४:२०१५ — २६:१०:२०२१		कुम्भ दशा २६:१०:२०२१ — २७:०४:२०२६		मीन दशा २७:०४:२०२६ — २७:०४:२०३३	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मकर	२६:१०:२००५ से ११:०८:२००६	धनु	२७:०४:२०१५ से ११:११:२०१५	मीन	२६:१०:२०२१ से १२:०३:२०२२	कुम्भ	२७:०४:२०२६ से २६:११:२०२६
कुम्भ	११:०८:२००६ से २७:०५:२००७	वृश्चिक	११:११:२०१५ से २७:०५:२०१६	मेष	१२:०३:२०२२ से २७:०७:२०२२	मकर	२६:११:२०२६ से
मीन	२७:०५:२००७ से १२:०३:२००८	तुला	२७:०५:२०१६ से ११:१२:२०१६	वृष	२७:०७:२०२२ से ११:१२:२०२२	धनु	२७:०६:२०२७ से
मेष	१२:०३:२००८ से २६:१२:२००८	कन्या	११:१२:२०१६ से २७:०६:२०१७	मिथुन	११:१२:२०२२ से २७:०४:२०२३	वृश्चिक	२६:०१:२०२६ से २६:०८:२०२८
वृष	२६:१२:२००८ से ११:१०:२००९	सिंह	२७:०६:२०१७ से १०:०९:२०१७	कर्क	११:०८:२०२३ से ११:०८:२०२३	तुला	२६:०८:२०२८ से २८:०३:२०२९
मिथुन	११:१०:२००९ से २७:०७:२०१०	कर्क	१०:०९:२०१७ से २७:०७:२०१८	सिंह	११:०८:२०२३ से २६:०१:२०२४	कन्या	२८:०३:२०२९ से २६:१०:२०२९
कर्क	२७:०७:२०१० से १२:०५:२०११	मिथुन	२७:०७:२०१८ से १०:०८:२०१९	कन्या	२६:०९:२०२४ से ११:०८:२०२४	सिंह	२६:१०:२०२९ से २७:०५:२०३०
सिंह	१२:०५:२०११ से २५:०२:२०१२	वृष	१०:०८:२०१९ से २७:०८:२०१९	तुला	११:०६:२०२४ से २६:१०:२०२४	कर्क	२७:०५:२०३० से २६:१२:२०३०
कन्या	२५:०२:२०१२ से ११:१२:२०१२	मेष	२५:०८:२०१९ से १२:०३:२०२०	वृश्चिक	१२:०३:२०२४ से १२:०३:२०२५	मिथुन	२७:०५:२०३० से २६:१२:२०३१
तुला	११:१२:२०१२ से २६:०६:२०१३	मीन	१२:०३:२०२० से २६:०६:२०२०	धनु	१२:०३:२०२५ से २७:०७:२०२५	वृष	२७:०७:२०३१ से २५:०२:२०३२
वृश्चिक	२६:०६:२०१३ से १२:०७:२०१४	कुम्भ	२६:०६:२०२० से १२:०४:२०२१	मकर	२७:०७:२०२५ से ११:१२:२०२५	मेष	२५:०२:२०३२ से २६:०६:२०३२
धनु	१२:०७:२०१४ से २७:०४:२०१५	मकर	१२:०४:२०२१ से २६:१०:२०२१	कुम्भ	११:१२:२०२५ से २७:०४:२०२६	मीन	२६:०६:२०३२ से २७:०४:२०३३

मेष दशा २७:०४:२०३३ — २६:१०:२०४२		वृष दशा २६:१०:२०४२ — २६:१०:२०४६		मिथुन दशा २६:१०:२०४६ — २६:१०:२०५६		कर्क दशा २६:१०:२०५६ — २७:०४:२०६६	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
वृष	२७:०४:२०३३ से १०:०२:२०३४	मेष	२६:१०:२०४२ से २७:०५:२०४३	कर्क	२६:१०:२०४६ से २७:०५:२०५०	मिथुन	२६:१०:२०५६ से ११:०८:२०५७
मिथुन	१०:०२:२०३४ से २६:१२:२०३४	मीन	२७:०५:२०४३ से २६:१२:२०४३	सिंह	२७:०५:२०५० से २६:१२:२०५०	वृष	११:०८:२०५७ से २७:०५:२०५८
कर्क	२६:१२:२०३४ से ११:०८:२०३५	कुम्भ	२६:१२:२०४३ से २७:०७:२०४४	कन्या	२६:१२:२०५० से २७:०७:२०५१	मेष	२७:०५:२०५८ से १२:०३:२०५९
सिंह	११:०८:२०३५ से २६:०६:२०३६	मकर	२७:०७:२०४४ से २५:०२:२०४५	तुला	२७:०७:२०५१ से २५:०२:२०५२	मीन	१२:०३:२०५९ से २६:१२:२०५९
कन्या	२६:०६:२०३६ से	धनु	२५:०२:२०४५ से २६:०६:२०४५	वृश्चिक	२५:०२:२०५२ से २६:०६:२०५२	कुम्भ	२६:१२:२०५९ से ११:०९:२०६०
तुला	१२:०४:२०३६ से २६:०१:२०३८	वृश्चिक	२६:०६:२०४५ से	धनु	२६:०६:२०५२ से २७:०४:२०५३	मकर	११:०९:२०६० से २७:०७:२०६१
वृश्चिक	२६:०१:२०३८ से ११:११:२०३८	तुला	२७:०४:२०४६ से २६:१२:२०४६	मकर	२७:०४:२०५३ से २६:११:२०५३	धनु	२७:०७:२०६१ से १२:०२:२०६२
धनु	११:११:२०३८ से २७:०८:२०३९	कन्या	२६:१२:२०४६ से	कुम्भ	२६:११:२०५३ से २७:०६:२०५४	वृश्चिक	१२:०२:२०६२ से २५:०२:२०६३
मकर	२७:०८:२०३९ से ११:०६:२०४०	सिंह	२७:०६:२०४७ से	मीन	२७:०६:२०५४ से २६:०९:२०५५	तुला	२५:०२:२०६३ से ११:१२:२०६४
कुम्भ	११:०६:२०४० से २८:०३:२०४१	कर्क	२६:०९:२०४८ से २६:०८:२०४८	मेष	२६:०९:२०५५ से २७:०८:२०५५	कन्या	११:१२:२०६४ से २६:०६:२०६४
मीन	२८:०३:२०४१ से १०:०७:२०४२	मिथुन	२६:०८:२०४८ से २८:०३:२०४९	वृष	२७:०८:२०५५ से	सिंह	२६:०६:२०६४ से
मेष	१०:०७:२०४२ से २६:१०:२०४२	वृष	२८:०३:२०४९ से २६:१०:२०४९	मिथुन	२७:०८:२०५६ से	कर्क	१२:०७:२०६५ से

सिंह दशा २७:०४:२०६६ — २७:०४:२०७१		कन्या दशा २७:०४:२०७१ — २६:१०:२०८०		तुला दशा २६:१०:२०८० — २६:१०:२०८४		वृश्चिक दशा २६:१०:२०८४ — २६:१०:२०८६	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
कन्या	२७:०४:२०६६ से	सिंह	२७:०४:२०७१ से १०:०२:२०७२	वृश्चिक	२६:१०:२०८० से २५:०२:२०८१	तुला	२६:१०:२०८४ से २८:०३:२०८५
तुला	२६:०६:२०६६ से	कर्क	१०:०२:२०७२ से २६:११:२०७२	धनु	२५:०२:२०८१ से २७:०६:२०८१	कन्या	२८:०३:२०८५ से २७:०८:२०८६
वृश्चिक	२५:०२:२०६७ से	मिथुन	२६:११:२०७२ से ११:०९:२०७३	मकर	२७:०६:२०८१ से २६:१०:२०८१	सिंह	२७:०८:२०८६ से २६:०९:२०८६
धनु	२७:०७:२०६७ से	वृष	११:०९:२०७३ से २७:०६:२०७४	कुम्भ	२६:१०:२०८१ से २५:०२:२०८२	कर्क	२६:०९:२०८६ से
मकर	२६:१२:२०६७ से	मेष	२७:०६:२०७४ से	मीन	२५:०२:२०८२ से २७:०६:२०८२	मिथुन	२७:०६:२०८६ से
कुम्भ	२७:०७:२०६८ से	मीन	१२:०४:२०७५ से २६:०९:२०७६	मेष	२७:०६:२०८२ से २६:१०:२०८२	वृष	२६:११:२०८६ से २७:०४:२०८७
मीन	२६:१२:२०६८ से २८:०३:२०६९	कुम्भ	२६:०९:२०७६ से ११:११:२०७६	वृष	२६:१०:२०८२ से २५:०२:२०८३	मेष	२७:०४:२०८७ से
मेष	२८:०३:२०६९ से	मकर	११:११:२०७६ से २७:०८:२०७७	मिथुन	२५:०२:२०८३ से २७:०६:२०८३	मीन	२६:०६:२०८७ से २५:०२:२०८८
वृष	२७:०८:२०६९ से	धनु	२७:०८:२०७७ से	कर्क	२७:०६:२०८३ से २६:१०:२०८३	कुम्भ	२५:०२:२०८८ से २७:०७:२०८८
मिथुन	२६:०९:२०७० से	वृश्चिक	१२:०६:२०७८ से २८:०३:२०७९	सिंह	२६:१०:२०८३ से २५:०२:२०८४	मकर	२७:०७:२०८८ से २६:१२:२०८९
कर्क	२७:०६:२०७० से	तुला	२८:०३:२०७९ से ११:०९:२०८०	कन्या	२५:०२:२०८४ से २६:०६:२०८४	धनु	२६:१२:२०८९ से २७:०५:२०८९
सिंह	२६:११:२०७० से २७:०४:२०७१	कन्या	११:०९:२०८० से २६:१०:२०८०	तुला	२६:०६:२०८४ से २६:१०:२०८४	वृश्चिक	२७:०५:२०८९ से २६:१०:२०८९

आत्म-कारक दशा

आत्म कारक ग्रह : चन्द्रमा

क्र० स०	राशि (ग्रह)	अवधि	से ----- तक
१	कर्क (चन्द्रमा)	८ साल	२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१३
२	कर्क (शनि)	८ साल	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०२१
३	तुला (सूर्य)	११ साल	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०३२
४	तुला (बृहस्पति)	११ साल	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०४३
५	मेष (मंगल)	११ साल	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०५४
६	वृश्चिक (शुक्र)	१२ साल	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०६६
७	वृश्चिक (बुध)	१२ साल	२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७८
८	कन्या (केतु)	१० साल	२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०८८
९	मीन (राहु)	१० साल	२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०९८
योग :		९३ साल	

उप-कारक ग्रह दशा

उप कारक ग्रह : शुक्र

क्र० स०	राशि (ग्रह)	अवधि	से ----- तक
१	वृश्चिक (शुक्र)	१२ साल	२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१७
२	वृश्चिक (बुध)	१२ साल	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०२९
३	मीन (राहु)	१० साल	२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३९
४	कन्या (केतु)	१० साल	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४९
५	मेष (मंगल)	११ साल	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०६०
६	कर्क (चन्द्रमा)	८ साल	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६८
७	कर्क (शनि)	८ साल	२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०७६
८	तुला (सूर्य)	११ साल	२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०८७
९	तुला (बृहस्पति)	११ साल	२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०९८
योग :		९३ साल	

जैमिनी सिद्धान्त के योग

आपकी कुण्डली में सातवें भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है या उसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है, उससे दूसरी, चौथी और पाँचवीं राशि में कम से कम एक शुभ ग्रह बैठा है और इन राशियों में कोई भी अशुभ ग्रह नहीं है। यह एक बहुत ही लाभदायक स्थिति है और जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार यह एक वरिष्ठ क्रम का राजयोग युति है। आपकी कुण्डली में इस लाभकारी राजयोग की मौजूदगी के कारण आप ऊँच पद और अधिकार वाले होंगे। आप राजनैतिक क्षेत्र या किसी सरकारी नौकरी में वरिष्ठ पद पर हो सकते हैं। आप काफी धनी होंगे। जीवन आरामदेह होगा और जीवन में हर सुख-सुविधा का आनंद लेंगे। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से चौथे और दशवें भाव, दोनों में ग्रह स्थित हैं। दोनों भावों में अशुभ ग्रहों की संख्या बराबर है। कम से कम एक जोड़ा ग्रह दोनों भावों में से एक में स्थित है और वे राशि-बदलाव या नक्षत्र-बदलाव में शामिल नहीं हैं। यह एक शुभ ग्रह युति नहीं है और जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार यह एक अरिष्ठ योग युति बना रहा है। आपकी कुण्डली में इस अशुभ ग्रह की उपस्थिति के कारण आप कुछ ऐसा कार्य कर सकते हैं जो निंदनीय होगा और आपको कारावास जाने की भी संभावना हो सकती है। यदि आपकी कुण्डली कोई विपरीत ग्रह युति हो तो स्थिति में सुधार हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, चन्द्रमा और शुक्र एक दूसरे पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह जैमिनी के अनुसार एक शुभ योग है। आप चन्द्रमा और शुक्र से प्रभावित राशि की दशा के दौरान वाहन खरीदेंगे। यदि आपकी कुण्डली में चन्द्रमा की दृष्टि पड़ने वाली किसी राशि की चर दशा चल रही है तो यह स्थिति शुक्र की अथवा शुक्र की दृष्टि पड़ने वाली किसी राशि की भुक्ति के दौरान संभव है। अथवा यदि आपकी कुण्डली में शुक्र की अथवा शुक्र की दृष्टि पड़ने वाली किसी राशि की चर दशा चल रही है तो यह स्थिति चन्द्रमा की अथवा चन्द्रमा की दृष्टि पड़ने वाली किसी राशि की भुक्ति के दौरान संभव है।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध शुक्र के साथ जुड़ा हुआ है। बुध, चन्द्रमा के साथ भी जुड़ा है या चन्द्रमा पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। इसलिए यह संभावना है कि जैमिनी चर दशा में मिथुन राशि की भुक्ति या कन्या राशि की भुक्ति के दौरान आप कोई वाहन खरीद सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चन्द्रमा के साथ जुड़ा है या चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। शनि, शुक्र के साथ भी जुड़ा है या उसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। इसलिए संभावना है कि जैमिनी चर दशा में मकर राशि या कुंभ राशि की भुक्ति के दौरान आप कोई वाहन ले सकते हैं।

आपकी कुण्डली में दिव्य लग्न पर एक तुंगस्थ ग्रह या किसी शुभ ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार यह एक बहुत ही शुभ राज योग युति है। आप धनी होंगे और कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। निरिचत रूप से आप किसी वरिष्ठ पद तक पहुँचेंगे। आपका घरेलू जीवन शांतिमय एवं खुशहाल होगा और आरामदेह जीवन का आनंद लेंगे।

आपकी कुण्डली में तारा लग्न की राशि में अपने ही भाव का ग्रह स्थित है। जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार यह एक बहुत ही लाभदायक युति है, क्योंकि यह बहुत ही शुभ धनयोग बना रहा है। आप धनी तथा प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे और कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप अपने सभी प्रयत्नों में सफल होंगे। आप किसी सरकारी विभाग में किसी जिम्मेदारी वाले पद पर हो सकते हैं। आपकी आमदनी बढ़िया होगी और आम लोग आपका आदर करेंगे।

आपकी कुण्डली में जिस राशि में तारा लग्न स्थित है उसका स्वामी अपने भाव में स्थित होने वाला है। जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार यह एक लाभदायक युति है, क्योंकि यह बहुत ही शुभ धन योग बना रहा है। आप धनी तथा प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे और कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप अपने सभी प्रयत्नों में सफल होंगे। आप किसी सरकारी विभाग में किसी जिम्मेदारी वाले पद पर हो सकते हैं। आपकी आमदनी बढ़िया होगी और आम लोग आपका आदर करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु योगदा / केवल ग्रह नहीं है, लेकिन आपकी कुण्डली में राहु या तो योगदा / केवल ग्रह से जुड़ा है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आपकी सोच कुछ प्रतिकूल हो सकती है और / या आप दूसरे लोगों के दिमाग में भ्रम पैदा कर सकते हैं। आप बहुत अधिक कर्तव्यनिष्ठ या ईमानदार नहीं हो सकते हैं, बल्कि ईर्ष्यालु और कुछ लोभी हो सकते हैं। यदि राहु अशुभ ग्रहों का प्रभाव रखता है, तो आपमें किसी की झूठी निन्दा करने की आदत हो सकती है और पीठ पीछे शिकायत करने में विशेष खुशी मिल सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध शुभपति ग्रह नहीं है, लेकिन आपकी कुण्डली में बुध या तो शुभपति ग्रह से जुड़ा है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आप परीक्षक दिमाग और अशान्त प्रवृत्ति वाले हो सकते हैं जो नई सूचनाओं के लिए हमेशा चौकन्ना रहता हो। आपमें निरंतर पूछताछ और दिलचस्पी का गुण हो सकता है और साहित्य में रूचि हो सकती है। आप बहुत सारे संदेशों और पत्राचारों का लेन-देन करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र शुभपति ग्रह नहीं है, लेकिन आपकी कुण्डली में शुक्र या तो शुभपति ग्रह से जुड़ा है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आप सौम्य, आज्ञाकारी स्वभाव, सामाजिक प्रवृत्ति, और खुशामिजाज हो सकते हैं। आप सुन्दरता के प्रेमी और चमक तथा झिलमिलाहट के शौकीन होंगे। आप अपने सभी मामलों में भाग्यशाली होंगे और प्रतिभाशाली मंडली, शोभायात्रा, और आनंदोत्सव के सामने नत होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि शुभपति ग्रह नहीं है, लेकिन आपकी कुण्डली में शनि या तो शुभपति ग्रह से जुड़ा है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आप सतर्क स्वभाव, निष्पक्ष दृष्टिकोण, विचारमग्न मिजाज, सुरक्षित रहने वाले होंगे। आप प्रथा और परंपरा के अनुयायी नहीं होंगे, आपमें कर्तव्य, अनुशासन, और आज्ञा की सूक्ष्मदर्शिता होगी और कड़े मालिक के रूप में चमक सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्रेक्कन लग्न में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। बुध भी इसी राशि में स्थित है या उस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जबकि दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह न तो वक्री है और न ही नीचस्थ है। जैमिनी सिद्धान्त के अनुसार यह एक लाभदायक युति है। आप काफी शिक्षित व्यक्ति होंगे और वरिष्ठ पद पर आसीन होंगे। आप तकनीकी सलाहकार या कानूनी सलाहकार के रूप में सेवा कर सकते हैं। या फिर आप कलात्मक क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त कर सकते हैं जिसके लिए आपको सम्मान मिल सकता है और सराहना प्राप्त कर सकते हैं। यह भी संभावना है कि कम उम्र में ही आप मशहूर कलाकार बन सकते हैं।

काराकांश और विभिन्न राशियों से भविष्यफल

काराकांश राशि से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में, काराकांश नवांश-राशि मीन में स्थित है, और किसी भी दुष्ट ग्रह (मंगल, राहु या शनि) की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) इस पर नहीं पड़ रही है। कई मामलों में यह काफी भाग्यशाली संकेत है।

यदि आपकी कुण्डली में कोई विपरीत ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो आप काफी सुखी-संपन्न, व्यापक दृष्टिकोण तथा गहन धार्मिक रूझान वाले व्यक्ति होंगे। आप निरंतर धार्मिक अनुष्ठानों का अवलोकन करेंगे, प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करेंगे, धर्मपरायण लोगों का प्रवचन सुनेंगे और अंत में आपको मुक्ति मिलेगी।

काराकांश राशि में ग्रहों की स्थिति से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में, चन्द्रमा काराकांश में स्थित है, लेकिन आपकी कुण्डली में चन्द्रमा खुद आत्म-कारक ग्रह है, जिसकी वजह से फलदायक स्थिति बड़े स्तर तक आपको नहीं मिल पायेगी।

अगर आपकी कुण्डली में कोई विपरीत ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो आप राजकीय कार्यों अथवा सरकारी सेवा में संलग्न नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आपको सरकारी स्रोतों से सीधे अथवा परोक्ष रूप से फायदा प्राप्त होगा। आप किसी निजी कम्पनी में कार्यरत हो सकते हैं अथवा आपका अपना व्यापार होगा जो कि उपभोक्ता सामग्रियों से सम्बन्धित होगा। अपने पेशे के की वजह से आप हमेशा सामान्य जन के सम्पर्क में होंगे। अपने उत्तम गुणों, मृदु व्यवहार की वजह से आप काफी लोकप्रिय होंगे। आप बहुत ही भावुक प्रवृत्ति के होंगे और विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ खुशी का अनुभव करेंगे।

काराकांश राशि पर ग्रहों की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में मीन काराकांश राशि है और एक अशुभ ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह एक शुभ स्थिति नहीं है।

यदि आपकी कुण्डली में कोई विपरीत ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो आपको कान से सम्बन्धित रोग हो सकता है। या फिर, आप चाहें या न चाहें, आप अपना कान छेदवा सकते हैं।

काराकांश राशि से दूसरे भाव से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में काराकांश से दूसरे स्थान में मंगल बैठा हुआ है और वहाँ केतू नहीं है, यह कुछ मामलों में शुभ नहीं है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई विपरीत ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो, आप विपरीत लिंगी व्यक्ति से आकर्षित हो सकते हैं और आप चाहेंगे कि उससे अंतरंग सम्बन्ध स्थापित हो।

काराकांश राशि से तीसरे भाव से भविष्यफल:

किसी भी निष्कर्ष के लिए संकेत पर्याप्त नहीं हैं।

काराकांश राशि से चौथे भाव से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में काराकांश, नवांश-राशि वृष में है। यद्यपि, आपके नवांश कुण्डली में, काराकांश राशि पर इनमें से किसी ग्रह - जैसे वृहस्पति, शुक्र, बुध, मंगल या शनि - की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) नहीं पड़ रही है, फिर भी यह काफी बढ़िया संकेत है।

यदि आपकी कुण्डली में इसके विपरीत कोई ग्रह-युति नहीं है तो आप पालतू पशुओं के रखने के मामले में काफी भाग्यशाली होंगे। आपको मवेशियों से काफी लाभ मिल सकता है और पालतू जानवरों - खासकर चौपाये - से विशेष लगाव हो सकता है।

काराकांश राशि से पाँचवें भाव से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में, काराकांश से पाँचवें भाव पर केतू की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह एक भाग्यशाली स्थिति नहीं है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो आपको पेचिरा अथवा प्रदूषित व गन्दे जल पीने के कारण होने वाली बिमारियों की शिकायत होने की संभावना बनी रहेगी।

आपके नवांश कुण्डली में, बुध काराकांश से पाँचवें स्थान में बैठा हुआ है। यह एक लाभदायक युति है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकूल प्रभाव उपस्थित नहीं है तो आप एक बुद्धिमान, पढ़े-लिखे, धार्मिक व भगवान में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप भाईचारे एवं अहिंसा में विश्वास रखने वाले होंगे और एक सन्यासी की तरह सादा-सरल जीवन व्यतीत करेंगे। आप दर्शनशास्त्र के ज्ञाता होंगे और आपके बहुमूल्य दार्शनिक विचार लोकप्रिय प्रतिकाओं एवं अखबारों में छपेंगे।

काराकांश राशि से छठे भाव से भविष्यफल:

किसी भी निष्कर्ष के लिए संकेत पर्याप्त नहीं हैं।

काराकांश राशि से सातवें भाव से भविष्यफल:

किसी भी निष्कर्ष के लिए संकेत पर्याप्त नहीं हैं।

काराकांश राशि से आठवें भाव से भविष्यफल:

किसी भी निष्कर्ष के लिए संकेत पर्याप्त नहीं हैं।

काराकांश राशि से नौवें भाव से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में, एक शुभ ग्रह काराकांश से नौवें स्थान में बैठा है और कोई भी अशुभ ग्रह वहाँ नहीं बैठा है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह एक अति भाग्यशाली स्थिति है।

इस शुभ स्थिति के कारण आप एक नेक, सत्यवादी, अहिंसावादी, सदगुण-संपन्न एवं धार्मिक-प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आप भगवान को समर्पित होंगे एवं निरंतर धार्मिक अनुष्ठानों का अवलोकन करेंगे। आप जीवनभर अपने बुजुर्गों, शिक्षकों, गुरुओं एवं धर्मपरायण लोगों का आदर करेंगे। सामान्य जन से आपको आदर व प्यार मिलेगा।

आपके नवांश कुण्डली में, एक अशुभ ग्रह काराकांश से नौवें स्थान में बैठा हुआ है। वहाँ कोई अन्य दुष्ट ग्रह नहीं है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह एक अशुभ स्थिति है।

अगर आपकी कुण्डली में ग्रह-युति के प्रतिकूल कोई प्रभाव उपस्थित नहीं है तो यद्यपि, आप अपने बाल्यकाल में सत्यवादी, शान्तिप्रिय एवं समर्पित होंगे, परन्तु आपके विचार बढ़ती उम्र के साथ किन्ही परिस्थितियों के प्रभाव में या किसी दबाव के चलते विकृत हो सकते हैं। आप धीरे-धीरे लालची, लोभी एवं स्वार्थी हो सकते हैं। आप झूठ एवं चालाकी को अपनाकर लोगों को धोखा देने की कोशिश करेंगे, और आप अपने हितों के लिए हर प्रकार के तौर-तरीके अपनायेंगे।

आपके नवांश कुण्डली में, काराकांश से नौवें स्थान पर एक अशुभ ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। वहाँ कोई अन्य अशुभ ग्रह नहीं है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह उपयुक्त या लाभदायक स्थिति नहीं है।

अगर आपकी कुण्डली में ग्रह-युति के प्रतिकूल कोई प्रभाव उपस्थित नहीं है तो यद्यपि, आप अपने बाल्यकाल में सत्यवादी, शान्तिप्रिय एवं समर्पित होंगे, परन्तु आपके विचार बढ़ती उम्र के साथ किन्ही परिस्थितियों के प्रभाव में या किसी दबाव के चलते विकृत हो सकते हैं। आप धीरे-धीरे लालची, लोभी एवं स्वार्थी हो सकते हैं। आप झूठ एवं चालाकी को अपनाकर लोगों को धोखा देने की कोशिश करेंगे, और आप अपने हितों के लिए हर प्रकार के तौर-तरीके अपनायेंगे।

आपके नवांश कुण्डली में चन्द्रमा और मंगल एक साथ काराकांश से नौवें स्थान पर बैठे हुए हैं, और कोई भी शुभ ग्रह वहाँ नहीं बैठा है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह लाभदायक स्थिति है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस बात की प्रबल सम्भावना है कि आप किसी विपरीत लिंग के सदस्य से अवैध आन्तरिक संबंध रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप कई मुसीबतों के शिकार हो सकते हैं एवं कई जटिलताओं से अपने आप को घिरा महसूस कर सकते हैं।

आपके नवांश कुण्डली में चन्द्रमा और मंगल एक साथ काराकांश से नौवें स्थान पर बैठे हुए हैं। और कोई भी शुभ ग्रह वहाँ नहीं बैठा है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह लाभदायक स्थिति है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस बात की प्रबल सम्भावना है कि आप किसी विपरीत लिंग के सदस्य से अवैध आन्तरिक संबंध रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप कई मुसीबतों के शिकार हो सकते हैं एवं कई जटिलताओं से अपने आप को घिरा महसूस कर सकते हैं।

आपके नवांश कुण्डली में, चन्द्रमा और मंगल की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) एक साथ काराकांश से नौवें स्थान पर पड़ रही है, और कोई भी शुभ ग्रह यहाँ नहीं है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह शुभ स्थिति नहीं है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस बात की प्रबल सम्भावना है कि आप किसी विपरीत लिंग के सदस्य से अवैध आन्तरिक संबंध रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप कई मुसीबतों के शिकार हो सकते हैं एवं कई जटिलताओं से अपने आप को घिरा महसूस कर सकते हैं।

आपके नवांश कुण्डली में, वृहस्पति काराकांश से नौवें स्थान में बैठा हुआ है, और वहाँ सूर्य नहीं बैठा है, और न ही उसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह लाभदायक स्थिति नहीं है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो संभावना है कि आप किसी विपरीत लिंग के सदस्यों की सहमति से उनसे आन्तरिक सम्बन्ध बनायेंगे एवं कामुक क्रिया कलाप में शामिल रहेंगे।

काराकांश राशि से दसवें भाव से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह काराकांश से दसवें स्थान पर बैठे हुए हैं, और वहाँ कोई भी शुभ ग्रह नहीं बैठा है और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह लाभदायक स्थिति नहीं है।

इस ग्रह-युति की उपस्थिति के फलस्वरूप आप संभवतः माता-पिता के प्यार से वंचित रह सकते हैं। अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो हो सकता है कि आप अपने व्यवसाय या अपने पेशे में कई बार भारी हानि का सामना करें।

काराकांश राशि से ग्यारहवें भाव से भविष्यफल:

आपके नवांश कुण्डली में काराकांश से ग्यारहवें स्थान पर एक या एक से अधिक शुभ ग्रहों की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है, और वहाँ कोई भी अशुभ ग्रह नहीं बैठा है, और न ही ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। यह एक अति लाभदायक स्थिति है।

आपको अपने भाई-बन्धुओं, मित्रों एवं चाहने वालों से काफी लाभ, सक्रिय सहयोग तथा हर प्रकार की सहायता मिलेगी। आप अपने हर कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे, और एक से अधिक स्रोतों से लाभ प्राप्त होगा।

काराकांश राशि से बारहवें भाव से भविष्यफल:

आपकी नवांश कुण्डली में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह काराकांश से बारहवें भाव में स्थित है। वहाँ कोई भी अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह एक लाभदायक स्थिति है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो आपके व्यय नेक कार्यों में ही होंगे। आपको कभी भारी हानि उठाने की संभावना बहुत कम है। किसी प्रकार की फिजूल खर्ची भी नहीं करेंगे तथा किसी भारी चिकित्सा संबंधी खर्च से भी बचे रहेंगे।

आपकी नवांश कुण्डली में काराकांश से बारहवें भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है। यह एक लाभदायक स्थिति है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो आपके व्यय नेक कार्यों में ही होंगे। आपको कभी भारी हानि उठाने की संभावना बहुत कम है। किसी प्रकार की फिजूल खर्ची भी नहीं करेंगे तथा किसी भारी चिकित्सा संबंधी खर्च से भी बचे रहेंगे।

आपकी नवांश कुण्डली में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह काराकांश से बारहवें भाव में स्थित है। वहाँ कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह एक लाभदायक स्थिति नहीं है।

अगर आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभाव उपस्थित नहीं है तो आप गलत कार्यों में काफी धन खर्च करेंगे। संभावना है कि आप काफी फिजुलखर्ची कर सकते हैं या आपको चिकित्सा हेतु भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। आप अपने जीवनकाल में कभी किसी भारी हानि का सामना कर सकते हैं - खासकर अपने उत्तरार्ध जीवन काल में।

वि० प्रा० - चूँकि इस भाग में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भविष्यफल देते समय, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के काल के भविष्यफल को नहीं दिया गया है।

जैमिनी चर दशा से भविष्यफल

मिथुन दशा (२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१०)

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में मिथुन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा।

तुला दशा (२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११)

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव तुला या वृश्चिक के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

कुम्भ दशा (२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१६)

वृष भुक्ति (२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४)

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५)

वर्तमान में आप मेष दशा में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव कुम्भ या मेष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

कर्क दशा (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०२८)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसा कि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का कारक है, इस दशा के दौरान आपके शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की प्रबल संभावना है। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे। यदि आप किसी दूसरे बौद्धिक क्षेत्रों में संलग्न हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें मैत्री कारक ग्रह उपस्थित है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। लेकिन जैसा कि यह ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है, यह एक संतुलित युति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चौथे भाव का स्वामी अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसा कि चौथे भाव का स्वामी शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पाँचवें भाव का स्वामी अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसा कि पाँचवें भाव का स्वामी यादश्त एवं योग्यता का मुख्य कारक है, यह एक लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें नौवें भाव का स्वामी ग्रह स्थित है। आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। जैसा कि नौवें भाव का स्वामी ऊँची शिक्षा का मुख्य कारक है, यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। बुध सामान्य और तकनीकी शिक्षा एवं सभी प्रकार की बौद्धिक क्षेत्रों का कारक है, यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी ग्रह दशा-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है। हालाँकि, यह ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है, फिर भी, यह काफी लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपके शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे। इन सभी मामलों में आप काफी बढ़िया करेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें लग्न से गिनती करने पर पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह दशा-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है। हालाँकि, यह ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है, फिर भी, यह काफी लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपके शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे। इन सभी मामलों में आप काफी बढ़िया करेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में आपके लग्न से पाँचवें भाव का स्वामी स्थित है। पाँचवाँ भाव ओहदा, पद आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में अमात्य कारक - सप्त कारक व्यवस्था के तहत - ग्रह स्थित है। अमात्य कारक ग्रह पेशा और पाँचवाँ भाव पद का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

बुध बौद्धिक शक्ति और व्यवसायिक सौदे का भी कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में बुध स्थित है। पाँचवाँ भाव पद का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

शनि नौकरी और औद्योगिक पेशे का प्राकृतिक कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसमें शनि स्थित है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में बढ़िया सफलता मिल सकती है। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिससे सूर्य केन्द्र में स्थित है, जबकि शुक्र त्रिकोण में स्थित है। यह काफी भाग्यशाली युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०२०)

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुरिकल में पड़ सकते हैं।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३

डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७)

वर्तमान में आप कन्या राशि के जैमिनी चर दशा में कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। शनि दशा-राशि में स्थित है और यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। केतु भुक्ति-राशि में स्थित है और यह तुंगस्थ नहीं है। समस्त युति काफी लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस दशा-भुक्ति के प्रारंभ के आस पास और/या इस दशा-भुक्ति के समाप्ति के आस पास आप अप्रत्याशित स्रोतों या अनजाने कारणों से उत्पन्न गंभीर मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। इसलिए आपको निर्देशित समय के दौरान काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

वृश्चिक दशा (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०३५)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जहाँ पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह स्थित है। अन्य चीजों के साथ, पाँचवाँ भाव ओहदा, पद आदि का भाव है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जहाँ आपका अमात्य कारक ग्रह (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) स्थित है। अमात्य कारक ग्रह पेशे के क्षेत्र में उन्नति का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी

प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारो तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

बुध बौद्धिक शगल और व्यवसायिक सौदे का भी कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसमें बुध स्थित है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारो तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह और अमात्य कारक ग्रह - सप्त कारक व्यवस्था के तहत - जिस राशि में एक साथ स्थित हैं, वर्तमान में आप उसी राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं। अमात्य कारक ग्रह रोजगार का शासक है, जबकि पाँचवें भाव का स्वामी पद का सूचक है। इसलिए, यह काफी भाग्यशाली युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारो तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से छठे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसा कि छठा भाव नौकरी और प्रतियोगिता सूचित करता है, यह कई मामलों में काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलेगी और आप किसी बड़ी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो सकते हैं। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका पद और पारिश्रमिक बढ़िया हो सकता है। जैसा कि छठा भाव शत्रु और रोग का सूचित करता है, आपके दुश्मन बिलकुल दबे होंगे, लेकिन आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपके लिए नए मार्ग खुले होंगे और आप काफी तेजी से आगे बढ़ेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गिनती करने पर पाँचवें भाव का स्वामी और दसवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं। दोनों लग्न से पाँचवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। जैसा कि दसवाँ भाव रोजगार और पाँचवाँ भाव पद सूचित करता है, यह एक लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, रोजगार अथवा व्यापार के क्षेत्र में आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपको कोई नयी नौकरी मिल सकती है, स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी बदल सकता है, जो पहले वाले से बेहतर होगा। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आप कोई नया व्यवसाय आरम्भ कर सकते हैं अथवा किसी नये फायदेमंद जगह पर जा सकते हैं।

आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह वृश्चिक राशि में स्थित है, दारा-पद राशि सिंह है, विवाह का प्राकृतिक कारक शुक्र वृश्चिक राशि में स्थित है और उप-पद राशि वृष है। इनमें से किसी राशि की दशा, इनमें से किसी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी राशि के अंतर के दौरान आपके विवाह की संभावना है। इन दशा-भुक्ति-अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर

दशा और त्रिकोण दशा निर्देशित की जा सकती है - आर बी एन एस विभाजन पद्धति के अनुसार। अंतर काल सिर्फ एक महीने के लिए होगा। मुहूर्त और गोचर को ध्यान के कारण कुछ दिनों का अंतर आगे-पीछे हो सकता है।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९)

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि छठे भाव का स्वामी सातवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। वे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या उन्हें शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और वृष राशि की भुक्ति (एक साल के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सातवें भाव का स्वामी या दारा-कारक ग्रह (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) - जिसमें से प्रत्येक किसी तरह विवाह का कारक है - दशा-राशि में स्थित है। इसके अलावा, दशा-राशि से सातवें भाव का स्वामी और भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं। ये आपके लग्न से सातवें भाव में बैठे हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, यदि आप बालिग हैं और अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। इसके अलावा आप किसी से व्यवसायिक समझौता कर सकते हैं जो कि आपके लिए काफी फायदेमंद होगा।

इस भुक्ति-काल के दौरान, वृश्चिक और वृष राशि का अंतर-काल एक महीने के लिए चलेगा। इन दोनों समयों के दौरान घटनाएँ होने की संभावना है।

वर्तमान में आप वृष दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृश्चिक या वृष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

[मिथुन भुक्ति \(२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१\)](#)

वर्तमान में आप मिथुन दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा।

[कर्क भुक्ति \(२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२\)](#)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और कर्क राशि की भुक्ति (एक साल के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सातवें भाव का स्वामी या दारा-कारक ग्रह (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) - जिसमें से प्रत्येक किसी तरह विवाह का कारक है - दशा-राशि में स्थित है। इसके अलावा, दशा-राशि से सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि से सातवें भाव में बैठा है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जबकि भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी दशा-राशि से सातवें भाव में बैठा है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, यदि आप बालिग हैं और अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। इसके अलावा आप किसी से व्यवसायिक समझौता कर सकते हैं जो कि आपके लिए काफी फायदेमंद होगा।

इस भुक्ति-काल के दौरान, वृश्चिक और कर्क राशि का अंतर-काल एक महीने के लिए चलेगा। इन दोनों समयों के दौरान घटनाएँ होने की संभावना है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और कर्क राशि की भुक्ति (एक साल के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सातवें भाव का स्वामी या दारा-कारक ग्रह (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) - जिसमें से प्रत्येक किसी तरह विवाह का कारक है - दशा-राशि में स्थित है। इसके अलावा, दशा-राशि से सातवें भाव का स्वामी और भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं। ये आपके लग्न से सातवें भाव में बैठे हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, यदि आप बालिग हैं और अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। इसके अलावा आप किसी से व्यवसायिक समझौता कर सकते हैं जो कि आपके लिए काफी फायदेमंद होगा।

इस भुक्ति-काल के दौरान, वृश्चिक और कर्क राशि का अंतर-काल एक महीने के लिए चलेगा। इन दोनों समयों के दौरान घटनाएँ होने की संभावना है।

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए

चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३)

वर्तमान में आप सिंह दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृश्चिक या सिंह के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और तुला राशि की भुक्ति (एक साल के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सातवें भाव का स्वामी या दारा-कारक ग्रह (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) - जिसमें से प्रत्येक किसी तरह विवाह का कारक है - दशा-राशि में स्थित है। इसके अलावा, दशा-राशि से सातवें भाव का स्वामी और भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं। ये आपके लग्न से सातवें भाव में बैठे हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, यदि आप बालिग हैं और अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। इसके अलावा आप किसी से व्यवसायिक समझौता कर सकते हैं जो कि आपके लिए काफी फायदेमंद होगा।

इस भुक्ति-काल के दौरान, वृश्चिक और तुला राशि का अंतर-काल एक महीने के लिए चलेगा। इन दोनों समयों के दौरान घटनाएँ होने की संभावना है।

वर्तमान में आप तुला दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृश्चिक या तुला के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

मीन दशा (२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०४०)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जो कि आपके लग्न से दसवें भाव की राशि के अनुकूल है। दसवाँ भाव पेशा, विश्वसनीयता, सम्मान आदि का भाव है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है। अन्य चीजों के साथ पाँचवें भाव का स्वामी पद, प्रतिष्ठा आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

शनि नौकरी और औद्योगिक पेशे का प्राकृतिक कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में शनि स्थित है। पाँचवाँ भाव पद का सूचक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप मीन राशि के दशा-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त है (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है)। यह एक प्रतिकूल संकेत है। इस दशा के दौरान, आपको तगड़ा बुखार अथवा आँखों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अपने पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या कुछ सरकारी कर्मचारियों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं।

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७ \)](#)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा।

[धनु भुक्ति \(२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८ \)](#)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

सिंह दशा (२६:१०:२०४० से २६:१०:२०५०)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है। अन्य चीजों के साथ पाँचवें भाव का स्वामी पद, प्रतिष्ठा आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१)

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें तुला राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (या यह आपके लग्न से सातवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अलावा, दशा-राशि का स्वामी दशा-राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अंतर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं तो संभावना है कि इस दशा-काल में आपका विवाह हो सकता है।

भुक्ति-राशि का स्वामी दशा-राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (या यह दशा-राशि से सातवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अलावा, भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जबकि भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (या दशा-राशि से सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा-राशि और भुक्ति-राशि के बीच शांतिमय आंतरिक संबंध बनने के कारण संभावना है कि आप इस भुक्ति-काल के दौरान विवाह कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में सिंह भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव सिंह या वृश्चिक के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४)

वर्तमान में आप मकर दशा में सिंह भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर धक्का लग सकता है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप छोड़ने पर बाध्य हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपको भारी हानि उठानी पड़ सकती है। आपको अपना निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है या किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७)

वर्तमान में आप मेष दशा में सिंह भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव सिंह या मेष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

धनु दशा (२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५२)

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं जिसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है। अन्य चीजों के साथ पाँचवें भाव का स्वामी पद, प्रतिष्ठा आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से आठवें भाव में दो या अधिक अशुभ ग्रह स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसा कि आठवाँ भाव गंभीर समस्याओं और कठिनाईयों को सूचित करता है, यह एक लाभदायक युति नहीं है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी आमदनी आपके प्रयासों या उम्मीदों के अनुकूल नहीं हो सकती है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों एवं सरकारी कर्मचारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है और भयानक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक से नहीं होगा और आपको अपना पद बनाए रखने में मुश्किलें हो सकती हैं। लेकिन आपको कुछ लोगों का सहयोग मिल सकता है जो निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ लाभदायक नहीं होंगी और यह काफी मंदा हो सकता है। धन की कमी की वजह से आप अपने वादों को निभाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

वर्तमान में आप धनु राशि के दशा-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त है (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है)। यह एक प्रतिकूल संकेत है। इस दशा के दौरान, आपको तगड़ा बुखार अथवा आँखों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अपने पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या कुछ सरकारी कर्मचारियों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं।

मेष दशा (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०६४)

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से छठे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसा कि छठा भाव नौकरी और प्रतियोगिता सूचित करता है, यह कई मामलों में काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलेगी और आप किसी बड़ी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो सकते हैं। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका पद और पारिश्रमिक बढ़िया हो सकता है। जैसा कि छठा भाव शत्रु और रोग का सूचित करता है, आपके दुश्मन बिलकुल दबे होंगे, लेकिन आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपके लिए नए मार्ग खुले होंगे और आप काफी तेजी से आगे बढ़ेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४)

वर्तमान में आप वृष दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या वृष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सक

ता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६)

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७)

वर्तमान में आप सिंह दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या सिंह के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप सिंह दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल

रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९)

वर्तमान में आप तुला दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या तुला के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी

भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि छठे भाव का स्वामी सातवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। वे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या उन्हें शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

वर्तमान में आप मकर दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि छठे भाव का स्वामी सातवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। वे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या उन्हें शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पॉचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफ़ी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या कुम्भ के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

कन्या दशा (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६६)

मकर दशा (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७६)

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९)

वर्तमान में आप वृष दशा में मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर धक्का लग सकता है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप छोड़ने पर बाध्य हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपको भारी हानि उठानी पड़ सकती है। आपको अपना निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है या किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३)

वर्तमान में आप मकर राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३

डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

वृष दशा (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०८६)

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृष या वृश्चिक के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७८)

वर्तमान में आप तुला दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०८०)

वर्तमान में आप सिंह दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३)

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४)

वर्तमान में आप मेष दशा में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृष या मेष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वि० प्रा० - चूँकि इस भाग में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भविष्यफल देते समय, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के काल के भविष्यफल को नहीं दिया गया है।

जैमिनी त्रिकोन दशा से भविष्यफल

तुला दशा (२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६)

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में तुला भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव तुला या वृश्चिक के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

कुम्भ दशा (२६:१०:२००६ से २६:१०:२०११)

वृष भुक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२००६)

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

मेष भुक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२०१०)

वर्तमान में आप मेष दशा में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव कुम्भ या मेष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कुम्भ भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

[मीन भुक्ति \(२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११\)](#)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

[मिथुन दशा \(२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१६\)](#)

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२\)](#)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में मिथुन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा।

वृश्चिक दशा (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०२३)

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें बुध स्थित है। लेकिन यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। जैसा कि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का कारक है, इस दशा के दौरान आपके शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की प्रबल संभावना है। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे। यदि आप किसी दूसरे बौद्धिक क्षेत्रों में संलग्न हैं तो आपको आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मंत्री कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया युति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें चौथे भाव का स्वामी ग्रह स्थित है। आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। जैसा कि चौथे भाव का स्वामी शिक्षा का मुख्य कारक है, फिर भी यह काफी लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह स्थित है। आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव का स्वामी शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। जैसा कि पाँचवें भाव का स्वामी यादश्त एवं योग्यता का मुख्य कारक है, यह काफी लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नौवें भाव का स्वामी ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसा कि नौवें भाव का स्वामी ऊँची शिक्षा का कारक है, यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। जैसा कि ग्यारहवें भाव का स्वामी कामनाओं की पूर्ति एवं महत्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको लाभदायक फल की प्राप्ति होगी। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें राशि से गिनती करने पर पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है। हालाँकि, यह ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली नहीं है, क्योंकि यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है, फिर भी, यह काफी लाभदायक स्थिति है।

इस दशा के दौरान, आपके शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति होगी। इसके अलावा, आप अपनी अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रखेंगे। इन सभी मामलों में आप काफी बढ़िया करेंगे।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जहाँ पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह स्थित है। अन्य चीजों के साथ, पाँचवाँ भाव ओहदा, पद आदि का भाव है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जहाँ आपका अमात्य कारक ग्रह (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) स्थित है। अमात्य कारक ग्रह पेशे के क्षेत्र में उन्नति का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

बुध बौद्धिक शक्ति और व्यवसायिक सौदे का भी कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसमें बुध स्थित है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह और अमात्य कारक ग्रह - सप्त कारक व्यवस्था के तहत - जिस राशि में एक साथ स्थित हैं, वर्तमान में आप उसी राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं। अमात्य कारक ग्रह रोजगार का शासक है, जबकि पाँचवें भाव का स्वामी पद का सूचक है। इसलिए, यह काफी भाग्यशाली युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप जिस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से छठे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसा कि छठा भाव नौकरी और प्रतियोगिता सूचित करता है, यह कई मामलों में काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलेगी और आप किसी बड़ी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो सकते हैं। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका पद और पारिश्रमिक बढ़िया हो सकता है। जैसा कि छठा भाव शत्रु और रोग का सूचित करता है, आपके दुश्मन बिलकुल दबे होंगे, लेकिन आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपके लिए नए मार्ग खुले होंगे और आप काफी तेजी से आगे बढ़ेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गिनती करने पर पाँचवें भाव का स्वामी और दसवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं। दोनों लग्न से पाँचवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। जैसा कि दसवाँ भाव रोजगार और पाँचवाँ भाव पद सूचित करता है, यह एक लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, रोजगार अथवा व्यापार के क्षेत्र में आपकी स्थिति में सुधार हो सकता है। आपको कोई नयी नौकरी मिल सकती है, स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका निवास स्थान भी बदल सकता है, जो पहले वाले से बेहतर होगा। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आप कोई नया व्यवसाय आरम्भ कर सकते हैं अथवा किसी नये फायदेमंद जगह पर जा सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७)

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण

हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि छठे भाव का स्वामी सातवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। वे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या उन्हें शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८)

वर्तमान में आप वृष दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृश्चिक या वृष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९)

वर्तमान में आप मिथुन दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०२०)

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१)

वर्तमान में आप सिंह दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृश्चिक या सिंह के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३)

वर्तमान में आप तुला दशा में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल

सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृश्चिक या तुला के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

मीन दशा (२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२८)

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जो कि आपके लग्न से दसवें भाव की राशि के अनुकूल है। दसवाँ भाव पेशा, विश्वसनीयता, सम्मान आदि का भाव है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है। अन्य चीजों के साथ पाँचवें भाव का स्वामी पद, प्रतिष्ठा आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

शनि नौकरी और औद्योगिक पेशे का प्राकृतिक कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में शनि स्थित है। पाँचवाँ भाव पद का सूचक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप मीन राशि के दशा-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त है (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है)। यह एक प्रतिकूल संकेत है। इस दशा के दौरान, आपको तगड़ा बुखार अथवा आँखों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अपने पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या कुछ सरकारी कर्मचारियों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

कर्क दशा (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०४०)

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में आपके लग्न से पाँचवें भाव का स्वामी स्थित है। पाँचवाँ भाव ओहदा, पद आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में अमात्य कारक - सप्त कारक व्यवस्था के तहत - ग्रह स्थित है। अमात्य कारक ग्रह पेशा और पाँचवाँ भाव पद का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

बुध बौद्धिक शक्ति और व्यवसायिक सौदे का भी कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसके पाँचवें भाव में बुध स्थित है। पाँचवाँ भाव पद का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

शनि नौकरी और औद्योगिक पेशे का प्राकृतिक कारक है। वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसमें

रानि स्थित है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में बढ़िया सफलता मिल सकती है। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिससे सूर्य केन्द्र में स्थित है, जबकि शुक्र त्रिकोण में स्थित है। यह काफी भाग्यशाली युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२)

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित

धित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९)

वर्तमान में आप कन्या राशि के जैमिनी त्रिकोन दशा में कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। शनि दशा-राशि में स्थित है और यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। केतु भुक्ति-राशि में स्थित है और यह तुंगस्थ नहीं है। समस्त युति का फी लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस दशा-भुक्ति के प्रारंभ के आस पास और/या इस दशा-भुक्ति के समाप्ति के आस पास आप अप्रत्याशित स्रोतों या अनजाने कारणों से उत्पन्न गंभीर मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। इसलिए आपको निर्देशित समय के दौरान काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

धनु दशा (२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४२)

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसका स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है। अन्य चीजों के साथ पाँचवें भाव का स्वामी पद, प्रतिष्ठा आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वर्तमान में आप जिस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से आठवें भाव में दो या अधिक अशुभ ग्रह स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसा कि आठवाँ भाव गंभीर समस्याओं और कठिनाईयों को सूचित करता है, यह एक लाभदायक युति नहीं है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी आमदनी आपके प्रयासों या उम्मीदों के अनुकूल नहीं हो सकती है। आपको अपने वरिष्ठ अधिकारियों एवं सरकारी कर्मचारियों का कोपभाजन बनना पड़ सकता है और भयानक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक से नहीं होगा और आपको अपना पद बनाए रखने में मुश्किलें हो सकती हैं। लेकिन आपको कुछ लोगों का सहयोग मिल सकता है जो निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ लाभदायक नहीं होंगी और यह काफी मंदा हो सकता है। धन की कमी की वजह से आप अपने वादों को निभाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

वर्तमान में आप धनु राशि के दशा-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त है (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है)। यह एक प्रतिकूल संकेत है। इस दशा के दौरान, आपको तगड़ा बुखार अथवा आँखों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अपने पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोजक को अप्रसन्न कर सकते हैं या कुछ सरकारी कर्मचारियों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं।

मेष दशा (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०५४)

वर्तमान में आप जिस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से छठे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह आपकी जन्मकुण्डली में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसा कि छठा भाव नौकरी और प्रतियोगिता सूचित करता है, यह कई मामलों में काफी लाभदायक युति है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलेगी और आप किसी बड़ी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो सकते हैं। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका पद और पारिश्रमिक बढ़िया हो सकता है। जैसा कि छठा भाव शत्रु और रोग का सूचित करता है, आपके दुश्मन बिलकुल दबे होंगे, लेकिन आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपके लिए नए मार्ग खुले होंगे और आप काफी तेजी से आगे बढ़ेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४)

वर्तमान में आप वृष दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल

सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या वृष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप वृष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६)

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कर्क दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७)

वर्तमान में आप सिंह दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या सिंह के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप सिंह दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९)

वर्तमान में आप तुला दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या तुला के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि छठे भाव का स्वामी सातवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। वे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या उन्हें शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुरिकल में पड़ सकते हैं।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२)

वर्तमान में आप मकर दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर छठे भाव का स्वामी या दूसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि छठे भाव का स्वामी सातवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है। वे किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या उन्हें शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पॉचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव मेष या कुम्भ के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

सिंह दशा (२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०६४)

वर्तमान में आप उस राशि की त्रिकोन दशा से गुजर रहे हैं जिसका स्वामी आपके लग्न से पॉचवें भाव में स्थित है। अन्य चीजों के साथ पॉचवें भाव का स्वामी पद, प्रतिष्ठा आदि का शासक है।

इस दशा के दौरान, आपको रोजगार के क्षेत्र में काफी सफलता मिलेगी। आपको कोई नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है या किसी प्रतिष्ठित पद पर आपकी पदोन्नति हो सकती है या आपका तबादला हो सकता है। आपका नाम और यश चारों तरफ फैलेगा और सामान्य लोग आपका काफी आदर करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो परिस्थितियाँ काफी लाभदायक होंगी और आपकी आमदनी में वृद्धि होगी।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में सिंह भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव सिंह या वृश्चिक के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८)

वर्तमान में आप मकर दशा में सिंह भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर धक्का लग सकता है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप छोड़ने पर बाध्य हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपको भारी हानि उठानी पड़ सकती है। आपको अपना निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है या किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०६०)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या

फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुरिकल में पड़ सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

वर्तमान में आप मेष दशा में सिंह भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव सिंह या मेष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

मकर दशा (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०७४)

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

वर्तमान में आप वृष दशा में मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दशा-राशि से गिनती करने पर आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति-राशि से गिनती करने पर भी आठवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर धक्का लग सकता है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप छोड़ने पर बाध्य हो सकते हैं। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं तो आपको भारी हानि उठानी पड़ सकती है। आपको अपना निवास स्थान छोड़ना पड़ सकता है या किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुरिकल में पड़ सकते हैं।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१)

वर्तमान में आप मकर राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२)

वर्तमान में आप धनु राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुश्किल में पड़ सकते हैं।

वृष दशा (२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०८४)

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृष या वृश्चिक के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का

कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६)

वर्तमान में आप तुला दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७८)

वर्तमान में आप सिंह दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर चौथे भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि आठवें भाव का स्वामी नौवें भाव से बारहवें भाव में स्थित है और चौथे भाव का स्वामी नौवें भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपके पिता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१)

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२)

वर्तमान में आप मेष दशा में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्न से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपके लग्न से गिनती करने पर भी दसवें भाव का स्वामी आपकी भुक्ति-राशि से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। समस्त युति काफी लाभदायक है। इस अवधि के दौरान - जो कि एक साल चलेगा - आपकी लाभप्रद पदोन्नति हो सकती है या नई नौकरी मिल सकती है। आपके रहन-सहन का स्तर सुधरेगा और संतोष बढ़ेगा। संभावना है कि ये बदलाव वृष या मेष के अंतर-काल के दौरान हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक केवल एक महीने के लिए चलेगा।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी या आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। आपका स्वास्थ्य और कुशलता आपके परिवार लिए चिंता का कारण हो सकता है। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या आपको शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३)

वर्तमान में आप मीन राशि के भुक्ति-काल से गुजर रहे हैं, जिसका राशि स्वामी आपकी कुण्डली में बुरी तरह अस्त (सूर्य से ३ डिग्री २० मि० के अंदर स्थित है) है। यह एक प्रतिकूल युति है। इस भुक्ति-काल के दौरान आप तीव्र बुखार, आँखों से संबंधित समस्याएँ आदि से पीड़ित हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके पिता के साथ आपका संबंध तनावपूर्ण हो सकता है। या फिर, आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या नियोक्ता को अप्रसन्न कर सकते हैं या किसी सरकारी अधिकारी के साथ मुरिकल में पड़ सकते हैं।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा (जो कि एक साल चलेगा) में वृष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, आपके लग्न से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके दशा-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और आपके भुक्ति-राशि से गिनती करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी या तीसरे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। प्रतिकूल पारस्परिक संबंध बन रहा है। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव से बारहवें भाव में स्थित है और ग्यारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव से आठवें भाव में स्थित है, आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपके लिए चिंता का कारण हो सकता है या फिर, संपत्ति की हानि हो सकती है।

कन्या दशा (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८६)

वि० प्रा० - चूँकि इस भाग में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भविष्यफल देते समय, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के काल के भविष्यफल को नहीं दिया गया है।

जैमिनी मंडूक दशा से भविष्यफल

तुला दशा (२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१२)

वर्तमान में आप तुला राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए शुभ अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। इस दशा के दौरान आपमें कुछ लाभदायक बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की काफी संभावना है।

वर्तमान में आप तुला राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला है। यह दशा राशि में स्थित है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप कम दूरियों की कई यात्राएँ कर सकते हैं या आपका पेशा कुछ निरंतर यात्राओं से संबंधित हो सकता है। आप कई बार नौकरी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी कम दूरी पर स्थान्तरित हो सकता है। कुछ उपयोगी लेखन में भी आपकी काफी दिलचस्पी हो सकती है। आप कोई लेख लिख सकते हैं और आपका योगदान किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है। इस दशा की अवधि के दौरान आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपको चिंतित कर सकता है।

वर्तमान में आप तुला राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं, जो आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव के स्वामी ग्रह के अधीन है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई उँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

आपकी कुण्डली में प्रतिकूल फलों का वर्णन करने के लिए महत्वपूर्ण राशियाँ लग्न से आठवें भाव की राशि, आठवें भाव के स्वामी की शासित राशि, हर-ग्रह की शासित राशि, राहु की शासित राशि, केतु की शासित राशि है। ये राशियाँ क्रमशः मकर, कर्क, मेष, मीन, और कन्या हैं। इनमें से किसी भी राशि की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान हम उन राशियों की स्थिति की जाँच करेंगे कि क्या कहीं कोई अप्रिय घटना घटने की संभावना है।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९)

वर्तमान में आप तुला राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२००९ से २६:१०:२०१०)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कुम्भ दशा (२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०२०)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०२०)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मिथुन दशा (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२६)

वर्तमान में आप मिथुन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१\)](#)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

[कन्या भुक्ति \(२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३\)](#)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक वाट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

[सिंह भुक्ति \(२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४\)](#)

वर्तमान में आप मिथुन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक आवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९)

वर्तमान में आप मिथुन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और

आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वृश्चिक दशा (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०३७)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि बारहवें भाव का स्वामी ग्रह इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी बहुत बढ़िया नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है, आपके संबंधी सहायक नहीं हो सकते हैं और आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि अमात्य कारक ग्रह (सप्त-कारक व्यवस्था के तहत) इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही शुभ प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बढ़िया हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। पेशे से आपकी आमदनी बढ़ेगी और कुछ दूसरे स्रोतों से भी आपको लाभ हो सकता है। आपको नए मौके मिल सकते हैं और इस दशा के दौरान कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत अधिक है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई उँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०३७)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता

है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७)

वर्तमान में आप मकर राशि की मंडूक दशा से गुजर रहे हैं, जबकि वृश्चिक राशि की भुक्ति चल रही है। यह संयुक्त समय - एक साल का - काफी समस्यापूर्ण होगा।

यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपके कार्य स्थल पर परिस्थितियाँ काफी बिगड़ सकती हैं। आपकी आमदनी कम हो सकती है और आपको अपनी जरूरतें पूरी करने में कठिनाईयों हो सकती हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं और अप्रत्याशित घटनाओं की वजह से आपको अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है। संभावना है कि आप असमाजिक तत्वों के साथ संबंध बना सकते हैं और/या पुलिस से आपको परेशानी हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मीन दशा (२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०४६)

वर्तमान में आप मीन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मीन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएंगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप मीन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं - जो पेशे के क्षेत्र में उन्नति के लिए काफी लाभदायक है। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी मीन राशि में स्थित है। इसलिए मीन राशि के भूक्ति काल के दौरान - जो सिर्फ एक वर्ष चलता है, और जब यह भूक्ति काल चलता है, तो मीन राशि के अंतर काल के दौरान - जो केवल एक महीना चलेगा - आप आत्मविश्वासपूर्वक समस्त पद/प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण वृद्धि के बारे में सोच सकते हैं।

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९\)](#)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

[धनु भुक्ति \(२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०\)](#)

वर्तमान में आप मीन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएंगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

[मकर भुक्ति \(२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१\)](#)

वर्तमान में आप मीन दशा की मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

[कुम्भ भुक्ति \(२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२\)](#)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबरारा हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का

े पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३)

वर्तमान में आप मीन राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप मीन दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क दशा (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०५३)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि लग्न से आठवें भाव का स्वामी इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर नौवें भाव का स्वामी ग्रह शनि है। यह दशा राशि में स्थित है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप लंबी दूरियों की कई यात्राएँ कर सकते हैं या आपका पेशा कुछ निरंतर यात्राओं से संबंधित हो सकता है। आप कई बार नौकरी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी कम से कम एक बार लंबी दूरी पर तथा कई बार कम दूरी पर स्थान्तरित हो सकता है। कुछ उपयोगी लेखन में भी आपकी काफी दिलचस्पी हो सकती है। आप कोई लेख लिख सकते हैं और आपका योगदान किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कर्क राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९)

आपकी जन्मकुण्डली में रानि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०)

आपकी जन्मकुण्डली में सू० प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कर्क दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप कर्क दशा की मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२)

आपकी जन्मकुण्डली में रानि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ

घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रुकावटों के पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३)

वर्तमान में आप कर्क दशा की मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

धनु दशा (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०६२)

वर्तमान में आप धनु राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप धनु राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप धनु राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं - जो पेशे के क्षेत्र में उन्नति के लिए काफी लाभदायक है। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी मीन राशि में स्थित है। इसलिए मीन राशि के भूक्ति काल के दौरान - जो सिर्फ एक वर्ष चलता है, और जब यह भूक्ति काल चलता है, तो मीन राशि के अंतर काल के दौरान - जो केवल एक महीना चलेगा - आप आत्मविश्वासपूर्वक समस्त पद/प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण वृद्धि के बारे में सोच सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६)

वर्तमान में आप धनु राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८)

आपकी जन्मकुण्डली में रानि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९)

वर्तमान में आप धनु राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष दशा (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६६)

वर्तमान में आप मेष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मेष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि छठे भाव का स्वामी ग्रह इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी बहुत बढ़िया नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है, आपके संबंधी सहायक नहीं हो सकते हैं और आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मेष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्रह इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही शुभ प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बढ़िया हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। पेशे से आपकी आमदनी बढ़ेगी और कुछ दूसरे स्रोतों से भी आपको लाभ हो सकता है। आपको नए मौके मिल सकते हैं और इस दशा के दौरान कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत अधिक है।

वर्तमान में आप मेष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी

भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह मेष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

आपकी जन्मकुण्डली में सू० प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मेष दशा की कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय

मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है ।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

वर्तमान में आप मेष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं । दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है । जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है ।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी । आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी । आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे ।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं । आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है । संकेत प्रतिकूल हैं । यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं । आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए । इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं । आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए ।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं । जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है ।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है । आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं । इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है ।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं । आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है । संकेत प्रतिकूल हैं । यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं । आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए । इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं ।

वर्तमान में आप मेष दशा की कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं । दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं । यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है । यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है ।

सिंह दशा (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७७)

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए शुभ अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। इस दशा के दौरान आपमें कुछ लाभदायक बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की काफी संभावना है।

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं - जो पेशे के क्षेत्र में उन्नति के लिए काफी लाभदायक है। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी मीन राशि में स्थित है। इसलिए मीन राशि के भूक्ति काल के दौरान - जो सिर्फ एक वर्ष चलता है, और जब यह भूक्ति काल चलता है, तो मीन राशि के अंतर काल के दौरान - जो केवल एक महीना चलेगा - आप आत्मविश्वासपूर्वक समस्त पद/प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण वृद्धि के बारे में सोच सकते हैं।

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं, जो आपके लग्न से गिनती करने पर तीसरे भाव के स्वामी ग्रह के अधीन है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप कम दूरियों की कई यात्राएँ कर सकते हैं या आपका पेशा कुछ निरंतर यात्राओं से संबंधित

हो सकता है। आप कई बार नौकरी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी कम दूरी पर स्थान्तरित हो सकता है। कुछ उपयोगी लेखन में भी आपकी काफी दिलचस्पी हो सकती है। आप कोई लेख लिख सकते हैं और आपका योगदान किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२)

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का

े पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५)

वर्तमान में आप सिंह राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मकर दशा (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०८४)

वर्तमान में आप मकर राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए शुभ अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। इस दशा के दौरान आपमें कुछ लाभदायक बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की काफी संभावना है।

वर्तमान में आप मकर राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मकर राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जबकि राशि-स्वामी शनि कुण्डली में ठीक से स्थित नहीं है (यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है)।

इस दशा की अवधि के दौरान आपको कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और कुछ कठिनाईयाँ महसूस कर सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीं है, तो किसी अप्रत्याशित घटना की वजह से आपको अचानक अपना स्थान बदलना पड़ सकता है। आपके कार्यस्थल पर स्थितियाँ कुछ हद तक बिगड़ सकती हैं, आपके शत्रु आपके लिए कठिनाईयाँ पैदा कर सकते हैं। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या किसी अन्य अधिकारी के साथ किसी गहरी मुसीबत में भी फँस सकते हैं। दशा के प्रारंभिक समय, बीच का समय और अंत समय के आस-पास आपमें कुछ महत्वपूर्ण बदलाव आ सकते हैं।

वर्तमान में आप मकर राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह मकर राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७८)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मकर दशा की कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०८०)

वर्तमान में आप लग्न से आठवें भाव की राशि से मेल खाती हुई राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि दशा राशि चर राशि है, इसमें सात भुक्ति है जिसमें प्रत्येक की अवधि एक वर्ष की है। इस दशा-भुक्ति काल के दौरान दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी और भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं या एक-दूसरे पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह लाभदायक युति नहीं है।

इस मंडूक दशा-भुक्ति काल के दौरान आपको कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ गंभीर मुसीबत में फँस सकते हैं। संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपको अपने पेशे में तात्कालिक धक्का लग सकता है, आर्थिक परेशानियों से गुजर सकते हैं, तथा आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप मकर दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२)

वर्तमान में आप मकर राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप मकर दशा की मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३)

वर्तमान में आप लग्न से आठवें भाव की राशि से मेल खाती हुई राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि दशा राशि चर राशि है, इसमें सात भुक्ति है जिसमें प्रत्येक की अवधि एक वर्ष की है। इस दशा-भुक्ति काल के दौरान भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

इस मंडूक दशा-भुक्ति काल के दौरान आपको कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने वरिष्ठ अधिकारी के साथ गंभीर मुसीबत में फँस सकते हैं। संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपको अपने पेशे में तात्कालिक धक्का लग सकता है, आर्थिक परेशानियों से गुजर सकते हैं, तथा आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

वृष दशा (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०६२)

वर्तमान में आप वृष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप वृष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं, जो आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव के स्वामी ग्रह के अधीन है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई उँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८७)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८)

वर्तमान में आप वृष राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक

वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या दशा (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२१०१)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक

।वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक ।वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

वर्तमान में आप कर्क राशि के मंडूक भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। केतु इस राशि में स्थित है। इस दशा में आप कन्या राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। शनि इस राशि में स्थित है। यह संयुक्त समय - एक साल का - काफी समस्यापूर्ण होगा।

यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपके कार्य स्थल पर परिस्थितियाँ काफी बिगड़ सकती हैं। आपकी आमदनी कम हो सकती है और आपको अपनी जरूरतें पूरी करने में कठिनाईयों हो सकती हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं और अप्रत्याशित घटनाओं की वजह से आपको अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है। संभावना है कि आप असमाजिक

तत्वों के साथ संबंध बना सकते हैं और/या पुलिस से आपको परेशानी हो सकती है।

वर्तमान में आप कन्या दशा की कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२१००)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कन्या दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१)

वर्तमान में आप कन्या राशि के मंडूक दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएंगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप कन्या दशा की मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वि० प्रा० - चूँकि इस भाग में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भविष्यफल देते समय, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के काल के भविष्यफल को नहीं दिया गया है।

जैमिनी त्रिकूट दशा से भविष्यफल

धनु दशा (२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१४)

वर्तमान में आप धनु राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप धनु राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप धनु राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं - जो पेशे के क्षेत्र में उन्नति के लिए काफी लाभदायक है। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी मीन राशि में स्थित है। इसलिए मीन राशि के भूक्ति काल के दौरान - जो सिर्फ एक वर्ष चलता है, और जब यह भूक्ति काल चलता है, तो मीन राशि के अंतर काल के दौरान - जो केवल एक महीना चलेगा - आप आत्मविश्वासपूर्वक समस्त पद/प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण वृद्धि के बारे में सोच सकते हैं।

आपकी कुण्डली में प्रतिकूल फलों का वर्णन करने के लिए महत्वपूर्ण राशियाँ लग्न से आठवें भाव की राशि, आठवें भाव के स्वामी की शासित राशि, हर-ग्रह की शासित राशि, राहु की शासित राशि, केतु की शासित राशि है। ये राशियाँ क्रमशः मकर, कर्क, मेष, मीन, और कन्या हैं। इनमें से किसी भी राशि की दशा/भूक्ति/अंतर के दौरान हम उन राशियों की स्थिति की जाँच करेंगे कि क्या कहीं कोई अप्रिय घटना घटने की संभावना है।

वृश्चिक भूक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

धनु भूक्ति (२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८)

वर्तमान में आप धनु राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२०१०)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११)

वर्तमान में आप धनु राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मिथुन दशा (२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०२३)

वर्तमान में आप मिथुन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मिथुन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सक

ते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८)

वर्तमान में आप मिथुन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३)

वर्तमान में आप मिथुन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है

और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मकर दशा (२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०३०)

वर्तमान में आप मकर राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए शुभ अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। इस दशा के दौरान आपमें कुछ लाभदायक बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की काफी संभावना है।

वर्तमान में आप मकर राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मकर राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जबकि राशि-स्वामी शनि कुण्डली में ठीक से स्थित नहीं है (यह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है)।

इस दशा की अवधि के दौरान आपको कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और कुछ कठिनाईयाँ महसूस कर सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह युति उपस्थित नहीं है, तो किसी अप्रत्याशित घटना की वजह से आपको अचानक अपना स्थान बदलना पड़ सकता है। आपके कार्यस्थल पर स्थितियाँ कुछ हद तक बिगड़ सकती हैं, आपके शत्रु आपके लिए कठिनाईयाँ पैदा कर सकते हैं। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों या किसी अन्य अधिकारी के साथ किसी गहरी मुसीबत में भी फँस सकते हैं। दशा के प्रारंभिक समय, बीच का समय और अंत समय के आस-पास आपमें कुछ महत्वपूर्ण बदलाव आ सकते हैं।

वर्तमान में आप मकर राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह मकर राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक वाट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मकर दशा की कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६)

वर्तमान में आप लग्न से आठवें भाव की राशि से मेल खाती हुई राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि दशा राशि चर राशि है, इसमें सात भुक्ति है जिसमें प्रत्येक की अवधि एक वर्ष की है। इस दशा-भुक्ति काल के दौरान दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी और भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी एक साथ स्थित हैं या एक-दूसरे पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह लाभदायक युति नहीं है।

इस त्रिकूट दशा-भुक्ति काल के दौरान आपको कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ गंभीर मुसीबत में फँस सकते हैं। संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपको अपने पेशे में तात्कालिक धक्का लग सकता है, आर्थिक परेशानियों से गुजर सकते हैं, तथा आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप मकर दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८)

वर्तमान में आप मकर राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप मकर दशा की मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९)

वर्तमान में आप लग्न से आठवें भाव की राशि से मेल खाती हुई राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि दशा राशि चर राशि है, इसमें सात भुक्ति है जिसमें प्रत्येक की अवधि एक वर्ष की है। इस दशा-भुक्ति काल के दौरान भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

इस त्रिकूट दशा-भुक्ति काल के दौरान आपको कई गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने वरिष्ठ अधिकारी के साथ गंभीर मुसीबत में फँस सकते हैं। संभावना है कि इस अवधि के दौरान आपको अपने पेशे में तात्कालिक धक्का लग सकता है, आर्थिक परेशानियों से गुजर सकते हैं, तथा आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

कर्क दशा (२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा

प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-ठक की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि लग्न से आठवें भाव का स्वामी इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-ठक की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर नौवें भाव का स्वामी ग्रह शनि है। यह दशा राशि में स्थित है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप लंबी दूरियों की कई यात्राएँ कर सकते हैं या आपका पेशा कुछ निरंतर यात्राओं से संबंधित हो सकता है। आप कई बार नौकरी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी कम से कम एक बार लंबी दूरी पर तथा कई बार कम दूरी पर स्थान्तरित हो सकता है। कुछ उपयोगी लेखन में भी आपकी काफी दिलचस्पी हो सकती है। आप कोई लेख लिख सकते हैं और आपका योगदान किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कर्क राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कर्क दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप कर्क दशा की मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है।

संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७)

वर्तमान में आप कर्क दशा की मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

कुम्भ दशा (२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०४५)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०४०)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

सिंह दशा (२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०५३)

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए शुभ अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। इस दशा के दौरान आपमें कुछ लाभदायक बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की काफी संभावना है।

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं - जो पेशे के क्षेत्र में उन्नति के लिए काफी लाभदायक है। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी मीन राशि में स्थित है। इसलिए मीन राशि के भूक्ति काल के दौरान - जो सिर्फ एक वर्ष चलता है, और जब यह भूक्ति काल चलता है, तो मीन राशि के अंतर काल के दौरान - जो केवल एक महीना चलेगा - आप आत्मविश्वासपूर्वक समस्त पद/प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण वृद्धि के बारे में सोच सकते हैं।

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं, जो आपके लग्न से गिनती करने पर तीसरे भाव के स्वामी ग्रह के अधीन है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप कम दूरियों की कई यात्राएँ कर सकते हैं या आपका पेशा कुछ निरंतर यात्राओं से संबंधित हो सकता है। आप कई बार नौकरी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी कम दूरी पर स्थान्तरित हो सकता है। कुछ उपयोगी लेखन में भी आपकी काफी दिलचस्पी हो सकती है। आप कोई लेख लिख सकते हैं और आपका योगदान किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८)

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०५०)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का सामना करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१)

वर्तमान में आप सिंह राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएंगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मीन दशा (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०६२)

वर्तमान में आप मीन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मीन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएंगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप मीन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं - जो पेशे के क्षेत्र में उन्नति के लिए काफी लाभदायक है। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी मीन राशि में स्थित है। इसलिए मीन राशि के भूक्ति काल के दौरान - जो सिर्फ एक वर्ष चलता है, और जब यह भूक्ति काल चलता है, तो मीन राशि के अंतर काल के दौरान - जो केवल एक महीना चलेगा - आप आत्मविश्वासपूर्वक समस्त पद/प्रतिष्ठा में महत्वपूर्ण वृद्धि के बारे में सोच सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६)

वर्तमान में आप मीन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७)

वर्तमान में आप मीन दशा की मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह कुम्भ राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, केतु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। यदि आप किसी रोजगार में संलग्न हैं तो आपको कई बाधाओं और रूकावटों का पार करना पड़ सकता है। रोजगार से आपकी आमदनी भी कम हो सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९)

वर्तमान में आप मीन राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है

और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०६०)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप मीन दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या दशा (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०७१)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता

है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएंगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेने-देने से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-वट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। केतु इस राशि में स्थित है। इस दशा में आप कन्या राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। शनि इस राशि में स्थित है। यह संयुक्त समय - एक साल का - काफी समस्यापूर्ण होगा।

यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपके कार्य स्थल पर परिस्थितियाँ काफी बिगड़ सकती हैं। आपकी आमदनी कम हो सकती है और आपको अपनी जरूरतें पूरी करने में कठिनाईयाँ हो सकती हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं और अप्रत्याशित घटनाओं की वजह से आपको अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है। संभावना है कि आप असामाजिक तत्वों के साथ संबंध बना सकते हैं और/या पुलिस से आपको परेशानी हो सकती है।

वर्तमान में आप कन्या दशा की कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती हैं। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा

है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७०)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कन्या दशा की मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप कन्या दशा की मीन भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

मेष दशा (२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७८)

वर्तमान में आप मेष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से चौथे भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो

सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मेष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि छठे भाव का स्वामी ग्रह इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी बहुत बढ़िया नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है, आपके संबंधी सहायक नहीं हो सकते हैं और आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मेष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्रह इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही शुभ प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बढ़िया हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। पेशे से आपकी आमदनी बढ़ेगी और कुछ दूसरे स्रोतों से भी आपको लाभ हो सकता है। आपको नए मौके मिल सकते हैं और इस दशा के दौरान कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत अधिक है।

वर्तमान में आप मेष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह मेष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक आवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप मेष दशा की कर्क भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६)

वर्तमान में आप मेष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक-टवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

वर्तमान में आप मेष दशा की कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। दोनों, दशा तथा भुक्ति, प्रतिकूल श्रेणी की राशि के हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान कुछ अप्रिय घटना घट सकती है। यह समय मकर या कर्क या मेष राशि के अंतर काल से मेल खा सकती है।

तुला दशा (२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०८५)

वर्तमान में आप तुला राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से दूसरे भाव में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए शुभ अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बहुत लाभप्रद होगा और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। इस दशा के दौरान आपमें कुछ लाभदायक बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की काफी संभावना है।

वर्तमान में आप तुला राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला है। यह दशा राशि में स्थित है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप कम दूरियों की कई यात्राएँ कर सकते हैं या आपका पेशा कुछ निरंतर यात्राओं से संबंधित हो सकता है। आप कई बार नौकरी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी कम दूरी पर स्थान्तरित हो सकता है। कुछ उपयोगी लेखन में भी आपकी काफी दिलचस्पी हो सकती है। आप कोई लेख लिख सकते हैं और आपका योगदान किसी समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशित हो सकता है। इस दशा की अवधि के दौरान आपकी माता का स्वास्थ्य और कुशलता आपको चिंतित कर सकता है।

वर्तमान में आप तुला राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं, जो आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव के स्वामी ग्रह के अधीन है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई उँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०७९)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता

है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२)

वर्तमान में आप तुला राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेने-देने से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष दशा (२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०६३)

वर्तमान में आप वृष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप वृष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं, जो आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव के स्वामी ग्रह के अधीन है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई उँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९)

वर्तमान में आप वृष राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०८९ से २६:१०:२०९०)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृश्चिक दशा (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२१०१)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। राशि से ग्यारहवें भाव में एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह स्थित है, जबकि इस राशि में कोई शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह राशि के लिए पाप-अर्गला योग बना रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए थोड़ा-बहुत समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि बारहवें भाव का स्वामी ग्रह इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी बहुत बढ़िया नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूकावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है, आपके संबंधी सहायक नहीं हो सकते हैं और आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। इस दशा के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। जैसा कि अमात्य कारक ग्रह (सप्त-कारक व्यवस्था के तहत) इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही शुभ प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए बढ़िया हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से होगा। पेशे से आपकी आमदनी बढ़ेगी और कुछ दूसरे स्रोतों से भी आपको लाभ हो सकता है। आपको नए मौके मिल सकते हैं और इस दशा के दौरान कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत अधिक है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से गिनती करने पर बारहवें भाव का स्वामी ग्रह शुक्र है। यह दशा राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है।

इस दशा की अवधि के दौरान आप अपने पेशे से संबंधित कुछ दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं। आप कई बार नौकरी भी बदल सकते हैं या आपका तबादला हो सकता है और आपका निवास भी स्थान्तरित हो सकता है। अगर आप कोई ऊँची शिक्षा ले रहे हैं तो आपको कुछ समय के लिए छात्रावास में रहना पड़ सकता है। आपको कुछ फिजूल खर्च या/और चिकित्सा/इलाज में खर्च करना पड़ सकता है। इसके अलावा कुछ ईर्ष्यालु लोग या छिपे रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं या कुछ हानि पहुँचा सकते हैं।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४)

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य प्रतिकूल हर ग्रह है। यह मेष राशि में स्थित है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५)

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृष राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

वर्तमान में आप कर्क राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि शनि इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक ावट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि के त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। जैसा कि दसवाँ भाव पेशा सूचित करता है और पाँचवाँ भाव पद, यह बहुत ही लाभदायक युति है।

इस दशा की अवधि के दौरान आपके पेशे के क्षेत्र में कोई बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होगी। आप कोई वरिष्ठ पद पाएँगे और आपकी आमदनी बढ़ेगी। आपका सामाजिक स्तर सुधरेगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और आम लोग आपका काफी सम्मान करेंगे।

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप अनजाने कारणों से उत्पन्न अप्रिय घटनाओं का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए। इस दशा के दौरान आप कुछ घबराया हुआ या भ्रमित महसूस कर सकते हैं। आपको अपरिचितों पर विश्वास नहीं करना चाहिए, उधार लेन-देन से बचना चाहिए, निवेश से दूर रहना चाहिए और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए गलत तरीके नहीं अपनाने चाहिए।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९)

वर्तमान में आप कन्या राशि के त्रिकूट भुक्ति से गुजर रहे हैं। जैसा कि केतु इस राशि में स्थित है और यह राशि पर बहुत ही बुरा प्रभाव डालने का प्रयास कर रहा है।

कुल मिलाकर, यह समय आपके लिए काफी समस्यापूर्ण हो सकता है और जो कुछ भी चल रहा है, वो ठीक से नहीं हो सकता है। आपकी आमदनी आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती है और आप पैसे की अनुपलब्धता या रूक तवट की वजह से पीड़ित हो सकते हैं। इस भुक्ति के दौरान आपमें कुछ प्रतिकूल बदलाव होने की संभावना है, और कोई भी बड़ी या महत्वपूर्ण उन्नति होने की संभावना बहुत कम है।

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल वक्री है और दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित है। संकेत प्रतिकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए। इस अवधि के दौरान आप कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ मुश्किल में फँस सकते हैं, अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कोपभाजन बन सकते हैं, किसी आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं और/या छोटी-मोटी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१)

वर्तमान में आप मकर राशि की त्रिकूट दशा से गुजर रहे हैं, जबकि वृश्चिक राशि की भुक्ति चल रही है। यह संयुक्त समय - एक साल का - काफी समस्यापूर्ण होगा।

यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रतिकारी ग्रह-युति उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। आपके कार्य स्थल पर परिस्थितियाँ काफी बिगड़ सकती हैं। आपकी आमदनी कम हो सकती है और आपको अपनी जरूरतें पूरी करने में कठिनाईयाँ हो सकती हैं। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं और अप्रत्याशित घटनाओं की वजह से आपको अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है। संभावना है कि आप असमाजिक तत्वों के साथ संबंध बना सकते हैं और/या पुलिस से आपको परेशानी हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रतिकूल आठवें भाव का स्वामी ग्रह है। यह वृश्चिक राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जिसके दशा-काल से आप वर्तमान में गुजर रहे हैं। संकेत लाभदायक नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप कई गंभीर समस्याओं एवं मुसीबतों का सामना कर सकते हैं।

आत्म-कारक दशा से भविष्यफल

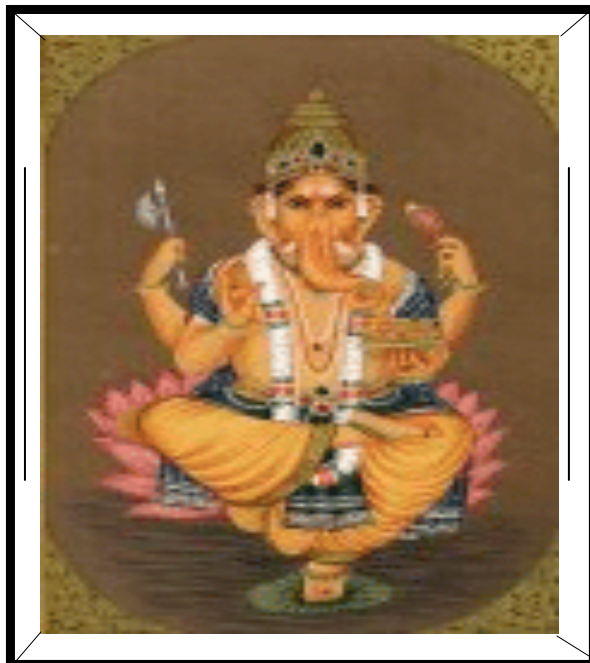
कर्क (सू०) दशा (२६:१०:२००५ --- २६:१०:२०१३)

आपके दशा-राशि से सूर्य केन्द्र में स्थित है और शुक्र त्रिकोण में स्थित है। यह एक भाग्यशाली युति है और आने वाला समय काफी आनंदायक होगा। आप अपने वरिष्ठ अधिकारियों एवं नियोक्ता से सहयोग एवं लाभ प्राप्त करेंगे और आपको अपने पेशे के क्षेत्र में उन्नति के नए सुअवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

जैसा कि एक या एक से अधिक शुभ ग्रह आपके दशा-राशि से पॉचवें भाव में स्थित हैं और कोई भी अशुभ ग्रह उस राशि में स्थित नहीं है, यह एक लाभदायक युति (शुभ अर्गला) बना रहा है, जिसकी वजह से आने वाला समय काफी आनंदायक एवं उन्नति वाला होगा। इस दशा-काल के दौरान आपको एक से अधिक स्रोतों से लाभ प्राप्त होगा और आपकी आमदनी भी बढ़ेगी। इसके अलावा, यह एकसमान चलता रहेगा।

जैसा कि एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है और कोई भी शुभ ग्रह उस राशि में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल युति (पाप अर्गला) बना रहा है, जिसकी वजह से आने वाला समय काफी समस्यापूर्ण हो सकता है। इस दशा के दौरान आपके उत्तम प्रयासों के बावजूद कोई विशेष उन्नति नहीं हो सकती है और आप अपने कार्यस्थल पर कठिन समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आप दूरस्थ स्थानों की कुछ यात्राएँ कर सकते हैं, लेकिन वो फलदायक नहीं हो सकती है।

Vighnaharta Lord Ganesha will remove all obstacles, and bless us all.



Jaimini Light 2.0

Astrological Principles & guidance : D.K.Sen.










Jataka Name : Aryan(Male)
Date of Birth : 26:10:2005(Wednesday)
Time of Birth : 09:30:00PM (39 Gh.19 Vgh.)
Place of Birth : Bhagalpur(India) 025:15N 087:00E

Software Owner Info










Name :	Mindsutra
Company :	Mindsutra
Address :	_____ _____ _____
Phone :	_____
E-Mail/website :	_____

जैमिनी केन्द्रादी दशा

(नीलकांत का सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ----- तक
१	 मीन(राहु) दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०
२	 कन्या(केतु) दशा	१० व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१० — २६:१०:२०२०
३	 मेष(मंगल) दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२० — २६:१०:२०३२
४	 कर्क(चन्द्रमा) दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३२ — २६:१०:२०४४
५	 कर्क(शनि) दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४४ — २६:१०:२०५६
६	 तुला(सूर्य) दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५६ — २६:१०:२०५७
७	 तुला(बृहस्पति) दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५७ — २६:१०:२०५८
८	 वृश्चिक(शुक्र) दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५८ — २६:१०:२०६०
९	 वृश्चिक(बुध) दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०६० — २६:१०:२०६२

जैमिनी केन्द्रादी दशा की भुक्ति

 मीन दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०		 कन्या दशा २६:१०:२०१० — २६:१०:२०२०		 मेष दशा २६:१०:२०२० — २६:१०:२०३२		 कर्क दशा २६:१०:२०३२ — २६:१०:२०४४	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मेघ	२६:१०:२००५ से २६:०३:२००६	तुला	२६:१०:२०१० से २५:०८:२०११	वृष	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१	मिथुन	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३
वृष	२६:०३:२००६ से	वृश्चिक	२५:०८:२०११ से २६:०६:२०१२	कर्क	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३	वृष	२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४
मिथुन	२५:०८:२००६ से	धनु	२६:०६:२०१२ से २५:०४:२०१३	मिथुन	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४	मेघ	२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५
कर्क	२६:०१:२००७ से	मकर	२५:०४:२०१३ से २५:०२:२०१४	सिंह	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५	मीन	२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६
सिंह	२५:०६:२००७ से	कुम्भ	२५:०२:२०१४ से २६:१२:२०१४	कन्या	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६	कुम्भ	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७
कन्या	२६:११:२००७ से २६:०४:२००८	मीन	२६:१२:२०१४ से २६:१०:२०१५	तुला	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७	मकर	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८
तुला	२६:०४:२००८ से २६:०६:२००८	मेघ	२६:१०:२०१५ से २६:०८:२०१६	वृश्चिक	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८	धनु	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९
वृश्चिक	२६:०६:२००८ से २५:०२:२००९	वृष	२६:०८:२०१६ से	धनु	२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९	वृश्चिक	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०
धनु	२५:०२:२००९ से २५:०७:२००९	मिथुन	२५:०६:२०१५ से २५:०४:२०१६	मकर	२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०	तुला	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१
मकर	२५:०७:२००९ से २६:१२:२००९	कर्क	२५:०४:२०१६ से २५:०२:२०१६	कुम्भ	२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१	कन्या	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२
कुम्भ	२६:१२:२००९ से २५:०५:२०१०	सिंह	२५:०२:२०१६ से २६:१२:२०१६	मीन	२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२	सिंह	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३
मीन	२५:०५:२०१० से २६:१०:२०१०	कन्या	२६:१२:२०१६ से २६:१०:२०२०	मेघ	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३	कर्क	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४
 कर्क दशा २६:१०:२०४४ — २६:१०:२०५६		 तुला दशा २६:१०:२०५६ — २६:१०:२०५७		 तुला दशा २६:१०:२०५७ — २६:१०:२०५८		 वृश्चिक दशा २६:१०:२०५८ — २६:१०:२०६०	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मिथुन	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५	वृश्चिक	२६:१०:२०५६ से २६:१२:२०५६	वृश्चिक	२६:१०:२०५७ से २६:१२:२०५७	तुला	२६:१०:२०५८ से २६:१२:२०५८
वृष	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६	धनु	२६:१२:२०५६ से २६:१२:२०५६	धनु	२६:१२:२०५७ से २६:१२:२०५७	कन्या	२६:१२:२०५८ से २५:०२:२०५९
मेघ	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७	मकर	२६:१२:२०५६ से २६:०९:२०५७	मकर	२६:०९:२०५७ से २६:०९:२०५८	सिंह	२५:०२:२०५९ से २५:०४:२०५९
मीन	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८	कुम्भ	२६:०९:२०५७ से २५:०२:२०५७	कुम्भ	२६:०९:२०५८ से २५:०२:२०५८	कर्क	२५:०४:२०५९ से
कुम्भ	२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९	मीन	२५:०२:२०५७ से २६:०३:२०५७	मीन	२५:०२:२०५८ से २६:०३:२०५८	मिथुन	२५:०६:२०५९ से
मकर	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०	मेघ	२६:०३:२०५७ से	मेघ	२६:०३:२०५८ से २५:०४:२०५८	वृष	२५:०८:२०५९ से
धनु	२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१	वृष	२५:०४:२०५७ से	वृष	२५:०४:२०५८ से २५:०५:२०५८	मेघ	२६:१०:२०५९ से २६:१२:२०६०
वृश्चिक	२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२	मिथुन	२५:०५:२०५७ से	मिथुन	२५:०५:२०५८ से	मीन	२६:१२:२०६० से २५:०२:२०६०
तुला	२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३	कर्क	२५:०६:२०५७ से	कर्क	२५:०६:२०५८ से	कुम्भ	२५:०२:२०६० से
कन्या	२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४	सिंह	२५:०७:२०५७ से	सिंह	२५:०७:२०५८ से	मकर	२६:०४:२०६० से
सिंह	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५	कन्या	२५:०८:२०५७ से	कन्या	२५:०८:२०५८ से २६:०६:२०५८	धनु	२६:०६:२०६० से
कर्क	२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६	तुला	२६:०६:२०५७ से	तुला	२६:०६:२०५८ से २६:१०:२०५८	वृश्चिक	२६:०८:२०६० से
 वृश्चिक दशा २६:१०:२०६० — २६:१०:२०६२							
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
तुला	२६:१०:२०६० से २६:१२:२०६०						
कन्या	२६:१२:२०६० से २५:०२:२०६१						
सिंह	२५:०२:२०६१ से २५:०४:२०६१						
कर्क	२५:०४:२०६१ से						
मिथुन	२५:०६:२०६१ से						
वृष	२५:०८:२०६१ से २६:१०:२०६१						
मेघ	२६:१०:२०६१ से २६:१२:२०६१						
मीन	२६:१२:२०६१ से २५:०२:२०६२						
कुम्भ	२५:०२:२०६२ से						
मकर	२५:०४:२०६२ से						
धनु	२५:०६:२०६२ से						
वृश्चिक	२५:०८:२०६२ से						

जैमिनी केन्द्रादी दशा

(राघवभट्ट और नरसिंह सूरी का सिद्धान्त)

क्र० सं०	दशा का नाम	अवधि	से ---- तक
१	मीन(राहु) दशा	५ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०
२	कन्या(केतु) दशा	२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१० — २६:१०:२०१२
३	मेष(मंगल) दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२४
४	कर्क(चन्द्रमा) दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०२४ — २६:१०:२०३६
५	कर्क(शनि) दशा	१२ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०३६ — २६:१०:२०४८
६	तुला(सूर्य) दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४८ — २६:१०:२०४९
७	तुला(बृहस्पति) दशा	१ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०४९ — २६:१०:२०५०
८	वृश्चिक(शुक्र) दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५० — २६:१०:२०५७
९	वृश्चिक(बुध) दशा	७ व० ० मा० ० दि०	२६:१०:२०५७ — २६:१०:२०६४

जैमिनी केन्द्रादी दशा की भुक्ति

मीन दशा २६:१०:२००५ — २६:१०:२०१०		कन्या दशा २६:१०:२०१० — २६:१०:२०१२		मेष दशा २६:१०:२०१२ — २६:१०:२०२४		कर्क दशा २६:१०:२०२४ — २६:१०:२०३६	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
तुला	२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६	वृश्चिक	२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११	मेष	२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३	कर्क	२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५
वृश्चिक	२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७	तुला	२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२	वृष	२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४	मिथुन	२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६
धनु	२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८			मिथुन	२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५	वृष	२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७
मकर	२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९			कर्क	२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६	मेष	२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८
कुम्भ	२६:१०:२००९ से २६:१०:२०१०			सिंह	२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७	मीन	२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९
				कन्या	२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८	कुम्भ	२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०
				तुला	२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९	मकर	२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१
				वृश्चिक	२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०	धनु	२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२
				धनु	२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१	वृश्चिक	२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३
				मकर	२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२	तुला	२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४
				कुम्भ	२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३	कन्या	२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५
				मीन	२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४	सिंह	२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६

कर्क दशा २६:१०:२०३६ — २६:१०:२०४८		तुला दशा २६:१०:२०४८ — २६:१०:२०४९		तुला दशा २६:१०:२०४९ — २६:१०:२०५०		वृश्चिक दशा २६:१०:२०५० — २६:१०:२०५७	
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
कर्क	२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७	वृश्चिक	२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९	वृश्चिक	२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०	मेष	२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१
मिथुन	२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८					वृष	२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२
वृष	२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९					मिथुन	२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३
मेष	२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०					कर्क	२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४
मीन	२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१					सिंह	२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५
कुम्भ	२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२					कन्या	२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६
मकर	२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३					तुला	२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७
धनु	२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४						
वृश्चिक	२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५						
तुला	२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६						
कन्या	२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७						
सिंह	२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८						

वृश्चिक दशा २६:१०:२०५७ — २६:१०:२०६४							
भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक	भुक्ति	से — तक
मेष	२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८						
वृष	२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९						
मिथुन	२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०						
कर्क	२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१						
सिंह	२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२						
कन्या	२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३						
तुला	२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४						

अर्गला चक

मुख्य अर्गला

ग्रह	अर्गला (द्वितीय) के द्वारा	विरोधार्गला (द्वादश) के द्वारा	अर्गला (चतुर्थ) के द्वारा	विरोधार्गला (दशम) के द्वारा	अर्गला (एकादश) के द्वारा	विरोधार्गला (तृतीय) के द्वारा
सूर्य	वु०, शु०	के०	----	च०, श०	----	----
चन्द्रमा	----	----	सू०, वृ०	मं०	----	के०
मंगल	----	रा०	च०, श०	----	----	----
बुध	----	सू०, वृ०	----	----	के०	----
वृहस्पति	वु०, शु०	के०	----	च०, श०	----	----
शुक्र	----	सू०, वृ०	----	----	के०	----
शनि	----	----	सू०, वृ०	मं०	----	के०
राहु	----	मं०	----	----	----	----
केतु	----	सू०, वृ०	----	----	वु०, शु०	च०, श०

गौण अर्गला

ग्रह	अर्गला पंचम के द्वारा	विरोधार्गला (नवम) के द्वारा
सूर्य	----	----
चन्द्रमा	वु०, शु०	रा०
मंगल	----	----
बुध	रा०	च०, श०
वृहस्पति	----	----
शुक्र	रा०	च०, श०
शनि	वु०, शु०	रा०
राहु	वु०, शु०	च०, श०
केतु	----	----

केतु और राहु ग्रह के लिए अर्गला और विरोध अर्गला मुख्य और गौण दोनों, की गणना उल्टी तरफ से किया जाता है। यह सामान्य नियमों के विपरीत है—यह सिद्धान्त हमारे प्राचीन ज्योतिषियों के द्वारा दिया गया है।

विशेष अर्गला

ग्रह	विरोधार्गला (तृतीय) के द्वारा
सूर्य	----
चन्द्रमा	----
मंगल	----
बुध	----
वृहस्पति	----
शुक्र	----
शनि	----
राहु	----
केतु	----

ग्रहीय योगदान (अ)

क्र० सं०	लागु सिद्धान्त		एकल श्रेणी	प्राप्त श्रेणी	बढ़ोत्तरी	घटाव	योग
१	वृद्धि करिका	I	औसत				
		II	औसत से कम	औसत	२२.२४	०६.८८	४५.६८
		III	औसत				
२	ऋषि गर्ग	I	औसत				
		II	औसत से ज्यादा	औसत से ज्यादा	२२.२४	०६.८८	७६.०२
		III	औसत से ज्यादा				
३	ऋषि जैमिनी	I	...	औसत से ज्यादा	२२.२४	०६.८८	७६.०२
४	ऋषि जैमिनी	II	...	औसत से ज्यादा	२२.२४	०६.८८	७६.०२

इस कुण्डली में, ग्रहीय योगदान को ज्ञात करने के लिए, अन्य बहुत सारे दुसरे सिद्धान्त लागु किये जा सकते हैं जो कि कोई भी योग्य ज्योतिषी ज्ञात कर सकता है।

ग्रहीय योगदान (ब)

क्र० सं०	लागु सिद्धान्त		एकल श्रेणी	बढ़ोत्तरी	घटाव	योग
१	कृशांश-वि० के०	I	५६.५५
		II	२०.१८
		III	४८.७२
२	कृशांशएस० जी०	I	५६.५५
		II	८२.७३
		III	७५.७८
३	चर्तुवर्गजी० एल०	I	...	१६.५१	०७.३४	...
४	चर्तुवर्गएस० जी० एल०	II	...	१६.५१	०७.३४	...

इस कुण्डली में, ग्रहीय योगदान को ज्ञात करने के लिए, अन्य बहुत सारे दुसरे सिद्धान्त लागु किये जा सकते हैं जो कि कोई भी योग्य ज्योतिषी ज्ञात कर सकता है।

वि० प्रा० - चूँकि इस भाग में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भविष्यफल देते समय, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के काल के भविष्यफल को नहीं दिया गया है।

जैमिनी स्थिर दशा से भविष्यफल

धनु दशा (२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१४)

वर्तमान में आप धनु राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्नपति और अष्टमपति एक दूसरे के काफी नजदीक स्थित हैं और ये दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित हैं। यह एक प्रतिकूल युति है।

यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप किसी गंभीर बीमारी से लंबे समय तक पीड़ित हो सकते हैं, जिसका उपचार काफी मुश्किल हो सकता है।

तुला भुक्ति (२६:१०:२००५ से २६:१०:२००६)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२००७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो

आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु भुक्ति (२६:१०:२००७ से २६:१०:२००८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२००८ से २६:१०:२००९)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप धनु राशि की दशा और मकर राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से छठे भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रि आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२०१०)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप धनु राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०१० से २६:१०:२०११)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप धनु राशि की दशा और मेष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से छठे भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। सं

भावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर दशा (२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०२१)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी न तो दशा-राशि में स्थित है और न ही इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, दशा-राशि का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही कोई तुंगस्थ ग्रह दशा-राशि में स्थित है। यह युति लाभदायक नहीं है।

यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आपको अपने स्वास्थ्य का समुचित ख्याल रखना चाहिए और काफी सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस अवधि के दौरान आप कुछ परेशानियाँ महसूस कर सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[कर्क भुक्ति \(२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मिथुन भुक्ति \(२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की

दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०१९ से २६:१०:२०२०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी ।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ दशा (२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२६)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी स्थित है। चूँकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा और इसमें वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें

भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा और मीन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से आठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से आठवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत प्रतिकूल युति है, और आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

आप कुछ असामाजिक तत्वों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं, शारीरिक चोट लग सकती है और पुलिस का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हैं। या फिर, आप किसी दुर्घटना या किसी अप्रिय घटना के शिकार हो सकते हैं या किसी मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या किसी दुखद घटना से पीड़ित हो सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कुम्भ भुक्ति \(२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मकर भुक्ति \(२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि

नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा और धनु राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन दशा (२६:१०:२०२९ से २६:१०:२०३०)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का

भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से दसवाँ भाव है। चूँकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

पेशे के क्षेत्र में आपकी स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[तुला भुक्ति \(२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०३० \)](#)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और तुला राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और इसमें तुला राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से पाँचवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से पाँचवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा। इसके अलावा, जैसा कि आप पुरुष हैं, यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से आठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके

अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से आठवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत प्रतिकूल युति है, और आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

आप कुछ असामाजिक तत्वों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं, शारीरिक चोट लग सकती है और पुलिस का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हैं। या फिर, आप किसी दुर्घटना या किसी अप्रिय घटना के शिकार हो सकते हैं या किसी मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या किसी दुखद घटना से पीड़ित हो सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी

लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और इसमें मकर राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से पाँचवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से पाँचवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा। इसके अलावा, जैसा कि आप पुरुष हैं, यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कुम्भ भुक्ति \(२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४\)](#)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से आठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से आठवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत प्रतिकूल युति है, और आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

आप कुछ असामाजिक तत्वों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं, शारीरिक चोट लग सकती है और पुलिस का ध्यान अपनी तरफ

आकर्षित कर सकते हैं। या फिर, आप किसी दुर्घटना या किसी अप्रिय घटना के शिकार हो सकते हैं या किसी मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या किसी दुखद घटना से पीड़ित हो सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारु-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप

साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और मिथुन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मेष दशा (२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०४५)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते

हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मेष राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी स्थित है। चूँकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मेष राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिस पर अमात्य-कारक ग्रह (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। चूँकि अमात्य-कारक ग्रह रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए

भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०३९ से २६:१०:२०४०)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। लगन से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। भुक्ति-राशि से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी दशा-राशि या भुक्ति-राशि राशि में स्थित है या इनमें से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस भुक्ति-काल के दौरान आपका विवाह हो सकता है। इस भुक्ति-काल का पहला अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) मांगलिक आयोजन करा सकता है।

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मिथुन भुक्ति \(२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१\)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कर्क भुक्ति \(२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२\)](#)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और कर्क राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और सिंह राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। लग्न से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। भुक्ति-राशि से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी दशा-राशि या भुक्ति-राशि में स्थित है या इनमें से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस भुक्ति-काल के दौरान आपका विवाह हो सकता है। इस भुक्ति-काल का पहला अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) मांगलिक आयोजन करा सकता है।

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और सिंह राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और इसमें सिंह राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और इसमें सिंह राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से पाँचवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से पाँचवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा। इसके अलावा, जैसा कि आप पुरुष हैं, यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कन्या भुक्ति \(२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छटे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छटे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छटे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष दशा (२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०५३)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृष राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी स्थित है। चूँकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार

पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृष राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से नौवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं। या फिर, आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृष राशि की दशा और इसमें तुला राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छूटे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छूटे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छूटे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छूटे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृष राशि की दशा और कन्या राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छूटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०४९ से २६:१०:२०५०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मिथुन दशा (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०६२)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल

ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा और कन्या राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रि आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। सं

भावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस

पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा और मीन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

कर्क दशा (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६६)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं । आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है । आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है । कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा । आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है ।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए । कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है । संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं ।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं । आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है । आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित

त है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कुम्भ भुक्ति \(२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मकर भुक्ति \(२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह दशा (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७७)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि

संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से तीसरे भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। हालाँकि, यह अवधि आमतौर पर काफी लाभदायक नहीं मानी जाती है, लेकिन, चूँकि दशा-राशि का स्वामी दशा-राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, यह समय आपके लिए समस्यापूर्ण नहीं होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक से होगा। आपके सहोदर/चचेरे भाई, पड़ोसी/मित्र और सहकर्मी काफी मददगार होंगे और उनका खैया आपके प्रति ठीक होगा। जरूरत पड़ने पर वे हर तरह से तत्परतापूर्वक आपकी सहायता करेंगे।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से तीसरे भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। हालाँकि, यह अवधि आमतौर पर काफी लाभदायक नहीं मानी जाती है, लेकिन, चूँकि आपकी कुण्डली में एक तुंगस्थ ग्रह दशा-राशि में स्थित है, यह समय आपके लिए समस्यापूर्ण नहीं होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक से होगा। आपके सहोदर/चचेरे भाई, पड़ोसी/मित्र और सहकर्मी काफी मददगार होंगे और उनका खैया आपके प्रति ठीक होगा। जरूरत पड़ने पर वे हर तरह से तत्परतापूर्वक आपकी सहायता करेंगे।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७०)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और इसमें तुला राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और धनु राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छटे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छटे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से छठे भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और इसमें मेष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

कन्या दशा (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०८६)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में

फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पॉचवें भाव की राशि, पॉचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७८ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०७९)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छटे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छटे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छटे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०८०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो

सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा और मिथुन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के

अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[वृष भुक्ति \(२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

तुला दशा (२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०९३)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क

राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, दशा-राशि का स्वामी और दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, दशा-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित है और छठे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ

प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आपको रोगों से काफी परेशानी हो सकती है। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और

भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०६०)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप तुला राशि की दशा और इसमें सिंह राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संक

ते नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

स्थिर दशा के अनुसार, वर्तमान में आप तुला राशि की दशा और इसमें वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

वृश्चिक दशा (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२१०१)

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित हैं। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

स्थिर दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया स्थिर दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से

अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी न तो नीचस्थ है और न ही वक्री है तथा यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कन्या राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों मिथुन या धनु या मीन की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी या तो आपके दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[मेष भुक्ति \(२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[वृष भुक्ति \(२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि

(जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२१००)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि

की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

वि० प्रा० - चूँकि इस भाग में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्यान दे रहे हैं, जबकि भविष्यफल देते समय, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के काल के भविष्यफल को नहीं दिया गया है।

जैमिनी ब्रह्म ग्रह दशा से भविष्यफल

मेष दशा (२६:१०:२००५ से २६:१०:२०१२)

सिंह भुक्ति (२६:१०:२००६ से २६:१०:२०१०)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मेष राशि की दशा और इसमें सिंह राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०११ से २६:१०:२०१२)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की

दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

वृष दशा (२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०२०)

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०१२ से २६:१०:२०१३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०१३ से २६:१०:२०१४)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृष राशि की दशा और इसमें तुला राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छटे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छटे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छटे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ 1 है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०१४ से २६:१०:२०१५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०१५ से २६:१०:२०१६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कर्क भुक्ति \(२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०१७ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मिथुन भुक्ति \(२६:१०:२०१७ से २६:१०:२०१८ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[वृष भुक्ति \(२६:१०:२०१८ से २६:१०:२०१९ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०१६ से २६:१०:२०२०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मिथुन दशा (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२६)

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर

(दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०२० से २६:१०:२०२१)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०२१ से २६:१०:२०२२)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कन्या भुक्ति \(२६:१०:२०२२ से २६:१०:२०२३ \)](#)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा और कन्या राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[सिंह भुक्ति \(२६:१०:२०२३ से २६:१०:२०२४ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कर्क भुक्ति \(२६:१०:२०२४ से २६:१०:२०२५ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मिथुन भुक्ति \(२६:१०:२०२५ से २६:१०:२०२६ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[वृष भुक्ति \(२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०२७ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मेष भुक्ति \(२६:१०:२०२७ से २६:१०:२०२८ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[मीन भुक्ति \(२६:१०:२०२८ से २६:१०:२०२९ \)](#)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा और मीन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रूक सकते हैं ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छोटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छोटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

कर्क दशा (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०३६)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कर्क राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी स्थित है । चूँकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा ।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा । आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी ।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कर्क राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिस पर अमात्य-कारक ग्रह (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है । चूँकि अमात्य-कारक ग्रह रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा ।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा । आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी ।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप × तद्गृहद्वन्द्वद्वन्द्व (१, छह) × राशि की अवधि से गुजर रहे हैं । आपके लग्न से पाँचवें भाव का स्वामी दशा-राशि से पाँचवें भाव में स्थित है । यह काफी लाभदायक युति है ।

यह समय आपके लिए काफी लाभदायक हो सकता है । अपने पेशे के क्षेत्र में आपकी उल्लेखनीय उन्नति हो सकती है ।

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा से गुजर रहे हैं । आपकी कुण्डली में शुक्र - जो कि विवाह का प्राकृतिक कारक है - इस राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । दशा-राशि से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी भी इसी राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे ।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सातवें भाव की राशि, सातवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक शुक्र और दारा-कारक ग्रह क्रमशः धनु, कन्या, वृश्चिक, और वृश्चिक हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय विवाह समारोह के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०२६ से २६:१०:२०३०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०३० से २६:१०:२०३१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०३१ से २६:१०:२०३२)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। लग्न से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। भुक्ति-राशि से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी दशा-राशि या भुक्ति-राशि में स्थित है या इनमें से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस भुक्ति-काल के दौरान आपका विवाह हो सकता है। इस भुक्ति-काल का पहला अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) मांगलिक आयोजन करा सकता है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस

पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०३२ से २६:१०:२०३३)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा और मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०३३ से २६:१०:२०३४)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०३४ से २६:१०:२०३५)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। लग्न से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। भुक्ति-राशि से गिनती करने पर सातवें भाव का स्वामी दशा-राशि या भुक्ति-राशि राशि में स्थित है या इनमें से किसी पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस भुक्ति-काल के दौरान आपका विवाह हो सकता है। इस भुक्ति-काल का पहला अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) मांगलिक आयोजन करा सकता है।

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०३५ से २६:१०:२०३६)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा और मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि

विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह दशा (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०४४)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से तीसरे भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। हालाँकि, यह अवधि आमतौर पर काफी लाभदायक नहीं मानी जाती है, लेकिन, चूँकि दशा-राशि का स्वामी दशा-राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, यह समय आपके लिए समस्यापूर्ण नहीं होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक से होगा। आपके सहोदर/चचेरे भाई, पड़ोसी/मित्र और सहकर्मी काफी मददगार होंगे और उनका खैया आपके प्रति ठीक होगा। जरूरत पड़ने पर वे हर तरह से तत्परतापूर्वक आपकी सहायता करेंगे।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से तीसरे भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। हालाँकि, यह अवधि आमतौर पर काफी लाभदायक नहीं मानी जाती है, लेकिन, चूँकि आपकी कुण्डली में एक तुंगस्थ ग्रह दशा-राशि में स्थित है, यह समय आपके लिए समस्यापूर्ण नहीं होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और जो कुछ भी हो रहा है, वो ठीक से होगा। आपके सहोदर/चचेरे भाई, पड़ोसी/मित्र और सहकर्मी काफी मददगार होंगे और उनका खैया आपके प्रति ठीक होगा। जरूरत पड़ने पर वे हर तरह से तत्परतापूर्वक आपकी सहायता करेंगे।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके लग्न से दसवें भाव का स्वामी

स्थित है। चूँकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०३७)

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और तुला राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और इसमें तुला राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और

भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०३७ से २६:१०:२०३८)

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०३८ से २६:१०:२०३९)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और धनु राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०३६ से २६:१०:२०४०)

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और मकर राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और इसमें मकर राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से सातवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से सातवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०४० से २६:१०:२०४१)

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में अपात्य-कारक ग्रह - जो कि संतान के जन्म का शासक है - भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे।

यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से छठे भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की

दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी ।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०४१ से २६:१०:२०४२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छोटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छोटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०४२ से २६:१०:२०४३)

वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और मेष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं । आपकी कुण्डली में दारा-कारक ग्रह - जो कि विवाह का शासक है - इस भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । यह काफी लाभदायक युति है और आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे ।

यदि आप अविवाहित हैं और विवाह करना चाहते हैं तो इस अवधि के दौरान आपका विवाह हो सकता है । या फिर, आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं ।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और इसमें मेष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं । आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । यह अति लाभदायक युति है ।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी । आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा ।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप सिंह राशि की दशा और इसमें मेष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं । आपके दशा-राशि से पाँचवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से पाँचवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है । इसके

अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा। इसके अलावा, जैसा कि आप पुरुष हैं, यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना करते हैं तो इस अवधि के दौरान आपको योग्य संतान की प्राप्ति हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०४३ से २६:१०:२०४४)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

कन्या दशा (२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०५३)

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०४४ से २६:१०:२०४५)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०४५ से २६:१०:२०४६)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छटे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छटे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छटे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०४७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०४७ से २६:१०:२०४८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०४८ से २६:१०:२०४९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०४६ से २६:१०:२०५०)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा और मिथुन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छठे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०५० से २६:१०:२०५१)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह लाभदायक संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी ।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०५१ से २६:१०:२०५२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०५२ से २६:१०:२०५३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

तुला दशा (२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०६०)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप तुला राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से पाँचवाँ भाव है। चूंकि पाँचवाँ भाव पद और अतीत में किये गए गुणोत्कृष्ट कार्यों का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप तुला राशि की अवधि से गुजर रहे हैं, जिसमें आपके लग्न से दसवाँ भाव का स्वामी स्थित है। चूंकि दसवाँ भाव रोजगार का सूचक है, यह समय आपके लिए काफी लाभदायक होगा।

आपके पेशे के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार होगा। आपका पद ऊँचा होगा और आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, दशा-राशि का स्वामी और दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, दशा-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित है और छठे भाव का स्वामी दशा-राशि में स्थित है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ

प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आपको रोगों से काफी परेशानी हो सकती है। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्योति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[वृश्चिक भुक्ति \(२६:१०:२०५३ से २६:१०:२०५४ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की

दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है । इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी ।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०५४ से २६:१०:२०५५)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं । इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है । यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है । यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं । आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है । दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०५५ से २६:१०:२०५६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०५६ से २६:१०:२०५७)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप तुला राशि की दशा और इसमें सिंह राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०५७ से २६:१०:२०५८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

[मिथुन भुक्ति \(२६:१०:२०५८ से २६:१०:२०५९\)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[वृष भुक्ति \(२६:१०:२०५९ से २६:१०:२०६०\)](#)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप तुला राशि की दशा और इसमें वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

वृश्चिक दशा (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६८)

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि

नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी न तो नीचस्थ है और न ही वक्री है तथा यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कन्या राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों मिथुन या धनु या मीन की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी या तो आपके दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[मेष भुक्ति \(२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१\)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा और वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से नौवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं। या फिर, आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा और मिथुन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा और मिथुन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से नौवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं। या फिर, आप तीर्थस्थलों की यात्रा कर सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

[कर्क भुक्ति \(२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४ \)](#)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

सिंह भुक्ति (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कन्या भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा और कन्या राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से नौवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से नौवें

भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

आप दूरस्थ स्थानों की यात्राएँ कर सकते हैं और वहाँ लंबे समय तक रुक सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छटे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छटे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छटे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। सं

भावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु दशा (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०७७)

वर्तमान में आप धनु राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में लग्नपति और अष्टमपति एक दूसरे के काफी नजदीक स्थित हैं और ये दशा-राशि से आठवें भाव में स्थित हैं। यह एक प्रतिकूल युति है।

यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो इस अवधि के दौरान आप किसी गंभीर बीमारी से लंबे समय तक पीड़ित हो सकते हैं, जिसका उपचार काफी मुश्किल हो सकता है।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी न तो नीचस्थ है और न ही वक्री है तथा यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप तुला राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों वृष या सिंह या कुम्भ की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

[तुला भुक्ति \(२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९ \)](#)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ

1 है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०७०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०७० से २६:१०:२०७१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०७१ से २६:१०:२०७२)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप धनु राशि की दशा और मकर राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से छठे भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०७२ से २६:१०:२०७३)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप धनु राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छटे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छटे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छटे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०७३ से २६:१०:२०७४)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०७४ से २६:१०:२०७५)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप धनु राशि की दशा और मेष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छठे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छठे भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से छठे भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके शत्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०७५ से २६:१०:२०७६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०७७)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि

नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर दशा (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०८४)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। दशा-राशि का स्वामी न तो दशा-राशि में स्थित है और न ही इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, दशा-राशि का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही कोई तुंगस्थ ग्रह दशा-राशि में स्थित है। यह युति लाभदायक नहीं है।

यदि आपकी कुण्डली में कोई शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आपको अपने स्वास्थ्य का समुचित ख्याल रखना चाहिए और काफी सचेत रहना चाहिए, क्योंकि इस अवधि के दौरान आप कुछ परेशानियाँ महसूस कर सकते हैं।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आक

स्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया ब्रह्म ग्रह दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी या तो आपके दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०७७ से २६:१०:२०७८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०७८ से २६:१०:२०७६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०७६ से २६:१०:२०८०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०८० से २६:१०:२०८१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०८१ से २६:१०:२०८२)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो

कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०८२ से २६:१०:२०८३)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०८३ से २६:१०:२०८४)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ दशा (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०६२)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया ब्रह्म ग्रह दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके दशा-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

कर्क भुक्ति (२६:१०:२०८४ से २६:१०:२०८५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२०८५ से २६:१०:२०८६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०८७)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा और इसमें वृष राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह अति लाभदायक युति है।

इस अवधि के दौरान आपकी काफी उन्नति होगी। आपकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपका नाम तथा यश चारों तरफ फैलेगा।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो

तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०८७ से २६:१०:२०८८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०८८ से २६:१०:२०८६)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा और मीन राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से आठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से आठवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत प्रतिकूल युति है, और आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

आप कुछ असामाजिक तत्वों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं, शारीरिक चोट लग सकती है और पुलिस का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हैं। या फिर, आप किसी दुर्घटना या किसी अप्रिय घटना के शिकार हो सकते हैं या किसी मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या किसी दुखद घटना से पीड़ित हो सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०८६ से २६:१०:२०६०)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो

आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०६० से २६:१०:२०६१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०६१ से २६:१०:२०६२)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा और धनु राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से छटे भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से छटे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अलावा, आपके भुक्ति-राशि से छटे भाव का स्वामी आपके दशा-राशि से छटे भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह लाभदायक युति नहीं है।

आपको काफी सतर्क एवं सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आप रोगों से परेशान हो सकते हैं। इसके अलावा, आपके रात्रु आपके लिए परेशानियाँ पैदा कर सकते हैं। अपने संबंधियों के साथ आपका संबंध काफी स्नेहपूर्ण होगा। व्यापार/रोजगार में उन्नति होगी।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छटे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मीन दशा (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२१०१)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी और तीसरे भाव का स्वामी एक साथ कर्क राशि में स्थित है। कर्क राशि का भुक्ति-काल (जो एक साल चलेगा) आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक कठिन होगा। आपकी कुण्डली में ब्रह्म ग्रह मंगल ग्रह मेष राशि में स्थित है।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए। कर्क राशि के बताए गए भुक्ति-काल (जो कि एक साल चलेगा) और अंतर-काल (जो एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, आप लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा से गुजर रहे हैं। आमतौर पर यह समय समस्यापूर्ण होता है। आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी ग्रह कर्क राशि में स्थित है, जबकि तीसरे भाव का स्वामी ग्रह तुला राशि में स्थित है। दोनों राशियों - कर्क और तुला - का संयुक्त समय कर्क दशा में तुला भुक्ति और/या तुला दशा में कर्क भुक्ति (यदि संचालित होता है, तो प्रत्येक एक साल के लिए चलेगा) तुलनात्मक रूप से आपके लिए अधिक कठिन होगा।

आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए और बताए गए एक या दो भुक्ति-काल के दौरान समस्याओं को मिटाने के लिए हर संभव ऐहतियात बरतनी चाहिए (कृपया ब्रह्म ग्रह दशा-भुक्ति की सूची देखें)। बताए गए भुक्ति काल के दौरान, यदि ये संचालित होते हैं तो, मेष राशि के अंतर-काल (जो हर बार एक महीना चलेगा) के दौरान यह आपके लिए तुलनात्मक रूप से अधिक समस्यापूर्ण हो सकता है (कृपया स्थिर भुक्ति-अंतर की सूची देखें)। संभावना है कि आप किसी के साथ विवाद में फँस सकते हैं, आकस्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं या अचानक तथा अप्रत्याशित रूप से उत्पन्न अप्रिय घटना से बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं। आपकी कुण्डली में पाँचवें भाव की राशि, पाँचवें भाव के स्वामी की राशि, प्राकृतिक कारक वृहस्पति की राशि

और अपात्य-कारक (सप्त कारक व्यवस्था के तहत) की राशि क्रमशः तुला, वृश्चिक, तुला, और तुला हैं ।

इस अनुकूल दशा के दौरान और इसमें अनुकूल भुक्ति के दौरान, इनमें से किसी एक का अंतर-काल का समय आपके स्मरणीय संतान के जन्म के समय से मेल खा सकता है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में दशा-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है । यह अनुकूल संकेत नहीं है । संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी न तो नीचस्थ है और न ही वक्री है तथा यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप मकर राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों सिंह या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है । संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

आपकी जन्मकुण्डली लग्न से छठे भाव की राशि, छठे भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित है, छठा पद-राशि, और ज्ञाति-कारक (सप्त-कारक व्यवस्था के अनुसार) की राशि क्रमशः वृश्चिक, मेष, कन्या, और तुला है । यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है । अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें ।

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी और चंद्रमा की राशियाँ क्रमशः मेष और कर्क हैं। यदि आप कभी बीमार पड़ते हैं तो उसका समय इनमें से किसी अंतर-काल के समय से मेल खा सकता है। अनुकूल समयावधि जानने के लिए भुक्ति-अंतर (दूसरी पद्धति से या आर बी एन एस पद्धति से) की सूची देखें।

तुला भुक्ति (२६:१०:२०६२ से २६:१०:२०६३)

आपकी जन्मकुण्डली में, भुक्ति-राशि का स्वामी और भुक्ति-राशि से छठे भाव का स्वामी भिन्न ग्रह हैं। इसमें, भुक्ति-राशि का स्वामी छठे भाव में स्थित नहीं है, लेकिन छठे भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है, जबकि छठे भाव का स्वामी न तो तुंगस्थ है और न ही अपनी राशि में स्थित है। यह बहुत लाभदायक संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कोई शक्तिशाली शुभ प्रभावशाली ग्रह उपस्थित नहीं है तो आप रोगों से काफी परेशान हो सकते हैं। आपकी परेशानियों में तुला और/या मीन राशि की स्थिर (या ब्रह्म ग्रह) दशा/भुक्ति/अंतर काल के दौरान वृद्धि हो सकती है। दोनों के अलावा, इससे पहले का अवधि और भी समस्यापूर्ण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृश्चिक भुक्ति (२६:१०:२०६३ से २६:१०:२०६४)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और वृश्चिक राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से आठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से आठवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत प्रतिकूल युति है, और आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

आप कुछ असामाजिक तत्वों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं, शारीरिक चोट लग सकती है और पुलिस का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हैं। या फिर, आप किसी दुर्घटना या किसी अप्रिय घटना के शिकार हो सकते हैं या किसी मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या किसी दुखद घटना से पीड़ित हो सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

धनु भुक्ति (२६:१०:२०६४ से २६:१०:२०६५)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मकर भुक्ति (२६:१०:२०६५ से २६:१०:२०६६)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

कुम्भ भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२०६७)

ब्रह्म ग्रह दशा के अनुसार, वर्तमान में आप मीन राशि की दशा और कुम्भ राशि की भुक्ति (जो एक साल चलेगा) से गुजर रहे हैं। आपके दशा-राशि से आठवें भाव का स्वामी आपके भुक्ति-राशि से आठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। इसके अलावा, ये संयुक्त रूप से आपके लग्न से आठवें भाव में स्थित हैं या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। यह बहुत प्रतिकूल युति है, और आपको काफी सचेत एवं सावधान रहना चाहिए।

आप कुछ असामाजिक तत्वों के साथ मुसीबत में फँस सकते हैं, शारीरिक चोट लग सकती है और पुलिस का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर सकते हैं। या फिर, आप किसी दुर्घटना या किसी अप्रिय घटना के शिकार हो सकते हैं या किसी मुकदमेबाजी में फँस सकते हैं या किसी दुखद घटना से पीड़ित हो सकते हैं।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मीन भुक्ति (२६:१०:२०६७ से २६:१०:२०६८)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

मेष भुक्ति (२६:१०:२०६८ से २६:१०:२०६९)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

वृष भुक्ति (२६:१०:२०६६ से २६:१०:२१००)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से आठवें भाव का स्वामी भुक्ति-राशि में स्थित है या इस

पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें भाव का स्वामी नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह लाभदायक संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है, जो कि आपके परिवार के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो आपके भुक्ति-राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसलिए आपके स्वस्थ होने की संभावना बहुत तीव्र होगी।

मिथुन भुक्ति (२६:१०:२१०० से २६:१०:२१०१)

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक शुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति धीरे-धीरे और बुरी हो सकती है।




उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में भुक्ति-राशि से छठे भाव में कम से कम एक अशुभ ग्रह स्थित है, जो कि नीचस्थ या अस्त या ग्रसित है। यह अनुकूल संकेत नहीं है। संयोग से यदि आप इस अवधि के दौरान बीमार पड़ जाते हैं तो आपके स्वास्थ्य की स्थिति तेजी से और बुरी हो सकती है।

उपरोक्त उल्लेखों के अलावा, आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ नहीं है और यह न तो अस्त है और न ही ग्रसित है। संभावना है कि आप कर्क राशि या इसकी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ने वाली राशियों कुम्भ या वृष या वृश्चिक की















दशा/भुक्ति/अंतर के दौरान स्वस्थ होंगे ।

पद-कुण्डली (प्रचलित सिद्धान्त)

























भाव-पद

क0	पद का नाम		पद-राशि
१	लग्न पद		मेष
२	धन पद		कर्क
३	सहज पद		धनु
४	मात्रि पद		मकर
५	मंत्र पद		धनु
६	अरि पद		कन्या
७	दारा पद		सिंह
८	रन्ध्र पद		मकर
९	पितृ-पद		धनु
१०	कर्म पद		वृष
११	लाभ पद		मेष
१२	व्यय पद		वृष

ग्रह-पद

क0	ग्रह का नाम		पद-राशि
१	 सूर्य		धनु
२	 चन्द्रमा		कर्क
३	 मंगल		मेष
४	 बुध		मेष
५	 बृहस्पति		सिंह
६	 शुक्रे		धनु
७	 शनि		धनु

राशि-पद

क0	राशि का नाम		पद-राशि
१	 मेष		मेष
२	 वृष		धनु
३	 मिथुन		मिथुन
४	 कर्क		कर्क
५	 सिंह		सिंह
६	 कन्या		धनु
७	 तुला		तुला
८	 वृश्चिक		मिथुन
९	 धनु		धनु
१०	 मकर		धनु
११	 कृम्भ		कृम्भ
१२	 मीन		कन्या